।। ओ३म् ।।

वर्ष-७ अंक-९ मूल्य-२५/-

हिन्दी मासिक

वैदिक संसार

अगस्त २०१८

चलो दिल्ली

दिल्ली चलो

यज्ञ-योग और स्वाध्याय जीवन में अपनाएं
आर्यसमाज के साथ कदम से कदम बढ़ाएं...

वैदिक विचारधारा को विश्वभर में गुंजायमान करने के संकल्प को साथ लेकर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में ...

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२५ से २८ अक्टूबर २०१८

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

विश्वभर के आर्यों का महाकुम्भ

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२५ से २८ अक्टूबर, २०१८-भारत (दिल्ली)

तदनुसार कार्तिक कृष्ण प्रथमा से चतुर्थी तक
विक्रम संवत् २०७५

आयोजन स्थल

स्वर्ण जयन्ति पार्क, रोहिणी, सेक्टर-१०, दिल्ली-८५
यज्ञ, योग, वैदिक सत्संग और प्रवचनों
से लाभ उठाने हेतु

परिवार सहित सम्मिलित होकर
कार्यक्रम को सफल बनाएं ...

अनुरोधकर्ता

सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान)
सा. आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

स्वागताध्यक्ष

महाशय धर्मपाल जी,
एम डी एच मसाले वाले

वैदिक संसार के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

श्री नेमीचन्द जी शर्मा
भामाशाह-राज सरकार
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री रामफलसिंह जी आर्य
प्रा. वरिष्ठ उपप्रधान
सुन्दर नगर (हिमाचल प्रदेश)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री-आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राजस्थान)

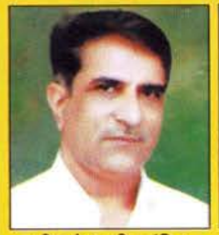
श्री नरेश जी जांगिड
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री सुनील जी शर्मा
जा.ब्रा. प्रदेशाध्यक्ष
पौण्डा (गोवा)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धूलिया (महाराष्ट्र)

श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा
योग प्रशिक्षिका
अहमदाबाद (गुजरात)

सुश्री अंजलि आर्या
वैदिक भजनोपदेशिका
घरौंडा, (हरियाणा)

श्री सांवरमल जी शर्मा
वास्को डी गामा, गोवा

श्री आदित्यप्रकाश जी गुप्त
खेड़ा अफगान (उ.प्र.)

आ. सर्वेश सिद्धान्ताचार्य
गुरुकुल केहलारी (म.प्र.)

श्री रमेशचन्द्र जी दीक्षित
गाधी, बागपत (उ.प्र.)

वैदिक संसार
के सम्माननीय
प्रतिनिधि आपका
जीवन परिचय
तथा बनाए गए
सदस्यों का विवरण
पढ़ें आगामी अंक में

श्री अशोक जी आर्य
सहारनपुर (उ.प्र.)

१०२ वर्षिय पं. गंगाराम जी जांगिड के ब्रह्मत्व में वानप्रस्थ साधक आश्रम, रोजड़ में सम्पन्न चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की चित्रावली

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आरएनआई-एमपीएचआईएन २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन-एमपी/आईसीडी/१४०५/२०१५-१७
वर्ष-७, अंक-१०
अवधि-मासिक, भाषा-हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ अगस्त, २०१८
आर्ष तिथि- भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्दशी
सृष्टि संवत्-१,९७,२९,४९, १२०
शक संवत्- १९४०
विक्रम संवत्- २०७५, दयानन्दाब्द-१९५

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इन्दौर- ०९४२५०६९४९१
(सायं ६ बजे से प्रातः ८ बजे तक मौन काल)

सम्पादक
गजेश शास्त्री, इंदौर (म.प्र.)

आवरण एवं शब्द संयोजन
लक्ष्य ग्राफिक्स - ९३०१४३३२११

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

संरक्षक (१५ वर्ष)	२५०००/-
आजीवन सहयोग (१५ वर्ष)	२१००/-
त्रैवार्षिक सहयोग	६००/-
वार्षिक सहयोग	२५०/-
एक प्रति	२५/-

अन्य सहयोग-स्वैच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इन्दौर
चालू खाता क्र. ३२८५९५९२४७९
आईएफएससी कोड-एसबीआईएन-०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज-वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ.क्र.
वेद मन्त्र-भावार्थ	वैदिक संसार	०४
महत्वपूर्ण पर्व, दिवस एवं जयन्ति-पुण्यतिथि	श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्	०४
वैदिक संसार के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन	सा.आ. प्रतिनिधि सभा	०५
सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, दिल्ली	पं. नन्दलाल निर्भय	०८
महा दानवीर, आर्य भामाशाह- ठा. विक्रम सिंह	पं. नन्दलाल निर्भय	०८
आओ जानें! शिल्पकारों के उत्कर्ष, पराभव...	सम्पादकीय	०९
आर्ष बोध, भाग-४	पं. कमलेशकुमार अग्निहोत्री	०९
शिल्प की दशा	पं. गंगाराम जांगिड	११
हमारी महान् विभूति- पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय	हरिश्चन्द्र आर्य	१३
- ईश्वरचंद विद्यासागर	हरिश्चन्द्र आर्य	१३
- गुरुनानक देव	शिवनारायण उपाध्याय	१४
गीता आर्य समाजी हो गई	स्वामी विवेकानन्द सरस्वती	१६
'वेदों की ओर लौटो'-ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ...	पं. सत्यपाल शर्मार्य	१९
वे लोग मूर्ख है या पागल-समझदार है या...	आर्य मोहनलाल दशोरा	२०
वेद प्रतिपादित 'देवहित आयु' और उसका ...	डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री	२१
विचार मंथन	रेणू अग्रवाल	२२
आज-कल	पं. देवमुनि	२३
राष्ट्रभाषा हिन्दी	नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'	२४
हिन्दी में वो बात है	रमेशचन्द्र भाट	२५
श्री विश्वकर्मा दिवस-१७ सितम्बर	आर्य पी.एस. यादव	२६
वैदिक साहित्य में विश्वकर्मा का स्थान	आचार्य रामज्ञानी आर्य	२७
समाज का गौरव शिल्पी वर्ग	रामफल सिंह आर्य	२८
ऋषि भक्तों के नाम अनुरोध पाती	सुखदेव शर्मा	२९
आर्य महासम्मेलन हेतु महत्वपूर्ण सुझाव	आचार्य श्रुति भास्कर	३१
उदासीन	ओमप्रकाश बजाज	३१
प्रतिक्रिया- बात हमारी भी मान जाओ	सुखदेव शर्मा	३१
शिक्षक दिवस	इन्द्रदेव गुलाटी	३२
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियां	संकलित	३३
परिभ्रमण- हम पहुंचे आर्य नरेश श्री रामचन्द्र जी.	सुखदेव शर्मा	३४
वैदिक संसार को आप महानुभावों का सहयोग	वैदिक संसार	४०
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियां	संकलित	४२
शोक-सूचना	वैदिक संसार	४२

वेद मन्त्र एवं भावार्थ

ओ३म् वयं शूरेभिस्तृभिरिन्द्र त्वया युजा वयम् ।
सासह्याम पृतन्यत:।। ऋ. १.८.४

भावार्थ : शूरता दो प्रकार की होती है, एक तो शरीर की पुष्टि और दूसरी विद्या तथा धर्म से संयुक्त आत्मा की पुष्टि, इन दोनों से परमेश्वर की रचना के कर्मों को जानकर न्याय, धीरज, उत्तम स्वभाव और उद्योग आदि से उत्तम-उत्तम गुणों से युक्त होकर सभा प्रबन्ध के साथ राज्य का पालन और दुष्ट शत्रुओं का निरोध अर्थात् उनको सदा भयभीत करते रहना चाहिए। ■

श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् अनुसार आर्यावर्त्त के माह सितम्बर २०१८ के महत्वपूर्ण पर्व एवं दिवस

भारत के एकमात्र वैदिक पंचांग से

१० गते	ईष मास	१९४० शक स. भाद्रपद कृष्ण षष्ठी २०७५	०१ सितम्बर	गुरु अमरदास व गुरु रामदास पुण्यतिथि
१३ गते	ईष मास	१९४० शक स. भाद्रपद कृष्ण नवमी २०७५	०४ सितम्बर	मृगशिरा-१४:१३, दादाभाई नौरोजी जयन्ति
१४ गते	ईष मास	१९४० शक स. भाद्रपद कृष्ण दशमी २०७५	०५ सितम्बर	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण जयन्ति, शिक्षक दिवस
१६ गते	ईष मास	१९४० शक स. भाद्रपद कृष्ण द्वादशी २०७५	०७ सितम्बर	क्षय तिथि त्रयोदशी ३०:०१, पुष्य- १८:०१, निरजा भनौत जयन्ति
१७ गते	ईष मास	१९४० शक स. भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी २०७५	०८ सितम्बर	विश्व साक्षरता दिवस
१८ गते	ईष मास	१९४० शक स. भाद्रपद कृष्ण अमावस्या २०७५	०९ सितम्बर	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जयन्ति
१९ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल प्रतिपदा २०७५	१० सितम्बर	महाराजा अग्रसेन जयन्ति
२० गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल द्वितीया २०७५	११ सितम्बर	विनोबा भावे जयन्ति, महादेवी वर्मा पुण्यतिथि
२१ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल तृतीया २०७५	१२ सितम्बर	चित्रा-१४:१२
२२ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल चतुर्थी २०७५	१३ सितम्बर	ब्रह्मचारी कृष्णदत्त जयन्ति
२३ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल पंचमी २०७५	१४ सितम्बर	गुरुवर वृजानन्द दण्डी दिवस (१४/०९/१८६८ स्वामी जी पुण्यतिथि ही उपलब्ध हो पायी है वैदिक पंचांग अनुसार आश्विन नहीं, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को उनकी पुण्यतिथि मनती है।), राजभाषा हिन्दी दिवस
२४ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल षष्ठी २०७५	१५ सितम्बर	अनुराधा-२५:२३
२५ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल सप्तमी २०७५	१६ सितम्बर	विश्व ओजोन दिवस,
२६ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल अष्टमी २०७५	१७ सितम्बर	मूल-२६:२१, डॉ. विश्वैश्वरैया जयन्ति, अभियन्ता दिवस
२७ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल नवमी २०७५	१८ सितम्बर	उत्तराषाढ़-२४:०३
२८ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल दशमी २०७५	१९ सितम्बर	माधवाचार्य जयन्ति
२९ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल एकादशी २०७५	२० सितम्बर	भरत मिलाप
३० गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल द्वादशी २०७५	२१ सितम्बर	पंचक प्रारम्भ- १४:०४
३१ गते	ईष मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल त्रयोदशी २०७५	२२ सितम्बर	गुरु नानकदेव पुण्यतिथि
०१ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स. आश्विन शुक्ल चतुर्दशी २०७५	२३ सितम्बर	तुला सक्रान्ति-०७:२४, सूर्य भोगांश १८० अंश, शून्य क्रान्ति, दिन-रात बराबर, सूर्य का गोलार्द्ध परिवर्तन, शरद ऋतु का मध्य बिन्दु, रामधारी सिंह दिनकर जयन्ति
०४ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स. आश्विन कृष्ण प्रतिपदा २०७५	२६ सितम्बर	ईश्वरचन्द विद्यासागर जयन्ति, मूक एवं बधिर दिवस
०५ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स. आश्विन कृष्ण द्वितीया २०७५	२७ सितम्बर	पंचक समाप्त-२०:०२, विश्व पर्यटन दिवस, राजा राममोहनराय पुण्यतिथि
०६ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स. आश्विन कृष्ण तृतीया २०७५	२८ सितम्बर	अमर बलिदानी सरदार भगतसिंह जयन्ति
०७ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स. आश्विन कृष्ण चतुर्थी २०७५	२९ सितम्बर	ब्रह्मचारी कृष्णदत्त पुण्यतिथि
०८ गते	ऊर्ज मास	१९४० शक स. आश्विन कृष्ण पंचमी २०७५	३० सितम्बर	क्षयतिथि षष्ठी- २९:४७, बैंकों का अर्द्धवार्षिक लेखा दिवस

किसी भी शंका समाधान एवं पंचांग प्राप्ति हेतु आ. दार्शनेय लोकेश, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.) से मो. ०९४१२३५४०३६ पर सम्पर्क करें।

अन्य स्त्रोतों से प्राप्त सितम्बर माह के कुछ विशेष दिवस

०६ पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जयन्ति
०९ आर्य आचार्य रामदेव पुण्यतिथि
१३ स्वामी ब्रह्मानन्द लोधी पुण्यतिथि
१७ विश्वकर्मा पूजन दिवस, ऋषि दधीचि जयन्ति
१८ शहीद शंकर शाह रघुनाथ पुण्यतिथि, अल्पसंख्यक अधिकार दिवस
१९ भामाशाह ठा. विक्रमसिंह जन्मदिवस
२५ पं. दीनदयाल उपाध्याय जयन्ति
२७ आचार्य ज्ञानेश्वरार्य जयन्ति

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान- वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि -मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, महर्षि, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगदृष्टा, स्व राष्ट्रप्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित-पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन-मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी दयानन्द के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुंचाने का प्रयास करना। ●

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२५-२६-२७-२८ अक्टूबर २०१८

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

सम्मेलन स्थल- स्वर्ण जयन्ती पार्क, रोहिणी, सेक्टर-१० दिल्ली-८५

विश्व शान्ति यज्ञ, योग व तपोनिष्ठ संन्यासियों, वैदिक विद्वानों द्वारा सत्संग तथा प्रवचन का लाभ उठाने हेतु लाखों की संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनावें

प्रमुख आकर्षण

मुख्य पंडाल: विश्वभर से पधारे विद्वानों, कार्यकर्ताओं, अधिकारियों एवं आमंत्रित अतिथियों द्वारा राष्ट्र व विश्व के समक्ष मौजूद समस्याओं के वैदिक समाधान तथा आर्य समाज के विश्व व्यापी संगठन के वर्तमान कार्यों की जानकारी। साथ ही भविष्य के आर्य समाज के नए स्वरूप का प्रस्तुतिकरण।

अनुषंगी हॉल : मुख्य पंडाल के अतिरिक्त अनेक अलग-अलग हॉल में विभिन्न आयु/भाषा/ रुचि वाले आगंतुकों हेतु अलग-अलग विषयों पर विशेष व्याख्यान, चर्चाएं, शंका समाधान, चलचित्र आदि के कार्यक्रम चलते रहेंगे।

आर्य प्रकाशक हॉल : वैदिक धर्म एवं आर्य समाज से सम्बन्धित साहित्य प्रकाशित करने वाले विश्वभर के आर्य प्रकाशकों का विराट संगम यहां होगा, जिसमें एक लेखक मंच भी होगा, जहां नए-नए लेखक एवं प्रकाशक अपनी कृतियों का परिचय देंगे।

विचार टीवी मूवी हॉल : १०० से अधिक फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम हॉल: आर्य समाज के इतिहास की सत्य घटनाओं का रोमांचक नाटिकाओं के माध्यम से प्रदर्शन।

विभिन्न भाषा हॉल: विश्वभर से पधारे विद्वानों द्वारा उनकी स्थानीय भाषाओं में प्रवचन।

भजनोपदेशक हॉल: विश्वभर से पधारे भजनोपदेशकों द्वारा पूर्णकालिक भजन प्रस्तुति।

गुरुकुल हॉल : आर्ष गुरुकुलों की परम्परा एवं संस्कृति प्रदर्शित करते पूर्णकालिक हॉल।

शंका समाधान हॉल- सुयोग्य विद्वानों द्वारा आगंतुकों की शंका का समाधान करने हेतु पूर्णकालिक हॉल।

प्रतियोगिताएं: गुरुकुलों एवं आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु पूर्णकालिक प्रतियोगिता हॉल।

विश्व आर्य समाज हॉल : विभिन्न देशों से पधारे आर्यजनों द्वारा उनके देशों में चल रही आर्य समाज की गतिविधियों को जानने का स्वर्णिम अवसर।

पर्यावरण एवं यज्ञ विज्ञान हॉल : पर्यावरण एवं यज्ञ के परस्पर वैज्ञानिक सम्बन्ध को दर्शाने हेतु विशेष हॉल।

गौशाला : एक आदर्श वैदिक परम्परा के नगर की संकल्पना जिसमें दुधारू गऊओं की गौशाला होगी।

यज्ञशाला: भव्य सुन्दर आदर्श शिल्प का नमूना, जिसे देखकर मन रोमांच से भर जाए।

लघु गुरुकुल- प्राचीन काल के गुरुकुल के सुन्दर दृश्य की जीवंत झांकी।

पूर्णकालिक यज्ञ- मुख्य यज्ञशाला के अतिरिक्त एक ऐसी यज्ञशाला भी होगी जहां निरन्तर यज्ञ होता रहेगा। आगन्तुक जब चाहें तब जाकर अपने परिवार धर्म मित्रों के साथ यज्ञ कर सकते हैं। महासम्मेलन की वेबसाईड पर अपनी सुविधानुसार समय पर स्थान आरक्षित करवाएं।

ध्यान योग- प्रतिदिन प्रातः खुले मैदान में योग, साधना, प्राणायाम एवं ध्यान की क्रियाओं का प्रशिक्षण। इसके उपरान्त ध्यान एवं योग साधना कक्षों में समय-समय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा चर्चाएं एवं साधनाएं।

सामूहिक यज्ञ प्रदर्शन - इस बार विशेष रूप से विश्व इतिहास में पहली बार १० हजार बच्चों, युवाओं एवं आर्यजनों द्वारा एक साथ सामूहिक रूप से एक रूपीय यज्ञ प्रदर्शन कार्यक्रम करने का प्रयास होगा।

आर्यवीर दल शाखा- प्रतिदिन प्रातःकाल आर्य समाज की युवाशक्ति का नयनाभिराम दर्शन।

भव्य व्यायाम कला प्रदर्शन- देश के विभिन्न राज्यों से आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल के चयनित आर्य वीरों, आर्य वीरांगनाओं द्वारा अद्भुत, अदम्य, साहस से परिपूर्ण कलाओं का प्रदर्शन। व्यायाम, भाला, तलवारबाजी, लाठी, नानचाकू, जुड़ो, कराटे, आत्मरक्षा तकनीकों आदि का प्रदर्शन।

नुक्कड़ नाटक - समसामयिक विषयों के ऊपर समाज में जागरुकता लाने हेतु खुले मंच पर नुक्कड़ नाटक का मंचन।

अन्धविश्वास निवारण हॉल- योग्य जादूगर द्वारा चमत्कारों का भंडाफोड़।

विश्वमार्यम् हॉल- सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आर्य समाज की कार्य एवं गतिविधियों की जानकारी देने हेतु विशेष हॉल।

वैवाहिक परिचय सम्मेलन - महासम्मेलन में एक दिन समस्त आर्य जगत् के लिए आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का

वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। आप भी अपने विवाह योग्य बच्चों का पंजीकरण वेबसाइउट पर कराएं। www.matrimony.thearyasamaj.org

प्रदर्शनी : आर्य समाज के इतिहास एवं सिद्धान्तों, संगठन, कर्त्तव्यों, घटनाओं का प्रदर्शन चित्र दीर्घा के माध्यम से होगा।

लेजर शो : महासम्मेलन के एक दिन सायंकाल महर्षि दयानन्द, आर्य समाज, इतिहास, वर्तमान, भविष्य की संकल्पना लिए एक अद्भुत प्रेरक कार्यक्रम जो चमकेगा सितारों के बीच आकाशवाणी की तरह।

सुंदर सजावट- पूरे महासम्मेलन स्थल के विभिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न प्रकार की सुन्दर यादगार रखने लायक सजावट की जाएगी।

विभिन्न सांस्कृतिक विरासतों का प्रदर्शन : महासम्मेलन के अवसर पर विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे आर्य कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रीय सांस्कृतिक विरासतों का दर्शनीय प्रदर्शन।

साहित्य बाजार: विश्वभर के वैदिक साहित्य के प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य तथा प्रचार सामग्री के क्रय की सुविधा रहेगी। पुस्तकों पर १० प्रतिशत की अनिवार्य छूट दी जाएगी।

रिकार्डिंग स्टूडियो : विश्व के कोने-कोने से पधारे विद्वानों, भजनोपदेशकों एवं कार्यकर्ताओं के वीडियो रिकार्ड करने की महासम्मेलन स्थल पर आडियो- वीडियो रिकार्डिंग स्टूडियो।

स्मारिका : एक भव्य स्मारिका का प्रकाशन किया जाएगा। जिसमें सुन्दर, प्रेरणास्पद लेख, कविताएं एवं रचनाओं के साथ-साथ विभिन्न आर्य संस्थाओं, सहयोगी संगठनों, शुभचिन्तकों के आशीर्वाद, शुभकामना सन्देश भी प्रकाशित किए जाएंगे। यदि आप अपने परिवारजनों, प्रियजनों की स्मृति में सन्देश प्रकाशित कराना चाहें तो करा सकते हैं। अपेक्षित शुल्क राशि देय होगी।

सुविधाएं व्यवस्थाएं

पंजीकरण : अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में भाग लेने के लिए पधारने वाले समस्त आर्यजनों को महासम्मेलन में व्यवस्था एवं सुरक्षा की दृष्टि से पंजीकरण करवाना अनिवार्य है। महासम्मेलन स्थल के मुख्य द्वार पर ही प्रत्येक आंगतुक को प्रवेश-पहचान पत्र जारी किया जाएगा। वेबसाईट पर अंग्रिम पंजीकरण करवाकर आने वाले आगंतुकों की पंजीकरण प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण हो जाएगी।

आवास: पधारने वाले समस्त आर्यजनों के आवास की नि:शुल्क व्यवस्था प्रांत के अनुसार धर्मशालाओं, विद्यालयों,आर्य समाजों एवं महासम्मेलन स्थल बल बनाए गए टैंटों के विभिन्न ब्लाकों में होगी। होटल एवं महासम्मेलन स्थल पर सशुल्क आवास में ठहरने की सुविधा महासम्मेलन से पूर्व अग्रिम राशि जमा कराने पर उपलब्ध होगी। इस सुविधा हेतु फार्म महासम्मेलन वेबसाईट पर उपलब्ध हैं। वेबसाईट पर भी होटल ऑनलाईन बुक किया जा सकता है।

भोजन: महासम्मेलन स्थल पर २४ से २८ अक्टूबर तक चौबीसों घण्टे भोजन की नि:शुल्क व्यवस्था रहेगी।

परिवहन: दिल्ली के प्रमुख रेलवे स्टेशनों तथा बस अड्डों से महासम्मेलन स्थल पर पहुंचाने तथा महासम्मेलन के अन्तिम दिन महासम्मेलन स्थल से रेलवे स्टेशनों, नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली, निजामुद्दीन, आनन्द विहार, सराय रोहिल्ला बस अड्डा-कश्मीरी गेट, आनन्द विहार, सराय काले खां आदि स्थानों के लिए बसों की नि: शुल्क व्यवस्था रहेगी।

भ्रमण: महासम्मेलन के अन्तिम दिन तथा उससे अगले दिन दिल्ली भ्रमण तथा विशेषकर उत्तर भारत के पर्यटन स्थलों के भ्रमणार्थ बसों की व्यवस्था अपेक्षित शुल्क पर उपलब्ध रहेगी।

महासम्मेलन बैंक :- सुरक्षा की दृष्टि से महासम्मेलन स्थल पर बैंक लॉकर की व्यवस्था रहेगी। आप अपनी नकदी एवं कीमती सामान जमा कर सकेंगे।

एटीएम: चल एटीएम की सुविधा रहेगी। आवश्यकता होने पर पैसे निकाल सकेंगे।

कैंटीन : महासम्मेलन में निशुल्क भोजन के अतिरिक्त कैन्टीन भी होगी जहां पर आगंतुक अपनी इच्छा एवं स्वादानुसार स:शुल्क चाय, नाश्ता, स्नैक्स, लंच डिनर आदि का आनंद ले सकेंगे।

स्नानागार व शौचालय: आगंतुकों के लिए स्नानागार एवं शौचालय की नि:शुल्क एवं सशुल्क दोनों व्यवश्थाएं उपलब्ध रहेगी।

स्वच्छ पेयजल: पेयजल की नि:शुल्क व्यवस्था के साथ जल एटीएम, बोतलें एवं गिलास की सशुल्क सुविधा (न्यूनतम मूल्यों पर) उपलब्ध रहेगी।

स्वास्थ्य जांच : सब संन्यासियों, विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं की नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच।

अमानती सामान घर: आर्यजनों को अपना अतिरिक्त सामान अपने साथ-साथ लिए न घूमना पड़े। इस हेतु महासम्मेलन स्थल पर ही अमानती सामान घर की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

खोया-पाया विभाग: महासम्मेलन स्थल पर कोई सामान आपको पड़ा मिले तो उसे खोया-पाया विभाग में जमा करा कर आर्यत्व का परिचय देवें, जिससे वह सामान उचित व्यक्ति को प्राप्त हो सके।

स्मृति चित्र : अपना स्मृति फोटो खिंचवा कर उसे फोटो फ्रेम के साथ सशुल्क प्राप्त करें।

चार्जिंग स्टेशन: आर्यजनों की सुविधार्थ मोबाईल एवं लैपटॉप चार्ज करने के लिए नि:शुल्क तथा सशुल्क सुविधा उपलब्ध होगी।

मोबाइल रिचार्ज: महासम्मेलन स्थल पर सभी मोबाइल कंपनियों के मोबाइल रिचार्ज की सुविधा उपलब्ध होगी।

सीसीटीवी : सुरक्षा व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुए सम्पूर्ण महासम्मेलन स्थल तथा आसपास की गतिविधियों को रिकार्ड करने के लिए सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था की गई है।

साइबर कैफे: आगंतुकों के प्रयोगार्थ साइबर कैफे एवं फोटोकापी की सशुल्क सुविधा उपलब्ध रहेगी।

सीधा प्रसारण : अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के उद्घाटन, समापन, आर्य वीर दल प्रदर्शन तथा सभी प्रमुख आयोजनों का विभिन्न

टीवी चैनलों, महासम्मेलन, वेबसाइड एवं सोशल मीडिया पर सीधा प्रसारण किया जाएगा।

रेलवे छूटः रेल मार्ग द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों से पधारने वाले आर्य महानुभावों के लिए भारतीय रेल द्वारा रेलभाड़ों में ५० प्रतिशत की छूट दी जाएगी। यह छूट केवल शयनयान (स्लीपर) श्रेणी के यात्रियों को उपलब्ध होगी।

व्हील चेयर : व्हील चेयर केवल धरोहर राशि पर उपलब्ध रहेगी।

बच्चों सम्बन्धी सुविधाएंः छोटे बच्चों की हाथ गाड़ी (PRAM) केवल धरोहर राशि पर उपलब्ध रहेगी।

मातृ सुविधा गृह : ३ वर्ष तक के बालक के साथ माता के विश्राम तथा शिशु पालन सम्बन्धी सुविधाओं के साथ निःशुल्क हाल की व्यवस्था होगी।

बच्चों का कोना : ६ से १२ वर्ष तक के बच्चों के मनोरंजन, खेलकूद, फिल्म दिखाने की पूरी सुविधा होगी।

महासम्मेलन स्मृति चिन्हों की नीलामीः महासम्मेलन समापन के पश्चात् महासम्मेलन में सज्जा हेतु बनवाई गई सुन्दर वस्तुओं को स्मृति चिन्ह के रूप में घर ले जाने हेतु उनकी नीलामी की जाएगी। नीलामी हेतु वस्तुओं की सूची फोटो सहित वेबसाइड पर २४ अक्टूबर २०१८ से उपलब्ध रहेगी।

विशाल आर्य वीर दल सेवा शिविरः महासम्मेलन में विभिन्न व्यवस्था कार्यों को सम्भालने वाले हजारों आर्य वीरों एवं आर्य वीरांगनाओं हेतु महासम्मेलन परिसर में विशाल आर्य वीर दल सेवा शिविर आयोजित किया जाएगा।

संन्यास एवं वानप्रस्थ दीक्षाः संन्यास एवं वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा प्रदान करने के लिए महासम्मेलन में विशेष सुविधा रहेगी।

वैदिक संस्कार : महासम्मेलन स्थल पर विशेष यज्ञ शाला में विभिन्न वैदिक संस्कार कराने हेतु सुंदर व्यवस्था रहेगी।

सोशल मीडिया कार्य प्रशिक्षणः महासम्मेलन में सोशल मीडिया पर कार्य करने हेतु विशेष प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की जाएगी।

यज्ञ प्रशिक्षण कक्षा : यज्ञ करने की सही विधि का प्रशिक्षण देने हेतु विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाएगा।

प्रतिनिधित्व : भारत के लगभग सभी राज्यों के साथ-साथ विश्व के लगभग ३२ देशों के आर्यजनों का इस महासम्मेलन में प्रतिनिधित्व होने का अनुमान है।

विशेष निवेदन

महासम्मेलन में पधारने वाले समस्त आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपने पधारने की पूर्व सूचना (आवास, भोजन एवं परिवहन की व्यवस्था में सुविधा की दृष्टि से) यथाशीघ्र अवश्य भेजें, ताकि तदनुरूप व्यवस्थाएं बनाई जा सकें। महासम्मेलन सम्बन्धी विस्तृत जानकारियां एवं अग्रिम पंजीकरण की सुविधा महासम्मेलन की वेब साईड www.aryamahasammelan.org पर उपलब्ध है।

महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष स्वागत समिति

हमारा प्रयास है कि हम समस्त श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधा एवं वातावरण दे पाएं जिससे कि वे सब तरफ से ध्यान हटाकर महासम्मेलन में विद्वान वक्ताओं द्वारा दिए जाने वाले उद्बोधनों का ध्यान पूर्वक श्रवण-मनन करके अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर उसकी भावना, उन्हीं विचारों को प्रतिपादित कर सकें।

इस महासम्मेलन का उद्देश्य आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बनाना, सभी आर्यजनों को अपने कार्यकर्ताओं के प्रति जागृत करना तथा वर्तमान सभी ज्वलंत समस्याओं पर आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्धारण करना है, जिसमें आप सभी की सक्रिय सहभागिता अपेक्षित है।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि महासम्मेलन को व्यवस्थित, सुन्दर एवं सफल बनाने में हमें आपका पूर्ण सहयोग, सद्भाव अवश्य ही प्राप्त होगा, जिससे हम और आप मिलकर इसका महासम्मेलन को एक यादगार, प्रेरक एवं ऊर्जावान स्मृति बना सकेंगे।

सुविधा की दृष्टि से आगन्तुक आर्य बन्धु (ग्रुप) में अपना विवरण पहले भेज देंगे तो उन्हें पहचान पत्र तैयार मिल जाएंगे।

अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की व्यवस्थाओं में आपका आर्थिक सहयोग सादर आपेक्षित है। कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/ बैंक ड्राफ्ट " दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा- महासम्मेलन २०१८' के नाम बनाकर संयोजक, अंतरराष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन, आर्य समाज, १५ हनुमान रोड नई दिल्ली- ११०००१ के पते पर भेजें। महासम्मेलन सहयोग हेतु दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा ८०जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

भवदीय

सुरेशचन्द्र आर्य
प्रधान, सार्वदेशिक सभा

प्रकाश आर्य
मन्त्री सार्वदेशिक सभा
०९८२६६५५११७

धर्मपाल आर्य
महासम्मेलन संयोजक
९८१००६१७६३

सम्मेलन कार्यालय : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली-१ दूरभाष : ९५४००२९०४४
E-mail : aryasabha@yahoo.com, **Website :** www.aryamahasammelan.org. www.thearyasamaj.org
Youtube : thearyasamaj **Whatsapp :** 9540045898

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन दिल्ली

आर्य जगत् के सब नर-नारी, पूरा जोर लगाओ रे।
आर्य महासम्मेलन दिल्ली, को मिल सफल बनाओ रे।।

वेद सभ्यता सदाचार को, भूल गया था जग सारा।
खाओ-पीयो, मौज-उड़ाओ, गूंज रहा था यह नारा।।
अबला, दीन, अनाथ, दुःखी थे, थी भारी गुण्डागर्दी।
ईश-भक्त विद्वानों से, थी नहीं किसी को हमदर्दी।।
सारी दुनिया आतंकित थी, जग को साफ बताओ रे।
आर्य महासम्मेलन दिल्ली, को मिल सफल बनाओ रे।।१।।

जगदीश्वर ने कृपा की, ऋषि दयानन्द को भेज दिया।
स्वामी दयानन्द योगी ने, सकल विश्व का भला किया।।
कर्म प्रधान बताया ऋषि ने, वैदिक धर्म निभाया था।
विष के प्याले-पी-पी करके मिटता जगत् बचाया था।।
जग हितकारी दयानन्द की, आओ महिमा गाओ रे।
आर्य महासम्मेलन दिल्ली, को मिल सफल बनाओ रे।।२।।

वेद विरोधी नास्तिकों ने, भूमण्डल को घेरा है।
रात अंधेरी छाई है, ना आता नजर सबेरा है।।
गुरुडम बढ़ा रहे हैं ढोंगी, दानवता का फेरा है।
अत्याचारी पनप रहे हैं देख दुखी दिल मेरा है।।
मुंह मोड़ दो, शैतानों के, लेखराम बन जाओ रे।
आर्य महासम्मेलन दिल्ली, को मिल सफल बनाओ रे।।३।।

देश-देश में, दुनिया भर में, पावन वेद प्रचार करो।
व्याकुल है संसार आर्यों! उठो जगत् की पीर हरो।।
श्रद्धानन्द अरु हंसराज बन, परहित के तुम काम करो।
बन जाओ गुरुदत्त, लाजपत, जग में ऊंचा नाम करो।।
मानव सब मानव बन जाएं, प्रेम की रीति चलाओ रे।
आर्य महासम्मेलन दिल्ली, को मिल सफल बनाओ रे।।४।।

याद रखो, इस दुनिया में जो, भले काम कर जाते हैं।
वे सब बड़े भाग्यशाली हैं, जग में आदर पाते हैं।।
खाना-पीना, मैथुन करना, पशुओं का यह लक्षण है।
जीव मात्र का जो हितकारी, उसका सच्चा जीवन है।।
'नन्दलाल' अब जागो, काम जगत् के आओ रे।
आर्य महासम्मेलन दिल्ली, को मिल सफल बनाओ रे।।५।।

आर्य भामाशाह महादानवीर
ठाकुर विक्रमसिंह आर्य

१९ सितम्बर जन्मदिन पर विशेष

जो मानव संसार में, करते अच्छे काम।
वे कर जाते हैं अमर जग में अपना नाम।।
जग में अपना नाम, धन्य है उनका जीवन।
गाते हैं यश गान, प्रेम से उनके सज्जन।।
राम,कृष्ण, दयानन्द निराले थे तपधारी।
सच्चे ईश्वर भक्त गुणी, त्यागी, उपकारी।।१।।

ठाकुर विक्रमसिंह हैं, ईश्वर भगत महान् ।
देश भक्त धर्मात्मा मानवता की शान।।
मानवता की शान, वीर योद्धा नर बंका।
करता अच्छे काम, बजा है जग में डंका।।
सकल गुणों की खान, वेद मर्यादा पालक।
आर्य वीर महान् सत्यता का संचालक ।।२।।

वेद प्रचारक हैं बड़ा विक्रमसिंह गुणवान।
शास्त्रार्थ महारथी, दानवीर महान् ।।
दान वीर महान् , स्पष्टवादी है नेता।
साहस बल की खान, गजब का है प्रचेता।
पाखण्डियों की पोल, खोल पल में देता है।
परहित में सब कष्ट, झेल विक्रम लेता है।।३।।

करता है हरवर्ष जो वीर करोड़ों दान।
विद्वानों का हर तरह करता है सम्मान।।
करता है सम्मान, धर्म पालक है ज्ञानी।
भामाशाह सा सेठ, निराला विक्रम दानी।।
आर्य जगत् में नहीं, एक भी ऐसा नेता।
विद्वानों को मान, न कोई ऐसा देता।।४।।

विनती मेरी, अब सुनो, दयासिन्धु भगवान।
विक्रमसिंह को कीजिए, दीर्घायु प्रदान।।
दीर्घायु प्रदान, काम यह जग के आए।
अबला दीन, अनाथ, जनों को गले लगाए।।
वीर लाजपत बने, देश की शान बढ़ाएं।
'नन्दलाल' कह खौफ नहीं दुष्टों का खाएं।।५।।

विश्वकर्मा कुल गौरव
- पं. नन्दलाल निर्भय
बहीन, हरियाणा
चलभाष
९८१३८४५७७४

सम्पादकीय

आओ जाने! शिल्पकारों के उत्कर्ष, पतन, संघर्षों एवं उत्थान का इतिहास, वर्तमान में उत्थान अथवा पतन

उत्कर्ष, पतन, संघर्ष एवं उत्थान शब्द मानव आदि के उपयोगार्थ शब्द हैं। मानव से इतर प्राणियों का जीवन अपने नियमित शैली पर संचालित होता है। क्योंकि मानव जीवन नैमित्तिक ज्ञान पर आधारित है, जबकि अन्य प्राणी जीवन परमात्मा प्रदत्त स्वाभाविक ज्ञान पर आधारित है।

मानव का उत्कर्ष, पतन और उत्थान इसके ज्ञान-विज्ञान पर निर्भर है। ज्ञान-विज्ञान अर्थात् कला-कौशल जिसका शास्त्रोक्त नाम है शिल्प। भारत विश्वगुरु था यह तो सब जानते हैं किन्तु क्यों था यह सब नहीं जानते ! भारत जब तक वैदिक ज्ञान-विज्ञान से जुड़ा रहा तब तक इसका उत्कर्ष बना रहा अर्थात् यह विश्वगुरु की पदवी पर आसीन रहा। महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं कि वैदिक मान्यताओं का ह्रास महाभारत से १००० वर्ष पूर्व होना प्रारम्भ हो गया। यहीं से मानव जाति के उत्कर्ष के स्थान पर पराभव होना शुरू हो गया और उसका केन्द्र था भारत। जब पराभव होना शुरू हुआ तो फिर हिस्से में आता है पतन और संघर्ष।

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से संघर्ष करने वालों को किसी पुण्यात्मा का दिग्दर्शन प्राप्त होता है और उत्थान की ओर अग्रसर होते हैं। महाभारत युद्ध के पूर्व से प्रारम्भ हुए पराभव के कारण महाभारत युद्ध हुआ, जिसे रोकने में भगवान श्रीकृष्ण जैसे महापुरुष भी विफल रहे। महाभारत पश्चात् जो अज्ञान के अन्धकार का साम्राज्य फैला तथा पतन एवं संघर्ष की गाथा शुरू हुई इस घोर अन्धकार के युग में महावीर स्वामी तथा गौतमबुद्ध जैसी पुण्यात्माएं उत्पन्न हुई इन्होंने कुछ-कुछ मानव जाति को सद्मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया और आंशिक रूप में सफल भी हुए किन्तु वेदज्ञान से विमुख होने तथा वेदज्ञान के विषय में भ्रान्तियों से ग्रसित होने से ये विभूतियां भी दिग्भ्रमित हो वेद की विरोधी हो गईं, जिससे इनसे उपजी विचारधाराएँ वैदिक संस्कृति की मान्यताओं की विरोधी हो विपरित मार्ग पर अग्रसर हो गईं, जिसे कुछ-कुछ ठीक किया आद्य जगत् गुरु शंकराचार्य जी ने। अगर शंकराचार्य जी का अवतरण नहीं होता तो वेद और वैदिक संस्कृति समाप्त हो गए होते। जगत् गुरु का अल्पायु में निधन हो जाने से उनके द्वारा किया गया कार्य अपूर्ण रह गया। भक्तिकाल में अनेक दिव्य विभूतियों ने जन्म लिया, जिनमें अनेकों ने वेदानुकूल ईश्वर के अजन्में निराकार सर्वव्यापी स्वरूप को माना और उसी ईश्वर की उपासना की तथा अन्यों को प्रेरणा दी किन्तु वेद तथा वैदिक संस्कृति के अनन्य भक्त श्रीकृष्ण जी के पश्चात् कोई हुआ तो वह थे महर्षि दयानन्द सरस्वती। उस धर्मात्मा-पुण्यात्मा ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में भारत के पतन के विषय में लिखा कि शिल्प विद्या का पतन नहीं होता तो यूरोपिय अभिमान में नहीं चढ़ जाते। महर्षि दयानन्द जी ने अपने द्वारा किए गए ऋग्वेद तथा यजुर्वेद के मन्त्रों के भाष्य में अनेक मंत्रों में शिल्प विद्या की महत्ता प्रतिपादित की है तथा महर्षि द्वारा रचयित **'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका', 'सत्यार्थ प्रकाश', 'संस्कार विधि',** तथा आपके द्वारा पूना में दिए गए व्याख्यानों का संकलन जो **'उपदेश मञ्जरी'** के नाम से सुविख्यात है में अनेक स्थानों पर शास्त्रोक्त शिल्प विद्या अर्थात् ज्ञान विज्ञान की महत्ता के विषयांकित है। वैदिक ज्ञान-विज्ञान के बूते पर विश्व गुरुता के सर्वोच्च दायित्व का निर्वहन करने वाला भारत देश वेदों के ज्ञान-विज्ञान से विमुख होने के कारण अज्ञानता के अंधकार की पतन की गहरी खाईं में गिरा और पराधीन हुआ। महर्षि दयानन्द ने पराधिनता की बेड़ियों में जकड़ी विश्वगुरु की सन्तती को सन्देश दिया **'वेदों की ओर लौटो'** इससे अज्ञानता के अन्धकार में सोयी हुई आर्य जाति ने करवट ली और जागृत होकर उसने पराधिनता की बेड़ियों को काट फेंका।

महर्षि के ग्रन्थों से प्रेरणा पाकर उपेक्षित, शोषित- पीड़ित शिल्पकारों के खाती-मैथिल वर्ग के कुछ प्रबुद्ध व्यक्तियों (जिनमें डॉ. इन्द्रमणि शर्मा का नाम प्रथम प्रेरक के रूप में जाना जाता है **अजमेर शहर की प्रकाशित स्मारिका में आपके परिचय में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जांगिड ब्राह्मण समाज के प्रथम शिष्य लिखा** है।)द्वारा शिल्पवर्ग में वैदिक-संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु एक संस्था का सृजन किया जिसका

आर्ष बोध, भाग-४

१. जो समग्र ऐश्वर्ययुक्त, धर्मात्मा, यशस्वी, शोभायमान, ज्ञानी और वीतरागी होते हैं, वे भगवान कहलाते हैं। ईश्वर को भी भगवान कहते हैं, किन्तु ईश्वर एक और भगवान उपयुक्त गुणों से युक्त अनेक हुआ करते हैं।

२. मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम, योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण आदि महापुरुषों के पदचिन्हों पर चलने से कल्याण होता है। उनका नाम जपने और उनकी जय बोलने मात्र से नहीं, यह सदा याद रखना चाहिए।

३. अपने कल्याण की इच्छा रखने वाले नर-नारियों को वैदिक विधि से नित्य प्रति प्रातः सायं श्रद्धा भक्ति भावना से (ईश्वर का सत्य स्वरूप जान कर उसकी) उपासना अवश्य करनी चाहिए, इसे ब्रह्मयज्ञ कहते हैं।

पण्डित कमलेश कुमार अग्निहोत्री
सत्य सनातन धर्म प्रबोधक मण्डल, कर्णावती (गुजरात),
चलभाष- ९८२४०९६०४५, ९९७९४२८०८९

नाम रखा **'जांगिड जोग मैथिल सभा'** इससे प्रेरणा पाकर **'धीमान महासभा'** तथा विश्वकर्मा वर्ग में अन्य अनेक सभाएं बनी और सम्पूर्ण मानव समाज का परोपकारी बहुसंख्य वर्ग जो शोषण-उत्पीड़न से पीड़ित था के उत्थान का मार्ग प्रशस्त हुआ।

वर्ष १९०७ में स्थापित **'जांगिड जोग मैथिल सभा'** का वर्तमान नाम **अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा**, दिल्ली है। इस संस्था का उद्देश्य रक्खा समाज में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करना। इसकी स्थापना के प्रारम्भ में इसके नियम आर्य समाज के ही दस नियम थे। वर्ष १९०८ में समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। उसका नाम था **'जांगिडा समाचार'**, जिसका वर्तमान नाम **'जांगिड ब्राह्मण'** है। शिल्पकर्मी समुदाय के उत्थान में उपरोक्त संस्था और समाचार पत्र ने मिल के पत्थर की भूमिका का निर्वाह किया। वर्तमान में वर्णित संस्था समाचार पत्र तथा शिल्पकर्मी समुदाय सभी पुनः महर्षि दयानन्द जी द्वारा दिखाए गए मार्ग **'वेदों की ओर लौटो'** से मुख मोड़कर पतन की गहरी खाई में धकेलने वाली अज्ञानता की ओर भाग रहे हैं। इन्हें सचेत कर वेद के मार्ग को आत्मसात करने हेतु प्रस्तुत है कुछ वेदानुकूल दृष्टिकोण तथा ऐतिहासिक तथ्य-वंश परम्परा से कला-कौशल, के कार्यों से जुड़े परिवार अपने-आपको विश्वकर्मा वंशी कहते हैं, मानते हैं तथा भगवान विश्वकर्मा के प्रति श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा आंख मूंदकर रखते हैं और विश्वकर्मा वर्ग ही नहीं कला-कौशल के कार्यों को अपना चुके अन्य समुदायों के सदस्य भी विश्वकर्मा भगवान के प्रति श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा आँख मूंदकर रखते हैं, प्रत्येक देव पुरुष- महापुरुष पर अटूट श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा होनी भी चाहिए और कला-कौशल से जुड़े व्यक्ति ही क्यों? प्रत्येक मानव को भगवान विश्वकर्मा के प्रति श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा रखना चाहिए, किन्तु आँखें मूंदकर नहीं अपितु ज्ञानपूर्वक जान-समझकर श्रद्धा, विश्वास और निष्ठा रखना प्रत्येक मानव का धर्म है तथा किसी भी कार्य को आंख मूंदकर करने के स्थान पर उसे जान समझकर करना अत्यधिक लाभप्रद होता है तथा हानि की सम्भावना समाप्त हो जाती है।

आईये विश्वकर्मा के विषय में जानें- विश्वकर्मा नाम गौणिक नाम है अर्थात् गुण वाचक है। यह दो शब्दों से मिलकर बना है, विश्व और कर्मा, विश्व का अर्थ है सम्पूर्ण अथवा सकल, कर्मा का अर्थ है कर्ता अर्थात् कर्म करने वाला। संयुक्त अर्थ होगा सम्पूर्ण कार्यों को करने वाला। यहां प्रश्न उपस्थित होता है-**सम्पूर्ण कार्यों को कौन कर सकता है?** इसका सीधा-सरल उत्तर यही है जिसका ज्ञान और क्षमता सम्पूर्ण कार्यों को करने की होगी वही सम्पूर्ण कार्यों को कर सकता है अर्थात् जो सर्वज्ञ तथा सर्वशक्तिमान है वही सम्पूर्ण कार्यों को करने में सक्षम है। अब परमपिता परमात्मा प्रदत्त बुद्धि का सदुपयोग करो तथा विचार करो कि सम्पूर्ण जगत् में ऐसा कौन है जो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है और साथ में यह भी जोड़ लो कि वह सदैव रहता है उसकी न कभी उत्पत्ति होती है न कभी अन्त होता है? जब आप अपनी बुद्धि का ठीक-ठीक सदुपयोग करोगे तो आपको उत्तर प्राप्त होगा **'परमपिता परमात्मा'** जिसे हम सभी ईश्वर भी कहते हैं, क्योंकि वह ऐश्वर्यशाली भी है। इस संसार की आदि अर्थात् - उत्पत्तिकर्ता ईश्वर है अर्थात् वह इस संसार के पूर्व से विद्यमान हैं। वह ईश्वर एक है अनेक नहीं, किन्तु उसके गुण-कर्म-स्वभाव अनेक होने से वह अनेक नामों से जाना गया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के अनेक नामों का विस्तृत विवेचन प्रमाण सहित किया है।

वेदादि शास्त्रों के ज्ञान से विमुख सामान्यजन ने ईश्वर के अनेक नामों के कारण भ्रान्तिवश उसे अनेक मान लिया है। इस प्रकार विश्वकर्मा पृथक से कोई ईश्वर न होकर उसी जगत् नियन्ता का एक गौणिक नाम है जो सम्पूर्ण कार्यों को करने की क्षमता सदा रखता है और सम्पूर्ण कार्यों को सदा करता है, उसी का नाम विश्वकर्मा है।

यहां पर विश्वकर्मा की गाई जाने वाली आरती पर भी ध्यान चाहूंगा-

जय श्री विश्वकर्मा, प्रभु जय विश्वकर्मा।
सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक श्रुतिधर्मा।।
आदि सृष्टि में विधि को श्रुति उपदेश किया।
जीव मात्र का जग में ज्ञान विकास किया।।...

द्वितीय पंक्ति स्पष्ट रूप से कह रही है- **'सकल सृष्टि के कर्ता' अर्थात्** - इस सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता तथा संहारक तो वह अजन्मा-अनन्त, सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान ही है जो सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व विद्यमान था इसी पंक्ति का अंतिम चरण कह रहा है- **'रक्षक श्रुति धर्मा' 'श्रुति'** वेद का ही नाम है अर्थात् वेद धर्म का रक्षक, तृतीय पंक्ति अत्यन्त विचार योग्य है- **' आदि सृष्टि'** का अर्थ है सृष्टि का प्रारम्भ **'में विधि को'** का तात्पर्य इस प्रकार होगा कि सृष्टि के प्रारम्भ में विधि अर्थात् - नियम अथवा विधान हेतु, अंतिम चरण है **'श्रुति उपदेश किया'** ऊपर कह आए हैं श्रुति अर्थात् वेद। इस प्रकार पूर्ण पंक्ति का अर्थ होगा सृष्टि की उत्पत्ति के साथ इस सृष्टि में रहने के विधान हेतु वेद का ज्ञान दिया। आरती की प्रस्तुत अंतिम पंक्ति कह रही है-**जीव मात्र का जग में ज्ञान विकास किया, यह कार्य तो परमपिता परमात्मा ही करता है और कर रहा है।'**

सृष्टि अर्थात् सम्पूर्ण जगत् को परमात्मा ने जीवात्माओं के प्रारब्ध कर्मानुसार भोग और अपवर्ग के लिए रचा है। मानव शरीरधारी जीवात्माएँ भोग के साथ-साथ अपवर्ग अर्थात् मोक्ष की अधिकारी है और इनके लिए इस संसार में किस प्रकार रहते हुए, कैसे मोक्ष को प्राप्त करने के अधिकारी बने के ज्ञान हेतु वेद का ज्ञान दिया, जबकि मानव के इतर अन्य प्राणियों को केवल भोग भोगना है अतः वे नैमित्तिक ज्ञान के अधिकारी नहीं है। इस कारण उन्हें अपने जीवन को संचालित करने हेतु स्वाभाविक ज्ञान दिया, अर्थात् उन्हें किसी पुस्तक, पाठशाला, शिक्षक आदि की आवश्यकता नहीं है। वे मोक्ष को प्राप्त करने के अधिकारी न होकर केवल और केवल अपने प्रारब्ध के कर्मों का फल भोग रहे हैं।

इस सम्पूर्ण विवेचन से पाठकों को ज्ञात हुआ होगा कि विश्वकर्मा

वस्तुतः परमपिता परमात्मा का ही एक गुण वाचक नाम है। ईश्वर से पृथक अन्य कोई विश्वकर्मा नहीं। उपरोक्त ईश्वर रूपी विश्वकर्मा समस्त मानव जाति का उपास्य देव है न कि मात्र शिल्पकर्मियों का।

प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या यह वही ईश्वर है, जिसे शिल्पकर्मी सफेद दाढ़ी-मूंछ के चार हाथ वाली मानवाकृति के रूप में चित्र अथवा मूर्ति बनाते हैं? इस प्रश्न का उत्तर एक प्रश्न के रूप में देना चाहूंगा इस सृष्टि में न्यायकारी परमपिता परमात्मा की कर्मफल व्यवस्थानुसार जो भी जीवात्माएं मानव योनि में उत्पन्न हुई वे चाहे ऋषि-मुनि थे अथवा सामान्यजन उनके पहचाने जाने की सुविधा दृष्टि से उनके नाम वेदादि शास्त्रों से परमात्मा के विषयक नाम अथवा उत्कृष्ट शब्दों को लेकर नाम रखे गए या नहीं? जैसे ईश्वर ब्रह्म, विष्णु, शिव, नारायण, गणपति, आदित्य आदि-आदि। आपका उत्तर होगा हां, ये सब मनुष्यों के नाम हमने हमारे धर्म ग्रन्थों से लेकर रक्खे हैं। मेरा आगामी प्रश्न है क्या वर्तमान में ईश्वर से मिलते हुए समस्त नामों के व्यक्तियों को ईश्वर मान लोगे? इसी प्रश्न के साथ एक प्रश्न और क्या वर्तमान में जितने भी व्यक्ति रामचन्द्र जी नाम के मिलेंगे उन्हें दशरथ नन्दन श्रीरामचन्द्र जी मान लोगे? दोनों प्रश्नों का उत्तर, आपका नहीं ही होगा, आप यही कहोंगे वे मूल थे, ये केवल नाम के हैं। इसी प्रकार ये सफेद दाढ़ी-मूंछ वाले भगवान विश्वकर्मा ऋषि थे। वेदादि शास्त्रों में ऋषि- शोधकर्ता आविष्कारक को कहा जाता है। जिसे वर्तमान में हम लोग वैज्ञानिक कहते हैं। चित्रकार अथवा मूर्तिकार ने इनके चार हाथ अलंकारिक रूप में प्रदर्शित किए हैं अर्थात् हाथ जो हैं वह कर्म के प्रतिक हैं और जिसके कर्म में चार वेदों का ज्ञान समाहित है उसे चार वेदों का ज्ञाता प्रदर्शित करने के लिए चार हाथों वाला बताया गया है। जैसे किसी के विषय में कहा गया कि चांद सा मुखड़ा। अब बताइये चांद और मुख में क्या समानता, किन्तु यहां उस मुख की सौम्यता, सुन्दरता, शालीनता की प्रशंसा में चाँद की उपमा दी गई है। इसी प्रकार कहीं-कहीं विश्वकर्मा के पांच मुख भी देखे जाते हैं तथा उन्हें **'पंचमुखी विश्वकर्मा'** भी कहा जाता है। मुख शरीर का शीर्ष भाग है तथा एक प्रकार से ज्ञान विभाग है। विश्वकर्मा के पांच मुखों में एक तो उनका अपना मूल मुख है तथा चार मुख उनके चार वेदों की ज्ञान क्षमता को प्रदर्शित करते अलंकारिक मुख है न कि व्यवहारिक। यह चित्रकार अथवा मूर्तिकार का अपनी बात कहने का ढंग है, कला है, इसे ज्ञानवान अवश्य समझ लेगा। जो न समझे उसका तो कोई उपचार किसी के पास नहीं। वेदों का ज्ञाता भगवान ऋषि विश्वकर्मा ने शिल्प शास्त्र की रचना की, जिसे अथर्ववेद का उपवेद अर्थवेद के रूप में जाना जाता है। वैसे जिस तरह ब्राह्मण व्यास, चिकित्सक, अधिवक्ता, किसी व्यक्ति तथा जाति का नाम होकर योग्यताधारित उपाधियां है उसी प्रकार विश्वकर्मा भी एक उपाधि है, जो कला-कौशल में दक्ष है वह विश्वकर्मा है।

अनेक व्यक्तियों के साथ भगवान शब्द प्रयुक्त हो जाने से वेद ज्ञान विहिन व्यक्तियों को भ्रान्ति हो जाती है कि ये सब ईश्वर है। इस भ्रान्ति का कारण है भगवान शब्द को ठीक-ठीक नहीं जान पाना। जिस प्रकार धन, बल, विद्या, वैराग्य जिनके-जिनके पास होते हैं, उन्हें हम धनवान, बलवान, विद्यावान, वैराग्यवान आदि-आदि कहते हैं। इसी प्रकार भग् भी शब्द है जो सकल ऐश्वर्यों का परिचायक है। सकल ऐश्वर्यों का स्वामी होने से ईश्वर तो स्वयं भगवान है ही किन्तु पुण्यात्माओं को उनके प्रारब्ध कर्म फलानुसार वह मानव योनि देकर सकल ऐश्वर्यों अर्थात् भग् प्रदान करता है, वे भगवान कहलाते हैं। विचार करो जिसके पास धन है उसे आपने धनवान कह दिया, जिसके पास विद्या है उसे विद्यावान कह दिया। जिसके पास बल है उसे बलवान कह दिया। जिसके पास वैराग्य है उसे वैराग्यवान कह दिया। इस प्रकार के छः ऐश्वर्य कहे गए हैं और इन सबका स्वामी परमेश्वर है तो वह स्वयं तो भगवान है ही किन्तु जीवात्मा के उत्तमोत्तम कर्मफल के कारण सकल ऐश्वर्य प्रदान किए, उसे क्या कहोगे? उसे भगवान ही कहना होगा और जो मानव निस्वार्थ भाव से पक्षपात रहित सबका कल्याण कर रहा है। परोपकार कर

शिल्प की दशा

नई कल्पना नई रोशनी विश्व रोज बदलता है।
संसार शिल्प से चलता है।
पर तू न बदला अब तक शिल्पी
तू उसी राह पर चलता है।
दुनिया बदली, दौलत बदली मानव भी हर रोज बदलता है
शासन राशन सभी बदल गए, पर तू न अभी तक बदला है
भूख-प्यास सहकर भी तू मेहनत में समय बिताता है
इन ऊंची शान वालों की तू ही तो तकदीर बनाता है
यह दुनिया है? क्या अजब तमाशा व्रो तुमसे ही धनवान बने
और तुम्हें मजदूर बताता है
जब तू चाहे पत्थर को भगवान बना देता है
तरह-तरह के मंदिर-मस्जिद, ताल, सुरंग रचा देता है
तेरे बनाए हुए से हर मानव अपना काम चला लेता है
सेवा पूजा करके भी मौज खूब उड़ा लेता है
तेरी मेहनत की कदर कहां तू यूहीं तड़पता रहता है
तीर, तोप, खंजर, बंदूकें तूने ही तैयार किए
तेरे ही हाथों के बल पर कितने दुश्मन मार दिए
किसान के सब ही साधन भी तूने ही तैयार किए
तू तो पड़ा रह गया कहीं पर अब जय जवान और
जय किसान का नारा ही- संसार लगाता है
अब भी जाग उठो शिल्पियों आज भी शिल्प पर
पहला अधिकार तुम्हारा है

गंगाराम जांगिड माधौ
बिहारी का अहाता, स्टेशन
रोड, जयपुर (राज.)

रहा है वह देने वाला अर्थात् दाता होने से देवता कहाता है। सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, नक्षत्र आदि जड़ वसु देवता तथा माता-पिता, विद्वान, चेतन देव आदि परोपकारी देवताओं का निर्माता होने से ही ईश्वर महादेव, अर्थात् देवों का देव है।

मनुष्य मात्र के कल्याण का एक ही मार्ग है अपनी बुद्धि का विकास तथा बुद्धि के विकास का एक ही पथ है **'वेद'** अन्य कोई रास्ता नहीं। यजुर्वेद के ३१वें अध्याय का १८वां मन्त्र हमें इस विषय में निर्देशित कर रहा है.... **नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।'** अर्थात् अन्य कोई मार्ग नहीं है।

आईए इतिहास पर दृष्टि डालें- विश्वकर्मा वंशियों में संगठन कैसे बने। इसका विवेचन हम लेख के अग्रभाग में कर आए हैं। ऊपर हमने जांगिड समाचार बनाम जांगिड ब्राह्मण का भी उल्लेख किया है। उपरोक्त पत्र प्रकाशन वर्ष १९०८ में प्रारम्भ हुआ था। इस पत्र का उद्देश्य इसके प्रारम्भिक अंकों में स्पष्टतः इस प्रकार प्रकाशित होता था **'समाज में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार -प्रसार करना।'**। गत वर्षों को छोड़कर इसके मुख पत्र पर वेद मन्त्र और महर्षि पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी अनुकूल मन्त्र का भाष्य (अर्थ) प्रकाशित होता था। इसकी सम्पूर्ण जानकारी हमें माता सुषमा जी द्वारा लिखित पुस्तक **'जांगिड जाति का प्रारम्भिक इतिहास'** तथा १९७५ में प्रकाशित निर्देशिका तथा महासभा द्वारा प्रकाशित **'जांगिड समाचार'** तथा जांगिड ब्राह्मण के पूर्व प्रकाशित अंकों में हो सकती है।

इस सभा का मूल उद्देश्य था शोषित-पीड़ित शिल्पकर्मी समुदाय को ब्राह्मण अर्थात् - ज्ञानी बनाना। जिसके प्रेरणा स्त्रोत थे-महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने शिल्पकर्म को परोपकारी यज्ञ कर्म माना था, आपका मानना था कि प्राणी मात्र की क्षुधा को शान्त करने वाला कृषि कर्म बगैर शिल्पकर्म के नहीं हो सकता। पतित, अधम, अछूत, शूद्र वर्ण में करार दे दिए गए राष्ट्र के गौरव शिल्पी वर्ग के उत्थान का मार्ग खोल दिया महर्षि दयानन्द सरस्वती ने, जिन शूद्रों को वेद का वाक्य सुनने का अधिकार नहीं था वे आर्य समाज और गुरुकुलों में निर्बाध रूप से वेद तथा वेदादि शास्त्रों को पढ़ने लगे तथाकथित जन्मना ब्राह्मणों को शास्त्रार्थों की चुनौतियां दी जाने लगीं। उनके व्यवहार-आक्षेपों को लेकर न्यायालयीन कार्रवाइयां की जाने लगी। १२.२.१९३२ को दिल्ली न्यायालय का फैसला आया जांगिड ब्राह्मण विशुद्ध ब्राह्मण है। देखें महासभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'दिल्ली अदालत का फैसला'**। स्थान-स्थान पर संस्कृत विद्यालय, हवन, मण्डलों की स्थापना हुई। शिल्पकर्मियों को यज्ञोपवित धारण करने का मार्ग खुल गया। यज्ञोपवित धारण करने लगे। संस्कृत शिक्षा प्राप्त कर शास्त्री- आचार्य-उपाध्याय बनने लगे। नाम के साथ शर्मा लिखने लगे। शर्मा, शर्मन् धातु से निष्पन्न शब्द है जिसका अर्थ है अज्ञानता के अन्धकार का नाश करने वाला।

जांगिड वैदिक संस्कृत वरिष्ठ उपाध्याय विद्यालय- दिनांक २ से ४ अक्टूबर १९४३ को अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा का २६वां राष्ट्रीय अधिवेशन फतेहपुर शेखावटी जिला सीकर (राज.) में आयोजित किया गया। उपरोक्त अधिवेशन में समाज के अनेक महापुरुषों के समाज सुधारवादी भाषण हुए। उस अधिवेशन में फतेहपुर शेखावटी के वरिष्ठ समाज सेवी, दलितोद्धारक गांधी अनुयायी सेठ श्री सोहनलालजी दुग्गड़ (जैन ओसवाल) को भी ससम्मान आमंत्रित किया गया था। आपने अपने उद्‌बोधन में कहा कि आप लोग भाषण देकर चले जाओगे इससे कुछ होने वाला नहीं है। ऐसा कोई कार्य करके दिखाओ जिससे समाज का भला हो।

जांगिड़ ब्राह्मण समाज के महात्मा पं. गुरुदेव जयकृष्ण मणिठीया उस अधिवेशन में उपस्थित थे, विचार-विमर्श उपरान्त **'जांगिड ब्राह्मण वैदिक वरिष्ठ उपाध्याय विद्यालय'** स्थापित करने का प्रस्ताव पारित हुआ। सेठ श्री सोहनलाल जी दुग्गड़ ने सर्वप्रथम १००० रुपए का दान विद्यालय हेतु दिया। नगर के बाहर खातियों की एक बगीची थी उसमें विद्यालय प्रारम्भ करने की सहमति बनी। उत्तरप्रदेश के निवासी पं. हरिकेश दत्त शास्त्री जी जो वैदिक विद्वान थे उस समय महासभा के उपदेशक पद पर सेवारत थे। आप अधिवेशन की तैयारियों को लेकर एक माह बनियों की धर्मशाला में रुके थे। आपके भोजन का प्रबन्ध गोवर्धनलाल जी के यहां से किया गया। आपको ३० रुपए प्रतिमाह महासभा मानदेय देती थी। विद्यालय के प्रारम्भ में अभिभावक बच्चों को भेजने के लिए भी तैयार नहीं होते थे। छुआ-छूत के उस काल में यह विद्यालय एकमात्र ऐसा था, जिसमें शोषित पीड़ित (दलित) परिवारों के बालकों को भी प्रवेश दिया गया। विद्यालय में प्रारम्भ में प्रवेश निःशुल्क था। दान द्वारा संचालित होता था। आगे जाकर महासभा द्वारा हाथ पीछे खींच लिए जाने पर स्थानीय समिति गठित की जाकर विद्यालय संचालित किया गया। पं. हरिकेषदत्त शास्त्री जी जयपुर का इस विद्यालय की स्थापना से लेकर संचालन में प्रमुख योगदान रहा। आपके शिष्य आचार्य रामगोपाल जी सैनी इस विद्यालय के प्राचार्य रहे जो वर्तमान में फतेहपुर शेखावटी में रहते हैं। उनके निवास पर पण्डित जी का चित्र आज भी लगा है।

शिल्पकर्मी समुदाय अपने उत्कर्ष, पतन, संघर्षों तथा उत्थान के इतिहास से शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर उसे विस्मृत कर मनुष्य मात्र के एकमात्र कल्याण के वेदोक्त पथ से विमुख हो अज्ञानता की गहरी खाईं में गिरकर अन्धविश्वास-पाखण्ड के दल-दल में धंसता जा रहा है। वह इन्द्रियों का दास बनकर भोग के साधनों को ही सर्वस्व मानकर व्यर्थ मानव जीवन को गंवा रहा है। वेदोक्त पथ तजने के कारण न तो वह स्वयं के विलक्षण मानव जीवन की महत्ता तथा न उसकी उपयोगिता समझ पा रहा है, ना ही परमपिता परमात्मा के यथार्थ स्वरूप को समझ पा रहा है और अज्ञानता के वशीभूत उन्हीं गलतियों को दोहरा रहा है जिससे हम पतन की गहरी खाईं में गिरे और पराधिनता का दारुण दुःख भोगा। वह उस अजन्मे निराकार, अजर-अमर परमात्मा की मूर्ति पूजा तक ही सीमित न रहकर लाखों-करोड़ों के **शेष भाग पृष्ठ १८ पर**

आर्य जगत् क्षितिज के दैदिप्यमान नक्षत्र, सिद्धहस्त लेखक, वैदिक मिशनरी, आर्य समाज की सेवा और साहित्य साधना में जीवन होम उन विभूतियों में महत्वपूर्ण स्थान पर विराजमान हैं-

स्वनाम धन्य पण्डित गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

दृढ़ तेजस्वी संघर्षी उदीयमान कर्मठ लेखक ६ सितम्बर सन् १८८१ को उत्पन्न यह सुयोग्य तेजस्वी पुरुष १० वर्ष की अल्पआयु में ही दृढ़ संकल्पी पूज्या माता गोविन्दी जी द्वारा पालिक पोषित संवर्धित पूज्य पिता श्री कुंजबिहारीलाल जी २८ वर्ष की आयु में ही दिवगंत। पूज्यामाताजी ने ही पालन-पोषण संवर्धन के दायित्व का निर्वाह किया।

६ मील दूर पाठशाला में जाकर पढ़ते थे, १४ वर्ष की आयु में ही यह तेजस्वी बालक मीडिल का परीक्षा में प्रान्तभर में चौथे नम्बर पर रहे। फारसी, उर्दू साहित्य में विशेष अभिरुचि रखते थे। गणित हिन्दी भाषा का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इसी काल में शिक्षा सम्बन्धी व्यवधान एवं आर्थिक संकट आते रहे।

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रभाव

महर्षि स्वामी दयानन्दजी महाराज के अमरग्रन्थ के अध्ययन का प्रभाव यह रहा कि यह नक्षत्र आर्य समाज संगठन से जुड़ गया। कठोर वृत्ति अपूर्व तेजस्वी बनने की दृढ़ इच्छा से वैदिक आश्रम अलीगढ़ चले गए। आजीवन वृती रहने का मन बनाया। आश्रम में आर्य कुमार सभा संगठन बनाया। आर्थ समाजों के साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिकोत्सवों में भाग लेना सारगार्भित भाषण देना प्रारम्भ किया। इतनी विलक्षण देवी प्रतिभा विद्वता से प्रभावित होकर इनको आर्य समाजों के कार्यक्रमों के आमंत्रण आने लगे। यह प्रचार और अर्थ प्राप्ति का भी साधन बना। आदर्श उद्देश्य सुदृढ़ संकल्पी बना रहा। इसी क्रम में आर्य समाज के प्रान्तीय संगठन से जुड़ गए।

सिद्धहस्त लेखक

मान्यवर पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एक सिद्धहस्त लेखक थे। अद्योहस्ताक्षरी हरिश्चन्द्र आर्य का विवाह संस्कार मदन ग्राम में जाकर उन्होंने ही कराया था। उस समय बारात तीन दिन रुकती थी। मुझसे कहा कि हरिशचन्द्र एक काम करो मेरी मेज, कुर्सी और चारपाई आम के बाग में डालो। एक दस्ता लाइनदार कागज या २ लाइनदार कापी मेरे पास रखो। आवश्यक सामान सहित ऐसा ही किया गया। मैंने बाग में जाकर देखा- सम्माननीय उपाध्याय जी अपने लेखन कार्य में संलग्न थे। उन्होंने एक पूरी पुस्तक ही लिख दी। कालान्तर में वह मुद्रित हुई।

मान्यवर उपाध्याय जी को पुस्तकें लिखने का एक अपूर्व शौक था। उनकी लेखनशैली स्मृति अपूर्व थी। आस्तिकवाद, अद्वैतवाद, सर्वदर्शन, सिद्धान्त संग्रह, शतपथ अनुवाद, शंकर भाष्य आलोचन, सनातन धर्म आर्य समाज, मनुस्मृति-भूमिका तथा भाष्य, जीवन चक्र, धर्म सुधा सार आर्योदय काव्यम इत्यादि अनेक पुस्तकें, सैकड़ों ट्रैक्ट जो कला प्रेस ने प्रकाशित किए।

आर्य समाज संगठन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली, आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तरप्रदेश लखनऊ के मान्य अधिकारी पदों को सुशोभित किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के सभापति रहे।

विदेश यात्रा

माननीय गंगाप्रसाद जी उपाध्याय महोदय ने अपने जीवनकाल में नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, मोम्वासा, डरबन, फिनिक्स, जोहानिसबर्ग, कैपटाउन, यूटंनटेरा इत्यादि की यात्रा की। उपदेशों का क्रम जारी रहा। उपाध्याय जी का साहित्य ही उनका सर्वश्रेष्ठ स्मारक है। उनकी जैसी कर्मठ, गतिशील, संगठनकर्ता, विचारक युगों-युगों में मानव समाज को प्राप्त होते हैं।●

उदार नेता यशस्वी समाज सुधारक- ईश्वरचन्द जी विद्या सागर

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का जीवन मानव सेवा और कर्मठता का संगम। इनके इन्हीं गुणों के कारण लोग आज भी इन्हें श्रद्धा से सिर झुकाते हैं। ईश्वरचन्द विद्या सागर के विषय में बंगाल के प्रसिद्ध कवि माईकेल मधुसूदन दत्त ने लिखा है-

उनमें प्राचीन भारतीय मनीषी का ज्ञान था एक अंग्रेज की सी फुर्ती थी और एक बंगाली मां का हृदय था। एक अन्य विद्वान ने लिखा है-**वे विद्या के सागर तो थे ही करुणा दया के भी सागर थे।**

जीवन मानवता सेवा-कर्मठता का संगम था

शिक्षा के क्षेत्र में- भारत की महिलाएं ईश्वरचन्द्र जी की ऋणी हैं, क्योंकि उन्होंने उनकी दशा में सुधार किया। बंगाल में उस समय लड़कियों के लिए विद्यालय नहीं थे। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्त्री शिक्षा के महत्व को समझते थे और देश की उन्नति के लिए उसे अत्यन्त आवश्यक मानते थे। उन्होंने १८५७-१८५८ में ३५ बालिका विद्यालय खुलवाये, जिनमें औसत उपस्थिति १३० थी। पुराने विचारों के लोगों ने इसका विरोध किया, आपने धर्मशास्त्र की वह प्रसिद्ध उक्ति बालिकाओं को स्कूल ले जाने वाली गाड़ी पर लिखवा दी जिसका अर्थ यह था- पुत्रों के समान पुत्रियों को भी शिक्षा पाने का पूरा अधिकार है। समाज में आर्थिक दृष्टि सम्पन्न और कुलीन फिर स्त्री शिक्षा का विरोध न कर सके।

कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम.ए. पास करने वाली पहली छात्रा चन्द्रमुखी बोस को उन्होंने समारोहपूर्वक पुरस्कृत किया।

विधवा विवाह : बंगाल में उस समय एक कुलीन पुरुष कई विवाह कर लेता था, ईश्वरचन्द्रजी ने ऐसे लोग भी देखे जिनकी ५० या अधिक पत्नियां थी। पति की मृत्यु के पश्चात् इन विधवाओं को जीते जी नरक का सा जीवन बिताना पड़ता था। सिर मुंडाकर सफेद कपड़े पहन कर और रुखा-सूखा खाकर उन्हें अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता था। किसी भी शुभ कार्य के समय इनको देखना अशुभ माना जाता था। कहते हैं कि एक बार पड़ोस में एक विधवा के प्रति समाज के व्यवहार को देखकर विद्या सागर का किशोर मन रो उठा। उन्होंने अल्पायु और संतानहीन विधवाओं की दशा सुधारने का संकल्प लिया। इसके लिए उदारचेता विद्या सागर को बहुत विरोध सहना पड़ा, लेकिन वह सत्य और न्याय के प्रति लड़ते रहे, संघर्षरत रहे। इसका फल यह हुआ- बंगाल ही नहीं अपितु अन्य प्रान्तों में भी विधवाओं के विवाह होने प्रारम्भ हो गए।

आदर्श- स्वयं अपने पुत्र नारायण का विवाह एक विधवा से किया- विद्या सागरजी के प्रयत्नों से १८ जुलाई १८५६ में विधवा विवाह कानून पास हुआ और इस प्रकार के विवाहों को वैधानिक स्वीकृति मिल गई।

७ दिसम्बर १८५६ का दिन भारतीय महिला समाज के लिए सुधार की दृष्टि से स्मरणीय है। इस दिन बंगाल के चौबीस परगना जिले में पहला विधवा विवाह सम्पन्न हुआ। दूल्हा थे श्रीशचन्द्र विद्यारत्न और दुल्हन थी कालीमती देवी जो १०वर्ष की अवस्था में ही विधवा हो गई थी। ईश्वरचन्द्र विद्या सागर ने पुरुषों द्वारा बहुविवाह करने का भी घोर विरोध किया। उन्होंने उदार एवं सुधारवादी विचार रखने वाले पुरुषों का एक सक्रिय संघ बनाना और कुलीन ब्राह्मणों द्वारा अनेक विवाह करने के विरोध में जोरदार आन्दोलन चलाया उनके प्रयत्नों से इस दिशा में बहुत सुधार हुआ।

बाल विवाह का भी उन्होंने घोर विरोध किया। उन दिनों छोटी अवस्था में ही बालिकाओं का विवाह कर दिया जाता था। जिससे उनके जीवन का समुचित विकास नहीं हो पाता था।

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने ईश्वरचन्द्र विद्या सागर को आधुनिक बंगाली राज का जनक कहा है। बंगला भाषा को साहित्यिक रूप देना विद्या सागर जी का कार्य था। मानवता पोषक परम, जिनकी आत्मिक शक्ति, आदर्शोन्मुख चरित्र पर सिर झुकाता था हर व्यक्ति।

- हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता-उपदेश विभाग, अमरोहा (उ.प्र.)
दूरभाष- ०५०२२-२६३४२२

गुरु नानकदेव

- शिवनारायण उपाध्याय -
७३, शास्त्री नगर, दादावाड़ी, कोटा, (राज)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

सिक्ख धर्म के प्रवर्तक गुरु नानकदेव का जन्म १५ अप्रैल १४६९ (वैशाख सुदी ३ संवत् १५२६ वि.) के दिन तलवण्डी नामक स्थान में हुआ था। परन्तु सुविधा की दृष्टि से गुरु नानकदेव की जन्म तिथि कार्तिक पूर्णिमा को मनाई जाती है। तलवण्डी लाहौर जिले में लाहौर से ३० मील दक्षिण पश्चिम में है। इनके जन्म लेते समय की विशेषता यह थी कि जब सभी शिशु जन्म लेते समय रोते हैं जब नानकदेव के चेहरे पर मुस्कान थी। इनके पिता का नाम कालूचन्द्र वेदी था और वे पटवारी के पद पर नियुक्त थे।

जब नानक सात वर्ष के हुए तब उन्हें गोपाल नाम के अध्यापक के पास भेज दिया गया। बालक नानक ने गुरु से कहा कि मुझे वह विद्या पढ़ावे जिससे मैं परमात्मा को जान सकूं। सब कुछ जान कर क्या करना है? उस एक के जान लेने से सब कुछ जान लिया जाता है। अध्यापक कोई उत्तर नहीं दे सका। इस प्रकार नानक विद्यालय की दीवारों में बंध नहीं सका।

इस पर पिता ने उन्हें जानवरों को जंगल में जाकर चराने का काम सौंप दिया। ये जानवरों को लेकर जंगल में गए। जानवरों को चरने को छोड़ दिया और आप ईश्वर के ध्यान में बैठ गए। जानवर पास के एक खेत में जाकर फसल को चरने लग गए। जब खेत का मालिक वहां आया और अपनी सारी फसल को नष्ट हुई देखी तो बड़ा क्रोधित हुआ। जाकर इनके पिता से शिकायत की। नानक को बुलाया गया। नानक ने कहा सब ईश्वर की इच्छा से हो रहा है। इसी ने जानवर भेजे इसी ने फसल उगाई। एक बार उगाई तो दुबारा भी उगा सकता है। मुझे नहीं लगता कि कोई नुकसान हुआ है। सबने खेत पर जाने का निश्चय किया। वहां जाकर देखा तो खेत फसल से लहलहा रहा था। नानक को जब यज्ञोपवित देना तय किया। घर में उत्सव मनाया जाने लगा तो नानक ने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा जो खुद ही टूट जाता है। बाजार में दो पैसे में मिलता है, उससे परमात्मा की खोज कैसे होगी? मुझे ऐसी जनेऊ चाहिए जिसके लिए दया की कपास हो। संतोष का सूत हो। संयम की गांठ हो। सत्य की पूरन हो। यही जीवन के लिए आध्यात्मिक जनेऊ है। पण्डित तुम्हारे पास ऐसी जनेऊ हो तो पहिना दो। पिता ने सोचा कि आलसी और निकम्मा है, न कुछ काम करता है, न कुछ कमाता है, बेकार घूमता रहता है । तय किया कि इसे खेती पर काम करने लगा दो। नानक ने खेती करने से मना कर दिया। फिर पिता ने बहुत सोच समझ कर नानक को किसी व्यापार में लगाने का निश्चय किया। उनके लिए एक दुकान खुलवा दी। पिता ने नानक को बीस रुपए दिए और कहा कि लाहौर जाओ और दुकान के लिए कुछ सौदा खरीद कर ले आओ। सौदा ऐसा लाना जिससे हमें लाभ हो। नानक रुपए लेकर चल दिए। रास्ते में एक जंगल पड़ता था। वहां कुछ साधुओं ने डेरा डाल रखा था। नानक ने रुककर साधुओं को प्रणाम किया। साधु कई दिन से भूखे थे। साधुओं ने नानक को खड़े देखा तो बोले- 'बच्चा' हम कई दिन से भूखे हैं। कुछ दाना पानी की व्यवस्था कर दो। भूखों को भोजन कराने से बड़ा लाभ होता है।

नानक तो लाभ कमाने की ही निकले थे। नानक बोले- 'चलिए गांव की ओर चलते हैं।'

वहीं आपके लिए भोजन का प्रबन्ध हो जाएगा। साधुओं ने पेटभर भोजन किया और नानक को आशीर्वाद दिया। नानक खुले हाथ घर लौट आए। पिता ने पूछा, क्या खरीद कर लाए हो? नानक ने सारी बात विस्तार से बता दी। पिता बड़े क्रोधित हुए। नानक के बहनोई ने सुल्तानपुर में शाही भण्डार की देखरेख का काम नानक को दिलवा दिया। वहां भी उन्होंने भण्डार का सारा अनाज लगभग मुफ्त में ही बेच दिया। फिर मरघट में डेरा जा लगाया। पिता ने सोचा कि इसका विवाह कर दो। इनके दो पुत्र भी हुए। पहले पुत्र श्रीचन्द का जन्म भाद्रपद सुदी संवत् १५५१ तथा दूसरे पुत्र लक्ष्मीदास का जन्म १९ फाल्गुन सवंत् १५५३ को हुआ। ग्रहस्थ में रहकर भी नानक संन्यासी ही रहे अधिक समय समाधि में लीन रहते थे। फिर इन्होंने घर छोड़ने का निश्चय कर लिया। माता-पिता, सास-ससुर सभी ने समझाया पर वे नहीं डिगे। उन दिनों संसार नाना प्रकार के आडम्बरों से भरा हुआ था। धर्मान्धता का बोलबाला था। पण्डित और मौलवी भोली-भाली प्रजा को लूट रहे थे। नानक ने उनके विरुद्ध लोगों को समझाने का प्रयत्न किया। इनके साथ एक व्यक्ति और था जिसका नाम मरदाना था। इन दोनों का आजीवन साथ रहा। ज्ञानी लोग किसी सम्प्रदाय में फंसे नहीं रहते हैं। नानक भी ज्ञानी थे। एक बार वे एक मुस्लिम नवाब के घर पर अतिथि बन कर गए। नवाब ने उनसे कहा, यदि आप हिन्दू-मुसलमान में कोई भेद नहीं मानते तो हमारे साथ नमाज पढ़ने चलो। नानक ने कहा अगर तुम पढ़ोगे तो हम भी पढ़ेंगे। नमाज पढ़ी गई। नवाब सजदे में झुक गया, किन्तु नानक वैसे ही खड़े रहे। नवाब ने चार-पांच बार देखा नानक न तो झुके और न नमाज पढ़ी, नवाब ने जल्दी-जल्दी नमाज पूरी की। दूसरे लोगों ने भी नमाज पूरी कर ली। नवाब ने नानक से कहा, तुम धोखेबाज हो। 'कैसे साधु' तुमने नमाज पढ़ने का वचन दिया था, परन्तु नमाज नहीं पढ़ी। नानक ने कहा मैंने कहा था कि तुम नमाज पढ़ोगे तो मैं भी पढ़ूंगा। जब आपने ही नमाज नहीं पढ़ी है तो मैं कैसे पढ़ता। नवाब ने कहा मैंने नमाज पढ़ी है इतने लोग गवाह हैं। नानक ने कहा, आप तो काबुल में घोड़े बेच रहे थे। नवाब थोड़ा हैरान हुआ। फिर कहा और यह मौलवी जो नमाज पढ़ रहा था। नानक ने कहा यह तो खड़ा हुआ अपनी फसल काट रहा था। बात सही थी। दोनों शर्म में पड़ गए।

गुरु नानक देव गरीब मजदूर की दी गई रोटी को महत्व देते थे और जमींदारों अथवा व्यापारियों की रोटी की उपेक्षा करते थे। एक बार उनके पास एक गरीब मजदूर और एक जमींदार के यहां से एक साथ भोजन आया, जमींदार ने कहा, महाराज। मेरा भोजन खाइए, यह स्वास्थ्यप्रद रहेगा। नानक ने कहा, जो भोजन अच्छा होगा, वही खाऊंगा। वे मजदूर की रोटियां खाने लग गए। जमींदार के पूछने पर कि उसका दिया भी भोजन क्यों नहीं खाया। उन्होंने मजदूर की रोटी को दबा कर दिखाया। उसमें से दूध की धारा निकल पड़ी, फिर जमींदार की रोटी को दबाया तो उसमें रक्त की धारा बहने लगी। घटना अतिरंजित है, केवल उनका कहना था कि किसान की रोटी ईमानदारी के कमाए गए धन से बनी है, जबकि जमींदार का धन शोषण से प्राप्त हुआ है।

एक बार हरिद्वार गंगा में स्नान करने गए। उन्होंने देखा कि हिन्दू लोग स्नान करके पूर्व दिशा में सूर्य को अर्ध दे रहे हैं तो आप पश्चिम दिशा में जल छोड़ने लग गए। हिन्दुओं ने पूछा कि यह क्या कर रहे हो? तो कहा कि अपने खेतों की सिंचाई कर रहा हूं। लोग हंसने लगे नानक ने पूछा आप पूर्व में जल किसे दे रहे थे? लोगों ने कहा हम तो सूर्य को जल दे रहे थे। तब नानक ने कहा कि सूर्य तो यहां से करोड़ों मील दूर है जब आपका दिया हुआ जल वहां पहुंच सकता है तो मेरे खेत तो केवल दो सौ मील दूर हैं, वहां जल क्यों नहीं पहुंचेगा? इस पर सब निरुत्तर हो गए। गुरु नानक देव के साथ ऐसे कई किस्से हैं उन्हें छोड़ कर हम संक्षेप में उनकी मान्यता बताते हैं।

वह परमात्मा आदि में सत्य रूप में था, वर्तमान काल में भी वह सत्य है और भविष्य काल में भी वह सत्य ही रहेगा।

परमात्मा न तो स्थापित किया जा सकता है, न निर्मित किया जा सकता है। वह निरंजन स्वयं में ही सब कुछ है। उसी का भजन करो, श्रवण करो, उसका ही भाव मन में रखो। इससे तुम दुःख से छूट जाओगे और सुख घर ले आओगे। गुरुवाणी ही नाद है, गुरुवाणी ही वेद है, गुरु ही शिव, गुरु ही विष्णु और गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही मां पार्वती भी है। श्रवण अर्थात् गुरु-उपदेश से कोई भी सिद्ध, देवता और इन्द्र हो जाता है। श्रवण से ही दुख का, पाप का नाश हो जाता है। श्रवण से ही श्रेष्ठ गुणों की थाह मिलती है। श्रवण से ही शेख, पीर और बादशाह होते हैं, श्रवण से ही अंधे राह पा जाते हैं। मनन की गति कही नहीं जा सकती। जो इसे कहता है यह पीछे पछताता है। न कलम है, न कागज है, न लिखने वाला है जो मनन करता है उसका मन ही जानता है।

वह प्रभु प्रत्येक लोक में आसन लगाकर विराजमान है। प्रत्येक लोक में उसका भण्डार है। उसने एक बार ही सदा के लिए पाने योग्य सब कुछ उसमें रख दिया है।

परमात्मा ने ही संसार की रचना की है। परमात्मा ने रात्रि, ऋतुओं तिथियों, वार, पवन, जल, अग्नि, पाताल की रचना की है। इन सबके बीच पृथ्वी को धर्मशाला के समान स्थापित किया है। इसी प्रकार सरल शब्दों में उपदेश देने का कारण सिक्ख धर्म पंजाब में लोकप्रिय हो गया। उनके उपदेशों में कर्मकाण्ड का कोई स्थान नहीं था। सत्तर वर्ष की साधना के बाद सन १५३९ में उनका शरीरान्त हो गया।●

२१वां सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

दिनांक- ६ से ८ अक्टूबर २०१८ तक

आपको ज्ञात ही होगा कि राजस्थान प्रान्त का उदयपुर नगर एक अति मनोरम नगर है। **यहीं पर स्थित 'नवलखा महल' कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली है।** १९९२ में यह आर्य समाज को हस्तगत हुआ था। तब से अब तक प्रभु कृपा से, भगीरथ पुरुषार्थ तथा आप लोगों के स्नेह से यह एक सुन्दर स्मारक बन चुका है, जिसके दर्शनार्थ लगभग ३०००० (तीस हजार) पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। यहां प्रतिवर्ष आयोज्य सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव भी आर्य जगत् में विशिष्ट स्थान रखते हैं। इसी में पधारने हेतु यह अग्रिम अनुरोध है। मानस बनावें इष्ट मित्रों, परिवारजनों के साथ आने का। पर्यटन तथा धर्मलाभ साथ-साथ हो जाएगा। इस निवेदन को आप अन्यों को भी अवगत करवाएंगे तो प्रसन्नता होगी।

निवेदक-**श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास**
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर- राजस्थान
दूरभाष-०२९४-२४१७६९४, ७२२९९४८८६०, ९३१४२३५१०१

"गीता आर्य समाजी हो गई"

- स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
कुलाधिपति-गुरुकुल प्रभात आश्रम
टीकरी, भोला-झाल, मेरठ (उ.प्र.)
दूरभाष- ०९७५८७४७९२०

प्रबुद्ध-सुधी पाठकों को यह शीर्षक आश्चर्यचकित करने वाला प्रतीत होगा, किन्तु यह शीर्षक बहुत पुराना है। जब पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर पधारे हुए थे, प्रात:काल गंगा के तट पर बैठकर तन्मयता से वे गीता का पाठ (पारायण) कर रहे थे। इस दृश्य को देखकर एक पौराणिक व्यक्ति जो पूज्य स्वामी (समर्पणान्द) जी को पहचानते थे, उन्होंने अपने एक आर्य समाजी मित्र को संकेत करते हुए कहा कि- जादू वह जो सिर पर चढ़ कर बोले, देखो तुम्हारे आर्य समाज के धुरन्धर विद्वान भी कितनी तन्मयता से गीता का पाठ कर रहे हैं। वह आर्य समाजी पण्डित जी को गीता का पाठ करते हुए देखकर स्तब्ध रह गया और वह इतना विचलित हो गया कि पाठ करते हुए ही श्री पण्डित जी के निकट जाकर उनसे कहने लगा कि- क्या पण्डित जी आप पौराणिक हो गए? पण्डित जी ने तत्काल उससे पूछा कि- तुमको किसने कह दिया कि मैं पौराणिक हो गया? तब प्रश्नकर्ता ने कहा कि- यह तो प्रत्यक्ष ही है कि आप वेद, सत्यार्थ प्रकाश आदि का पाठ न करके गीता का इतनी तन्मयता से पाठ कर रहे हैं। तो गीता का पाठ करने मात्र से तुम्हारी दृष्टि में मैं पौराणिक हो गया, तुम्हें ज्ञात नहीं गीता आर्य समाजी हो गई है, क्योंकि इसका पाठ बुद्धदेव कर रहा है।' प्रश्नकर्ता महोदय अट्टहास करने लगे और उनके पौराणिक मित्र पर जो आघात हुआ उससे वे अति लज्जित हुए।

इस घटना को लिखने का तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार से पण्डित जी ने शतपथ ब्राह्मण के उद्धार का बीड़ा उठाया था, उसी प्रकार से उन्होंने गीता के उद्धार का भी संकल्प लिया था और उनका नियम था कि- '**जब तक मैं गीता की वैदिक व्याख्या नहीं लिख लूंगा, तब तक इसका प्रतिदिन पाठ करता रहूंगा।**'' इसकी सत्यापना माता शकुन्तला गोयल (मेरठ) जो एक सुप्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं आर्य समाज की कार्यकत्री थीं, जो सन् १९५१ में मेरठ में सम्पन्न होने वाले सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन की स्वागताध्यक्ष तथा मॉरिशस में होने वाले आर्य महिला सम्मेलन की अध्यक्षा भी थी, उन्होंने बताया कि - जब भी कभी पण्डित जी मेरठ कार्यक्रम में आते थे तो हमारा घर ही उनका आवास होता था। मैंने उनको तीन बजे प्रातः उठकर गीता का पाठ करते हुए बहुधा देखा है। ' सन् १९६४ में जब गीता-भाष्य पूर्ण हो गया तभी उन्होंने अपने नियमित गीतापाठ के क्रम का परित्याग किया।

गीता पर अनेक भाष्य हुए। आद्य शंकराचार्य जी महाराज के भाष्य से पहले भी गीता पर अनेक भाष्य थे, इनका ज्ञान हमें श्री आचार्य जी के भाष्य से ही होता है, किन्तु आश्चर्य है कि आचार्य जी के भाष्य से पूर्ववर्ती भाष्य हमें उपलब्ध नहीं होते। पूज्य स्वामीजी ने भी मल्लिनाथ के भाव को जो उन्होंने महाकवि कालिदास के टीकाकारों पर बिगड़ते हुए लिखा है-

भारती कालिदासस्य दुर्व्याख्या विषमूर्च्छिता।
एषा संजीवनी टीका तामद्योज्जीवयिष्यति।।

इन्हीं भावों से ओत-प्रोत लिखा है कि- 'गीता के जितने भी अपभाष्य हुए हैं, उनका समाधान करते हुए मैं यह भाष्य लिख रहा हूं।'

अस्तु जब स्वामी जी ने गीता के आर्य समाजी होने का डिण्डिम घोष किया तो आर्य पुरुषों की जिज्ञासा वृद्धि को प्राप्त हुई कि 'अन्ततः वे कौन-सी पंक्तियां हैं, जिनका पण्डित जी ने वैदिक अर्थ किया है।' तो हम उद्धत कर रहे हैं। उनके प्रथमाध्याय की व्याख्या का एक स्थल- ''महाभारत का युद्ध भारत के इतिहास की एक सच्ची घटना है, कपोल-कल्पना नहीं। उस घटना का प्रयोग महाकवि वेदव्यास जी ने मनुष्य को धर्म का सच्चा स्वरूप दिखाने के लिए अपने काव्य में किया है और दैवी सम्पत्ति की सेना के संचालन का स्वरूप योगिराज कृष्ण को दिया है। भाव कृष्ण वार्ष्णेय के शब्द कृष्ण द्वैपायन के, घटना इतिहास की। ''**अहो लोकोत्तरः संगमः।**'' यहां इन तीन-चार पंक्तियों के द्वारा ही पण्डित जी ने गीता को अनैतिहासिक कहने वालों के दुर्ग को ध्वस्त कर दिया, अन्यथा आधुनिक गीता के व्याख्याता तो अपनी मनमानी, मिथ्याकल्पना करते रहते थे। अब गीता के जो श्लोक पौराणिकता की पुष्टि में उद्धत किए जाते थे-

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत।। १.४०

इसका अर्थ करते हुए तथा उसकी विशेष ख्याख्या करते हुए श्री पण्डित जी ने लिखा है- ''उत्तम कुलों के क्षय हो जाने पर कुल-परम्पराएं नष्ट हो जाती हैं, और उन परम्पराओं के नष्ट होने पर अधर्म सम्पूर्ण कुल को दबा लेता है। (विशेष व्याख्या) हर उत्तम कुल की कुछ पवित्र परम्पराएं और एक न एक लोक-कल्याणकारी संकल्प होता है जो हर संकट में उन्हें बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए प्रेरित करता है। ये सब कुल-धर्म कहलाते हैं, किन्तु कुल के नेताओं के मारे जाने पर ये सनातन कुल धर्म नष्ट हो जाते हैं। धर्म के नष्ट होने पर जब उस कुल के सदस्यों के सामने बलिदान के लिए प्रेरणा देने वाला कोई लक्ष्य नहीं रहता तो सारे कुल में स्वार्थ और आपाधापी का बोलबाला हो जाता है और अधर्म सारे कुल को दबा लेता है।'

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः।। १.४१

हे कृष्ण! अधर्म के अधिक बढ़ जाने पर कुल की स्त्रियां दूषित हो जाती हैं। हे वार्ष्णेय! स्त्रियों के दूषित हो जाने पर वर्णशंकर उत्पन्न होता है। (विशेष व्याख्या) हे कृष्ण! इस संसार में धर्म तथा उच्च भावनाओं

का अन्तिम दुर्ग 'स्त्री हृदय' है, किन्तु जब चारों और अधर्म का बोलबाला हो जाता है तो यह अन्तिम दुर्ग भी टूट जाता है। एक तो चुनाव का क्षेत्र संकुचित हो जाने से विवाह भी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार नहीं हो पाते और गुप्त व्यभिचार भी बहुत फैल जाता है, तो चारों और स्त्रियों के दूषित हो जाने से हे वार्ष्णेय! वर्णसंकर फैल जाता है।

संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्योषां लुप्तपिण्डोदकक्रिया:।।१.४२

जहां वर्णसंकर विवाह होता है, अथवा व्याभिचार होता है, वहां पुरस्पर गुण, कर्म, स्वभाव न मिलने से कुल नरक बन जाता है और इस प्रकार के कुलघाती और वह कुल जहां इस प्रकार के लोग हों, नरक जीवन बनाने के लिए ही साधन करते हैं और जब युद्ध में जवान लोग मारे जाते हैं तो बूढ़े लोगों को आपातकाल में वानप्रस्थाश्रम छोड़कर घर सम्भालना पड़ता है तथा जीवन भर की सैनिक वृत्ति छोड़कर लकड़ियों का टाल खोलने जैसा कार्य करना पड़ता है। इस प्रकार से वर्ण और आश्रम दोनों ओर से पतित होते हैं, क्योंकि उन बूढ़ों और छोटे बच्चों को पिण्ड तथा उदक अर्थात् अन्न और जल देने वाला कोई नहीं रहता। यहां आपने गीता के पिण्ड दान के समर्थक श्लोकों की व्याख्या पण्डित जी द्वारा की हुई पढ़ी।

अब गीता के वे गूढ़ स्थल जिनकी कि पूर्ववर्ती आचार्यों ने तथा परवर्ती हिन्दी के गीता व्याख्याकारों ने व्याख्या की है, वह अनावश्यक, अतिविस्तृत, खींचातानी से परिपूर्ण तथा अप्रासंगिक है। उसकी व्याख्या पण्डित जी के द्वारा लिखी हुई देखें-

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मण:।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गति:।।४.१७

मनुष्य को कर्म का भी ज्ञान प्राप्त करना है। जैसे-क्षत्रिय का धर्म है आततायी को मारना, यह कर्म का ज्ञान है। विकर्म को भी जानना है, जैसे- कोई पागल, आततायी हो जाए तो उसको बांधना तथा चिकित्सा करनी, किन्तु प्राण दण्ड नहीं देना, किन्तु यदि भूल से उसे प्राण दण्ड दे दिया तो यह विकर्म हुआ। इस विकर्म अर्थात् विपरीत कर्म का भी ज्ञान होना चाहिए। फिर अकर्म का भी ज्ञान होना चाहिए। यदि कोई आलस्यवश अकर्मण्य होकर पड़ रहा है तो यह अनुचित अकर्मण्यता है, किन्तु कोई मनुष्य क्षमा करने से सुधार करता है तो उसे दण्ड न देना शुभ अकर्मण्यता है। इसका ज्ञान अकर्म का ज्ञान है। कर्म, अकर्म तथा विकर्म इन तीनों का ज्ञान ठीक-ठीक होना चाहिए। इस प्रकार कर्म, अकर्म तथा विकर्म तीनों का यथार्थ ज्ञान होने से कल्याण होता है। इस कर्म की गति का ठीक ज्ञान होना बड़ा कठिन है। इसीलिए कहा- '**गहना कर्मणो गति:**।

कर्मण्यकर्म य: पश्येदकर्मणि च कर्म य:।
स बुद्धिमान् मनुष्येषु स युक्त: कृत्स्नकर्मकृत् । ४.१८

हर शुभ कर्म किसी अवस्था-विशेष में अशुभ कर्म हो जाता है। उदाहरणार्थ- यदि कोई सिपाही राष्ट्र के किसी दुर्ग की अथवा नाके की रक्षार्थ पहरा दे रहा हो तो उस समय संध्योपासना की वेला प्राप्त होने पर सिपाही का संध्योपासना में लीन हो जाना घोर अशुभ है, सो इस कर्म में कब अकर्मता आ गई यह जो जानता है तथा अकर्म में कर्म को जानता है। जैसे शत्रु अपनी रक्षा के लिए गौवें आगे करके राष्ट्र का नाश करने आवे तो उस समय गोहत्या अशुभ कर्म में कर्त्तव्य अर्थात् शुभ-कर्मत्व आ जाता है। जैसे-अर्जुन के लिए अन्याय का पक्ष लेकर सामने आए गुरु तथा पितामह का वध अकर्म में कर्म हुआ। जो उस तत्व को देख ले वही मनुष्यों में बुद्धिमान मनुष्य है। उसे ही युक्तियुक्त मनुष्य समझना और वह पूर्ण कार्य करता है, क्योंकि उसने कर्म के पूरे रूप को उत्सर्गापवाद दोनों को जान लिया।

यस्य सर्वे समारम्भा: कामसंकल्पवर्जिता:।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहु: पण्डितं बुधा:।।४.१९

हे अर्जुन! मनुष्य को कर्म से अकर्म में तथा अकर्म से कर्म में आसक्ति घसीट ले जाती है। राष्ट्र पर शत्रुओं के आक्रमण होने पर शत्रु की ढाल बनी हुई गौवों को मारना यद्यपि देखने में अकर्म है, किन्तु वास्तव में भविष्य में आने वाले लाखों गो-भक्तों और गौवों के वध के बचाने का साधन होने के कारण वह प्रत्यक्ष अकर्म गोवध वास्तव में कर्म है, किन्तु यह बात गोरक्षा में आसक्त होने वाले को नहीं सूझती। इसलिए जिस मनुष्य के सम्पूर्ण कार्यारम्भ काम संकल्प अर्थात् व्यक्तिगत सुख-दु:ख की कामना के संकल्प से वर्जित होते हैं उसे यह यथार्थ ज्ञान हो जाता है कि जो कर्त्तव्य दीखता है, वह कब परित्याज्य है? और जो कर्म अकर्त्तव्य दीखता है, वह कब किन अवस्थाओं में ग्राह्य है? इसलिए उसके कर्मों में फलाशक्ति का अंश यथार्थ- ज्ञानरूपी अग्नि से जलकर भस्म हो जाता है और वह हर कर्म को विवेकयुक्त सीमा तक करता है। इस प्रकार के ज्ञानाग्निदग्ध-कर्मा मनुष्य को बुद्धिमान लोग पण्डित कहते हैं।

कुछ और विवादस्पद श्लोकों के भी अर्थ जिसका वैदिक भाष्य पूज्य पण्डित जी ने किया है, इसका भी एक निदर्शन स्वरूप लीजिए-

अग्निर्ज्योतिरह: शुक्ल: षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जना:।।८.२४

जिस प्रकार सृष्टि तथा प्रलय को ब्रह्म-दिन तथा ब्रह्म-रात्रि का नाम दिया है इसी प्रकार मनुष्य जीवन को एक वर्ष मान लें तो यौवन तक उसका शुक्ल पक्ष है तथा वृद्धावस्था के आरम्भ से रात्रि है तथा मृत्यु अमावस्या है। इसी प्रकार जब उसके हृदय में प्रभु का प्रेम तथा ज्ञान का प्रकाश हो, वीर्य की ज्ञानाग्नि में आहुति होती हो, वह दिन है तथा जब उसकी कामेच्छा अथवा शयनेच्छा जागती हो, वह रात्रि है। जीवन भर जितना समय उसने उन्नति की ओर जागने में लगाया हो, वह उसका उत्+तर+अयन है तथा जब वह नानाविध भोगादि समृद्धि की ओर जाता हो, वह सकाम जीवन का काल दक्षिणायन है। हो सकता है बहुत से मनुष्यों में उत्तरायण कभी आता ही न हो, परन्तु ये दो परिभाषाएं हैं इन्हें समझने पर ही यह श्लोक समझ में आएगा। अग्नि की ज्वाला सदा ऊपर को उठती है। इसी प्रकार ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैश्यत्व अथवा अन्य भी कोई लोक कल्याणकारी व्रत मनुष्य ने अपने जीवन में लिया है, वह उसे परमात्मा से मिलाता है तथा उसके वीर्य की रक्षा करता है। इस प्रकार वीर्य (स्थूल शरीर का सूर्य), ज्ञान (सूक्ष्म शरीर का सूर्य) तथा परमात्मा (सारे ब्रह्माण्ड का सूर्य) इन तीनों की ओर ले जाने वाली आग जब किसी के हृदय में दहक रही हो, वह अग्निज्योति का काल है। उसके

अन्दर जब ज्ञान का प्रकाश हो वह दिन का समय है। युवावस्था वाली स्वास्थ्य-सम्पत्ति हो (चाहे आयु कुछ भी हो) वह शुक्ल पक्ष है। मन में ऊंचे से ऊंचा और अधिक ऊंचा उठने का दृढ़ संकल्प हो वह उत्तरायण काल है। इस काल में मृत्यु को प्राप्त हुए ब्रह्मवित् जन ब्रह्मा के पास जाते हैं। दूसरी ओर धुँआ यद्यपि आग की गर्मी तथा वायु के वेग से ऊपर उठता है तथापि शनैः शनैः नीचे आकर किसी वस्तु पर जम जाता है। इस प्रकार आलस्यमयी तमोवृत्ति, आराम-पसंद मनोवृत्ति जो धक्का देने से बड़ी कठिनता से ऊपर उठे, वह धूम है। ऐसी धूमिल ज्योति हो, अज्ञान की रात्रि हो, वृद्धावस्था की चेष्टाहीनता हो (चाहे आयु यौवन की ही हो) अर्थात् कृष्ण पक्ष हो तथा नाना काम-भोग रूप समृद्धि की अभिलाषा बनी हो, वह दक्षिणायन है। उसके लिए कहा-

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।। ८.२५

धूमिल ज्योति हो, रात्रि की वेला हो अर्थात् तमोगुण का प्राबल्य हो, कृष्णपक्ष अर्थात् मन्द स्वास्थ्य का बुढ़ापा हो, तो सूर्यज्योति नहीं, किन्तु चन्द्र-ज्योति प्राप्त हुई। उनकी प्रभु-भक्ति चन्द्रमा के समान कीर्ति, धन आदि अथवा सन्तान की कामना से प्रकाशित है। इसलिए इस दक्षिणायन काल में मृत्यु को प्राप्त योगी फिर कर्त्तव्यपालन से विमुख होकर बारम्बार फिर-फिर साधना करने के लिए विवश होता है। (**पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। ६.४४**) यह आवृत्ति-मार्ग है।

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।।१०.१६

हे कृष्ण! योगविद्या से आत्मा को बहुत विभूतियां प्राप्त होती हैं। वे दिव्य हैं अर्थात् देवाधिदेव भगवान के चिन्तन से प्राप्त होती है आप कहते हैं कि मैंने भी वहीं से पाई है। आप पूर्ण योगी हैं, अपनी योग-विभूति के बल से जिस लोक-लोकान्तर का ज्ञान प्राप्त करना चाहें तुरन्त वहां पहुंचकर जान लेते हैं। उन विभूतियों के भण्डार भगवान का साक्षात् करने से ही वे विभूतियां आपको प्राप्त हुई हैं। सो जिन विभूतियों से वह विश्वव्यापी ज्ञान आपको प्राप्त हुआ है, जिससे आप जिस लोक-लोकान्तर में पहुंचना चाहें पहुंच जाते हैं, उनका वर्णन पूर्ण रूप से मुझे भी करके बताइये।

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे।। १०.१९

हे कुरुश्रेष्ठ! यह तुमने सच कहा-आत्मा को जो विभूति मिलती है, वह दिव्य होती है, अर्थात् देवाधिदेव भगवान की कृपा से मिलती है। पर यह ततो देखो कि उस प्रभु की विभूतियों का तो अन्त ही नहीं, प्रभु की विभूतियों का तो कहना ही क्या! मैंने उस देवाधिदेव से जो विभूतियां पाई हैं उनका विस्तार करने लगूं तो उनका ही अन्त नहीं। इसलिए वह प्रभु मुझे क्या उपदेश करता है? मैं उसे किन विभूतियों में देखता हूं? यह उसके बड़े-बड़े प्रधान गुणों के आधार पर तुझे सुनाता हूं।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।१८.६६

हे अर्जुन! तुझे यह सन्देह कैसे हो गया कि मैं तुझे पाप करने की सलाह भी दे सकता हूं, पाप करने की सलाह देने की बात तो दूर रही, तू निश्चय रख कि तेरे हृदय में कोई पाप वासना उठती होगी तो उसे भी मैं ऊभरने नहीं दूंगा। इसलिए तेरी तो मैं भक्त और सखा होने के कारण व्यक्तिगत रूप से जिम्मेवारी लेता हूं। तू और सब धर्म छोड़कर एक ही धर्म पकड़ ले कि मेरी शरण में आ जा, मैं तुझे सब प्रकार के पाप भावों से (पाप फलों से नहीं) छुड़ा दूंगा। तू दुःख मत मान।

इस प्रकार से गीता के आर्य समाजी होने का स्वामी समर्पणान्द जी के भाष्य से परिलक्षित होता है। विशेष रूप से तो हमारे जिज्ञासु पाठक उनके भाष्य से ही अपनी जिज्ञासा का शमन करने में समर्थ होंगे। मैंने तो उनके १२३वें जन्मदिवस पर एक स्थालीपुलाकन्यायेन परिचयमात्र प्रदान किया है। उनका शतपथ का भाष्य प्रथम-द्वितीय-तृतीय काण्ड तथा उसकी भूमिका के रूप में शतपथ में एक पथ व अद्भुत कुमारसम्भव आदि रचनाएं प्राचीन ऋषियों के वेदव्याख्या के मर्म को उद्घाटित करती हैं। इस अवसर पर हम ऋषि दयानन्द के भाष्यों के कवचरूप में उनके पञ्चयज्ञ प्रकाश, गीताभाष्य, शतपथ-ब्राह्मणभाष्य, ऋग्वेदमण्डलमणिसूत्र एवं कालाकल्प आदि ग्रन्थों का अध्ययन, मनन, चिन्तन करें तो वैदिक साहित्य को समझने में वैदिक आलोक का कार्य करेंगे। ●

पृष्ठ १२ का शेष भाग... आओ जाने...

विशालकाय मन्दिरों, अवैदिक, अधार्मिक, कथाओं, भण्डारों, तीर्थ यात्राओं, सामाजिक रूढ़ियों आदि अनेकानेक आयोजनों में अपने श्रम से अर्जित धन को उन तथाकथित ब्राह्मणों धर्माचार्यों का पीछलग्गू बन लुटा रहा है। जिन्हें धर्म के मूल वेद तथा वेदादि शास्त्रों का क,ख,ग भी पता नहीं। उसे इतिहास के द्वारा अच्छी तरह यह पता है कि राजा-महाराजाओं द्वारा बनाए गए विशालकाय मन्दिरों और रत्नजड़ित आभूषणों-मुकुटों से सुशोभित मूर्तियों को विधर्मी आतताइयों ने जी भरकर तोड़ा, लूटा, खसौटा और इन पत्थरों के अन्धभक्तों की जनेऊ-चोटी काटकर, गोमांस मुंह में भरकर अपनी फौज बढ़ाई गई। नहीं मानने पर सन्तानों को उनके सामने काटकर, उनके मुंह में भरकर, उनकी आँखों के सामने उनकी बहन, बेटियों, बहुओं के साथ सामूहिक व्याभिचार किया गया। उन्हें अपने देश ले जाकर दो-दो रुपए में बेचा गया। गर्दनें उड़ाकर खूं की नदियां बहाई गई, किन्तु प्राण प्रतिष्ठित उनके पत्थर के भगवान ने कोई प्रतिक्रिया नहीं की, उसने अपना धर्म पूर्णरूप से निभाया पत्थर का था पत्थर का ही बना रहा उफ् तक नहीं की। अतः समय रहते जाग जाओ और इतिहास से शिक्षा प्राप्त करो और महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दिखाये गए पथ '**वेदों की ओर लौटो**' तथा मानव जीवन को सफल-सार्थक बनाओ, इसी में स्वयं का तथा जगत् का कल्याण है।

अन्त में पाठकों से एक महत्वपूर्ण प्रश्न और करना चाहता हूं क्या एक अन्धा व्यक्ति दूसरे अन्धे व्यक्ति को राह दिखा सकता है? उत्तर होगा एक अन्धा व्यक्ति तो ठीक, सौ अथवा हजार अन्धे मिलकर भी उसे सही राह नहीं दिखा सकते, हां उसे दिग्भ्रमित अवश्य कर सकते हैं।इसी प्रकार समाज संस्थाओं-संगठनों तथा राष्ट्र में कितने ही नेता उत्पन्न हो जाए अगर वैदिक ज्ञान से अन्धें है तो मानव समाज को अज्ञान की गहरी खाईं में धकेलने वाले ही सिद्ध होंगे। उपरोक्त सत्य किसी को अप्रिय प्रतित होता है तो उसके लिए क्षमा प्रार्थी हूं।

ज्ञान का सागर चार वेद, यह वाणी है भगवान की। इससे मिलती सब सामग्री, जीवन के कल्याण की।।

महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार- ऋग्वेद ज्ञानागार के कुछ मोती

गतांक से आगे-

चतुर्थ मण्डलम्

सूक्त	मन्त्र क्र.	विषय
२५	१	जगत का हित कौन करे (प्रश्नोत्तर)।
	२	राजा के कर्त्तव्य।
	३ से ५ तक	उत्तम, मध्यम व निकृष्टों को कर्त्तव्य कर्म विषय।
	६ व ७	राजा अमात्यदिकों के गुण।
	८	पक्षपात रहित आचरण।
२६	१ से ३ तक	ईश्वर के गुण।
	४ से ६ तक	राजा सेना का विषय।
	७	प्रकारान्तर से पूर्व के विषय।
२७	१ से ५ तक	जीव के गुण।
२८	१ से ४ तक	इन्द्र पद वाच्य सूर्य्य के दृष्टान्त से राजा प्रजा के गुण।
	५	राजा प्रजा के गुण।
२९	१ से ४ तक	राज विषय
	५	प्रजा के गुण।
३०	१ से १० तक व १४ से १६ तथा २०	सूर्य्य के दृष्टान्त से राज विषयक।
	११	सूर्य्य विषय से।
	१२	मेघ सम्बन्धी नदी संतरण।
	१३ व २३	राज सम्बन्ध
	१७ से १९ व २४	विद्वद्विषय व राज विषय।
	२१ व २२	सूर्य के दृष्टान्त से राज विषय।
३१	१ से ६ व १४,१५	राजा प्रजा के धर्म।
	७	प्रतिज्ञा पालन वाले राजा प्रजा का धर्म।
	८ से १२ तक	न्याय पालन में राजा प्रजा का धर्म।
	१३	प्रजा की वृद्धि से राज प्रजा धर्म।
३२	१ से ७ तक	इन्द्र पद वाच्य राज प्रजा के गुण।
	८ से २४	अध्यापक और उपदेशक के गुण।
३३	१, ७, १० व ११	विद्वद्विषय
	२ से ४ तक	माता-पिता आदि के शिक्षा के विषय में।
	५, ६, ८ व ९	मनुष्य के गुण।
३४	१ से ११ तक	मेधावी बुद्धिमान के गुण।
३५	१ से ९ तक	विद्वानों के विषय में।
३६	१ से ९ तक	शिल्प विद्या विषयक।
३७	१ से ८ तक	आप्त पुरुषों के विषय में।
३८	१ से १० तक	कैसा राजा हो।
३९	१ व २	कैसा राजा हो।
	३ व ४	प्रजा के कृत्य।
	५ व ६	राजा प्रजा के कृत्य।
४०	१ से ५ तक	राजा और प्रजा के कृत्य।
४१	१ व ५	अध्यापक और उपदेशक सम्बन्धी
	२ से ४ तक	राजा और अमात्य सम्बन्धी।
	६ व ८	राज विषय।
	७ व १०	प्रजा विषयक।
	९ व ११	राजा और प्रजा विषयक।
४२	१	राज विषय।
	२ से ९ तक	ईश्वर विषय।
	१०	विद्वद्विषय।
४३	१ से ७ तक	अध्यापकोपदेशक विषय।
४४	१ से ४ तक	अध्यापक उपदेशक विषय में शिल्प विद्या विषय।
	५ व ६	राजा और अमात्य विषय।
	७	सज्जन गुण विषयक।
४५	१ से ७ तक	सूर्य्य विषय।
४६	१ से ५ तक	बिजुली की विद्या।
	६ व ७	सूर्य्ययुक्त वायु विषय।
४७	१ व २	वायु सादृश्य से विद्वानों के गुण।
	३ व ४	राजा और अमात्य के गुण।
४८	१ से ५ तक	राजा प्रजा के साथ कैसे वर्त्तें।
४९	१ से ६ तक	राजा और प्रजा की कैसे वृद्धि हो।
५०	१ व ५ से ९ तक	विद्वानों को क्या करना चाहिए।
	२ से ४ तक	कौन प्रशंसा के योग्य है।
	१०	राजा कैसा होवे।
	११	प्रजा क्या करें।
५१	१	प्रातःकाल के वर्णन में अविद्या का निवारण।
	२ से ८ तक	स्त्री पुरुष के विषय में।
	९	स्त्रियों के लिए उपदेश।
	१०	स्वयंवर विवाह।
	११	पुरुष विषयक।
५२	१ से ७ तक	उषा की तुल्यता से स्त्री के गुण।
५३	१ से ७ तक	सविता परमात्मा के गुणों के विषय में।
५४	१ व २	सविता परमात्मा के गुण।
	३ से ५ तक	विद्वानों के गुण व करने योग्य काम।
	६	पदार्थोद्दिश्य से ईश्वर की सेवा।

शेष आगामी अंक में।

- पं. सत्यपाल शर्मार्य -

आर्य समाज-देहरी, जिला-मन्दसौर म.प्र.

चलभाष- ८४३५७४६४७४

वे लोग मूर्ख हैं या पागल-समझदार या बुद्धिमान : चिंतन करें

- मोहनलाल दशोरा 'आर्य' -
नारायणगढ़, जिला-मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष- ०९५७५७९८४१२

जो- भ्रष्टाचार, गबन, घोटाला, शोषण करके अकूत सम्पत्ति परिग्रह कर तिजोरी, लाकर्स भर लेते हैं और अचानक छोड़कर इस दुनिया से प्रस्थान कर जाते हैं।

जो- साधना का ढोंग कर साधनों में लिप्त है, त्याग का उपदेश देकर करोड़ों की सम्पत्ति बनाकर एशोआराम (वीआईपी) का जीवन जी रहे हैं, छापा पड़ने पर जेल जाते हैं।

जो- गुरु, मार्गदर्शक, संरक्षक, पालक बनकर यौन शोषण कर रहे हैं। अवयस्क, अबोध, मासूमों का भावनात्मक, देह शोषण कर रहे हैं। पोल खुलने पर जेलों में डांस कर रहे हैं।

जो- चरित्रशंका में पत्नियों को कुल्हाड़ी से काट रहे हैं, साथ में अबोध बच्चों को भी निपटा रहे हैं, क्या वे अपने स्वयं के चरित्र का गारंटी कार्ड रखते हैं?

जो- प्रेमी से मिलकर पति को ठिकाने लगा रही, साथ में अपनी मासूम संतान को भी मार रही है।

जो- गृह क्लेश व झगड़े में अपने अबोध बच्चों समेत नदी, कुएं में कूद गई। बच्चों को जहर देकर स्वयं ने आत्महत्या कर ली।

जो- अपनी नाजायज हवस पूरी करने के लिए मासूमों का उपयोग कर मार रहे। यूज एण्ड थ्रो का खेल-खेल रहे व फांसी पर लटकने जा रहे हैं। स्वयं के तथा दूसरों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं।

जो- शराब व नशे की लत में माता-पिता या पत्नी को प्रताड़ित कर रहे, मार रहे हैं।

जो- जो अपनी जबान के स्वाद व अवैध आय के लिए मूक पशु-पक्षियों पर छुरी चला रहे हैं।

जो- जल्दी पैसा, जैसे भी पैसा, ज्यादा पैसा पाने के लिए अपहरण, लूट, ठगी व हत्या के दुष्कर्म कर रहे हैं।

जो- मंदिर पर धोक देकर, धंधे में लोगों को धोखा दे रहे हैं।

जो- लाख रुपए की अवैध कमाई कर भगवान को धूंस दे रहे हैं।

जो- गुरुडम अंधविश्वास के कपोल कल्पित असत्य किस्से कहानियां सुनाकर भोले, अशिक्षित लोगों को गुमराह कर भावनात्मक, आर्थिक, शारीरिक शोषण करते हैं।

जो- गढ़ा धन, धन-दूना, संतान, सम्पत्ति का लालच देकर तांत्रिक जाल फैला कर, बच्चों की बलि तक चढ़वा देते हैं और ठगे जाने पर माथे पर हाथ धर रोते पीटते हैं।

जो- अपनी वैध-अवैध मांगों के लिए तोड़फोड़ आगजनी, हिंसा करते हैं।ऐसे कई उदाहरण देखे, सुने व पढ़े जाते हैं। दबाव व लालच में आकर धर्म तक बदल लेते हैं।

अतः सावधान- ईश्वर ने दिमाग, विवेक, बुद्धि दी है। सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो, वैदिक संसार तथा वैदिक साहित्य पढ़ो, वेद कथाएं सुनो, पाखण्डियों, तांत्रिकों से बचो।

अपनी तर्क बुद्धि पर तोलो, सत्य को जानो।
मेहनत की नेक कमाई ही काम की इसे जानो।।
मन की नहीं, आत्मा सत्य कहती, उसे पहचानो।
मनुष्यकृत नहीं, ईश्वर कृत वेदों की ही मानो।।
ईश्वर ही पिता-माता व दाता है, इसे सत्य मानो।।।

दाता के दरबार में सब लोगों का खाता।
क्या योगी, क्या संत, गृहस्थी सबका हिसाब लगाता।।

अच्छी करनी करियो लाला कर्म न करियों काला।
लाख आंख से देख रहा है, तुझे पालने वाला।।
समझदार तो चुप रहता है, मूरख शोर मचाता।
मेरे दाता के दरबार में सब लोगों का खाता।।

चेतावनी- कुकर्म, पाप, गुनाह करने वालों, दुनिया की अदालत से बच भी गए तो दुनिया बनाने वाले (ईश्वर) की अदालत से बच ना पाओगे। ●

समीक्षा-नशा 'नाश' की निशानी 'शराब'

लेखक- आचार्य ब्र. नन्दकिशोर, **प्रकाशक-** विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द नई दिल्ली, **संस्करण-** २०१८, **मूल्य-** १५.००, - **पृष्ठ संख्या-** ३२

देश-विदेश में एक भयंकर रोग विशेष युवा पीढ़ी में बढ़ता जा रहा है, वह है नशा। नशा धूम्रपान का हो, भांग का हो, शराब का हो, अफीम अन्य मादक पदार्थों का हो। वृद्ध, युवा इसके शिकार हो रहे हैं, यहां तक कि महिलाएं भी इससे वंचित नहीं है। बीड़ी, सिगरेट, शराब का पान आदर सम्मान का सूचक बनता जा रहा है, इस कारण घर, परिवार की स्थिति दयनीय होती जा रही है। असमय मृत्यु के शिकार हो रहे हैं। शराबी अपनी सुधबुध खो बैठता है। शराब मिलने पर राजा भोज अन्यथा गंगू तेली बन जाता है। ब्र. नन्दकिशोर जी ने लघु पुस्तिका के माध्यम से ध्यानाकर्षण किया है- चरित्र निर्माण के बाधक, मद्यपान से बुद्धि का नाश होता है। वेद, जैनमत, सिखमत, महर्षि के विचार आदि प्रेरणादायी विचार हैं। ब्रह्मचारी जी का प्रयास सराहनीय है। पुस्तक को पढ़कर अपनी धारणा को बदला जा सकता है। नशा कोई भी हो सभी सर्वनाश का द्योतक है। पाठक लघु पुस्तिका को पढ़े एवं पढ़ाएं संभव हो तो निःशुल्क छपवाकर बंटवाये यह कल्याण का मार्ग है। ब्रह्मचारी जी का साधुवाद है हमें प्रेरित होकर उनकी भावना का उचित आदर करना चाहिए।

● **देवमुनि**, अजमेर (राज.)

वेद प्रतिपादित 'देवहित-आयु' और उसका स्वरूप

- डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री -
साहित्य अकादमी तथा राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित
बी-२९, आनन्दनगर, रायबरेली (उ.प्र.)
चलभाष- ९४५१०७४१२३

ऋग्वेद का निम्न प्रसिद्ध मन्त्र, जिसका पाठ हम स्वस्तिवाचन में भी करते हैं तथा यजमान आदि के दीर्घ आयुष्य के लिए आशीर्वाद एवं शुभकामना आदि प्रकट करने के लिए भी करते हैं, प्रायः सभी को अच्छी तरह स्मरण है। मन्त्र है-

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिररंगैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
(ऋ. १.८९.८)

इस मन्त्र में **'देवहित-आयु'** की प्रार्थना या कामना की गई है। अब प्रश्न होता है कि यह 'देवहित आयु' क्या है तथा इसका स्वरूप कितना मानना चाहिए ?

यही नहीं जहां कहीं भी कुछ जीवन एवं स्वास्थ्य के साथ इन्द्रियों के सबल रहने की कामना की जाती है, वहां भी **'देवहित'** शब्द का उल्लेख वेद में प्राप्त होता है। जैसे यजुर्वेद के प्रसिद्ध मन्त्र में भी **'चक्षु'** आदि इन्द्रियों के लिए **'देवहित'** विशेषण का प्रयोग मिलता है जैसे-

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् । पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं...... भूयश्च शरदः शतात् ।। यजु. ३६.२४

१. 'जरा' ही देवहित आयु है-

वास्तव में पूर्ण आयुष्य प्राप्त करके सुदृढ़ स्थिर अंगों द्वारा सबल स्वस्थ होकर कम से कम एक सौ वर्ष तक जीवन जीते हुए वृद्धावस्था को प्राप्त करना ही **'देवहित'** आयु मानी जानी चाहिए।

रोग द्वारा अल्प समय में मृत्यु या दुर्घटना आदि के द्वारा अकस्मात् मृत्यु **'देवहित'** आयु नहीं है। इन मन्त्रों में हम प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर! हम निरन्तर स्वस्थ रहते हुए समस्त इन्द्रियों से देखते, सुनते तथा स्थिर एवं सबल इन्द्रियों से निरन्तर अपना कार्य सम्पन्न करते हुए ही देवहित आयु को प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में वेद की अन्य संहिताओं का प्रमाण द्रष्टव्य है-

मैत्रायणी संहिता में लिखा है-

१. जरा वै देवहितम् आयुः ।। मैत्रा. १.७.५

यही वाक्य कठ संहिता (९.२) तथा कपिष्ठल कठ संहिता (८.५) में भी प्राप्त होता है। इससे स्पष्ट है कि देवहित-आयु की कल्पना में अकाल मृत्यु वर्जित है।

२. मनुष्य की औसत आयु एक सौ वर्ष-

वेदों में मनुष्य की औसत आयु एक सौ वर्ष कही गई है। ऐतरेय आरण्यक में भी लिखा है-

शतं वर्षाणि पुरुषायुषो भवति। - ऐ.आ. २.२१

अर्थात् पुरुष की सामान्य आयु एक सौ वर्ष होती है अन्यत्र भी लिखा है-

शतायुर्वै पुरुषः शतवीर्यः। मै.स. १.६.४
शतायुःपुरुषः शतेन्द्रियः। - तै.सं. २.३.११.५

यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में भी लिखा है-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।-यजु. ४०/२

अर्थात् मनुष्य अपने सबल स्वस्थ अंगों से भलीभांति सब कार्यों को करता हुआ ही एक सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करे। यहां सौ वर्ष का तात्पर्य कम से कम औसत रूप में एक सौ वर्ष है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि मनुष्य सौ वर्ष से अधिक जीवित नहीं रह सकता, क्योंकि मन्त्रों में कहा भी है-**भूयश्च शरदः शतात् ।**

अर्थात् - एक सौ वर्षों से अधिक जीवे।

इसीलिए माध्यान्दिन शतपथ ब्राह्मण में लिखा है- **अपि हि भूयांसि शताद् वर्षेभ्यः पुरुषो जीवति।** शत. ब्रा. १.९.३.१९।

अर्थात् - एक सौ वर्षों से भी अधिक मनुष्य को जीवित रहना चाहिए।

३. इस समय भारतवर्ष में औसत आयु ६५ वर्ष-

वेद में मनुष्य की औसत आयु एक सौ वर्ष मानी गई है तथा कम से कम एक सौ वर्ष जीवित रहने के बाद वृद्धावस्था के द्वारा ही मृत्यु अपेक्षित है, रोग या दुर्घटना के द्वारा नहीं। यही **'देवहित-आयु'** है।

भारतवर्ष में इस समय मनुष्यों की औसत आयु ६० से ६५ वर्ष के बीच है। जबकि संयुक्त राष्ट्र के विश्व स्वास्थ्य संगठन १९९९ के रिपोर्टों के अनुसार अमेरिका, यूरोप, रूस, जापान आदि देशों में मनुष्यों की औसत आयु ६५ से ७५ वर्ष के बीच मानी गई है। वहां पर पौष्टिक भोजन एवं उत्तम चिकित्सा सुविधाओं की व्यवस्था है अतः इन देशों में औसत आयु अधिक है।

जबकि अफ्रीका के कई देशों में जैसे सोमालिया, इथियोपिया, उगाण्डा आदि देशों में मनुष्य की औसत आयु ४५ वर्ष से भी कम मानी जाती है। इन देशों में कुपोषण एवं स्वास्थ्य तथा चिकित्सा सम्बन्धी कुप्रबन्ध के कारण औसत आयु कम है तथा मृत्युदर भी अधिक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वेदप्रतिपादित मनुष्य की आयु अभी विश्व में कहीं भी दृष्टिगत नहीं हो रही है।

४. सम्पूर्ण जीवन ही यज्ञ है-

चारों वेदों के सुप्रसिद्ध भाष्यकार आचार्य सायण ने **भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम.... देवहितं यदायुः** आदि ऋग्वेद के प्रसिद्ध मन्त्र में विद्यमान **'देवहितं यदायुः'** इस पद की व्याख्या करते हुए लिखा है कि हम ११६ या १२० वर्ष की आयु प्राप्त करें।

''यदायुः षोडशाधिकशतप्रमाणं विंशत्यधि कशतप्रमाणं वा'
(द्रष्टव्य-सायणभाष्य)

जब मैंने इस भाष्य को पढ़ा तो मुझे लगा कि आचार्य सायण ने **'देवहित- आयु'** का अर्थ एक सौ सोलह वर्ष या एक सौ बीस वर्ष

किस आधार पर किया है, परन्तु मुझको इसका समाधान भी छान्दोग्य उपनिषद् के निम्न वाक्य से मिल गया, जिसके आधार पर सायण ने इस मन्त्र की यह व्याख्या लिखी है-

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रातः सवनं चतुश्चत्वारिंशद् वर्षाणि तन्माध्यन्दिनं सवनं यान्यष्टाचत्वारिंशद् वर्षाणि ततृतीयं सवनम् : इति। (छा.उप. ३.१६.१-४)

अर्थात् मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन ही एक यज्ञ है। उसके प्रारम्भ के २४ वर्ष प्रातः सवन हैं, जबकि अगले ४४ वर्ष माध्यान्दिन सवन के रूप में जानने चाहिए तथा अन्तिम ४८ वर्ष तृतीय सवन के रूप में समझने चाहिए।

इस प्रकार इन वर्षों का कुल योग ११६ होता है। यही मनुष्य द्वारा प्राप्य 'देवहित- आयु' है।

छान्दोग्य उपनिषद् के किसी-किसी संस्करण में माध्यन्दिन सवन के रूप में भी ४८ वर्ष ही माने गए हैं। इस प्रकार उनके अनुसार १२० वर्ष योग हुआ। आचार्य सायण ने इस मन्त्र के भाष्य का सम्भवतः यही छान्दोग्य उपनिषद् का पूर्व वाक्य ही आधार है।

५. अभीष्ट आयु एवं आरोग्य की प्राप्ति के लिए यज्ञ-

गीता में लिखा है-

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्टवा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वम् एष वोऽस्त्विष्टकामधुक ।। गीता- ३.१०

अर्थात् - यज्ञ की रचना के साथ ही प्रजापति का यह निर्देश है कि जो मनुष्य निरन्तर यज्ञ का संकलन करता है, वह अभीष्ट कामनाओं को सतत प्राप्त करता रहता है। अभीष्ट एवं यथाकाम आयु की प्राप्ति में यज्ञ सहायक होता है। अथर्ववेद का मन्त्र है-

न तं यक्ष्मा अरुन्धते नैनं शपथो अश्नुते।
यं भेषजस्य गुल्गुलोः सुरभिर्गन्धो अश्नुते।। अथर्व. १९.३८.१

अर्थात् जो अग्निहोत्र में गुग्गुल का प्रयोग करता है उसे क्षय आदि का रोग नहीं होता।

अथर्ववेद में अन्यत्र यह भी संकेत है कि यज्ञ हमें रोग, व्याधि, दुर्घटना एवं सद्यः प्राप्त जरावस्था ये दूर करता है तथा अकाल मृत्यु को हटाकर एक सौ वर्ष से अधिक स्वास्थ्ययुक्त 'देवहित-आयु' को प्रदान करने में सहायक होता है-

व्यन्ये यन्तु मृत्यवो यानाहुरितराञ्छतम् ।। अथर्व. ३.११.५।।

६. दीर्घ सन्ध्या से दीर्घ आयु-

मनु स्मृति (४.९४) में एक श्लोक है-

ऋषयो दीर्घसन्ध्यत्वाद् दीर्घमायुरवाप्नुयुः।
प्रज्ञां यशश्च कीर्तिं च ब्रह्मवर्चसमेव च।।

अर्थात् - ऋषियों ने दीर्घ समय तक सन्ध्योपासना आदि करते हुए दीर्घायुष्य को प्राप्त किया है। साथ ही प्रज्ञा कीर्ति आदि को भी प्राप्त किया।

अथर्ववेद के निम्न मन्त्र में गायत्री जप करने से आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति आदि की प्राप्ति का संकेत मिलता है-

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् ।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं
ब्रह्मवर्चसं मह्यं दत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ।। अथर्व. १९.७१.१।।

इस प्रकार यह सब सदाचारकृत्य हमारी आयु को परोक्ष रूप में बढ़ाते हुए जरावस्था में पहुंचाकर एक सौ बीस वर्ष या इससे भी अधिक जीवन की क्षमता को बढ़ाते हुए वेदप्रतिपादित देवहित आयु को प्राप्त कराने में सहायक सिद्ध होते हैं।

यही नहीं, पञ्चमहायज्ञों में वर्णित अतिथियज्ञ के द्वारा केवल वृद्ध, श्रेष्ठ, ज्येष्ठ, पुरुषों के अभिवादन एवं उनके सम्मान में खड़े होकर आदर देने तथा उनके प्रति नमनमात्र से भी आयु के ऊपर प्रभाव पड़ता है तथा आयु में वृद्धि होती है, इसका संकेत भी मनुस्मृति में निम्न श्लोक में निहित है।

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारितस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।। मनु. २.१२१।।

विचार मंथन

विचार उस दर्पण की भांति है जो कभी असत्य नहीं बोलता। किसी भी व्यक्ति को उसके विचारों से ही जाना जा सकता है। आप ऊपर से कितने भी अच्छे वस्त्र ओढ़ लें परंतु आप भीतर से कैसे हैं ये आपके विचारों से ही प्रतिबिंबित होता है। मन में विचार उठना एक नैसर्गिक क्रिया है जिसके लिए किसी भी प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। हां, विचारों को उत्पन्न होने से रोकने के लिए अवश्य कठोर परिश्रम की आवश्यकता है। भाषा का आविष्कार ही संभवतः हमारे मन में उठने वाले विचारों को बाहर निकालने के लिए हुआ होगा, क्योंकि विचारों का यदि उचित समय पर उचित मात्रा में निष्कासन नहीं हुआ तो इनमें इतनी क्षमता है कि मनुष्य को पागल कर दे। मन एवं मस्तिष्क में विचारों के जो बवंडर उठते हैं, उन्हें शांत करने के लिए दो ही मार्ग हैं, प्रथम मार्ग है ध्यान का, तप का मार्ग जो कि विचारों के शमन का मार्ग है। ये अत्यंत दुष्कर मार्ग है जिस पर चलना परमात्मा एवं गुरू की कृपा से किसी विरले के लिए ही संभव होता है। दूसरा मार्ग है वार्तालाप का मार्ग जो विचारों के वमन का मार्ग है। ये सरल एवं सहज मार्ग है जो हमें जन्म से ही उपलब्ध है। विचारों के आदान-प्रदान में कभी भी संकोच न करें क्योंकि ये ऐसा व्यापार है जिसमें लेने एवं देने वाले दोनों ही लाभ में रहते हैं। यदि आप किसी के विचारों से सहमत नहीं तो भी उसे सुनने में कोई हानि नहीं। यदि वो विचार आपके स्तर के नहीं भी हैं तो भी वो बोलने वाले के स्तर का परिचय तो दे ही रहे हैं। जो विचार अच्छे हों, सकारात्मक हों उन्हें अपने मन में सहेज लीजिए एवं जो विचार नकारात्मक हों उन्हें छोड़ दीजिए, एक कान सेसुनिए, दूसरे कान से निकाल दीजिए। परंतु प्रायः हम नकारात्मक विचारों को ही सहेजने लग जाते हैं। धीरे-धीरे हमारा मन केवल नाकारात्मक विचारों की एक गठरी बनकर रह जाता है और तब ही वास्तवकि कठिनाई शुरू होती है। विचारों में इतनी शक्ति है कि वो आपको धकेल सकते हैं इसलिए विचारों के चयन में अत्यंत सतर्कता रखें क्योंकि अंततः आप अपने विचारों का प्रतिबिंब मात्र ही बनकर रह जाते हैं।

रेणु अग्रवाल, चैन्नई

आज-कल

- पं. देवमुनि वानप्रस्थी -
ऋषि उद्यान, अजमेर (राज.)
चलभाष- ७७४२२२९३२७

आज और कल का अपने-अपने स्थान पर महत्व है। बच्चे से वृद्ध तक आज की कल्पना या चिन्तन नहीं करते, कल के आशावादी होते हैं। हम यह भी भलीभांति जानते हैं कि आने वाला कल ही आज होगा। मानसिकता यही बनी रहती है कि आज का काम कल कर लेंगे। कहावत है- **'किया सो काम भजिया सो राम,'** समय हाथ से न निकल पाए ऐसा कार्य करना चाहिए।

कवि का कथन है- **'कल करना था जो आज कर, आज करना सो अब, पल में प्रलय होगी बहुरी करोगे कब।'** विचारधारा दृढ़ रहती है कि अभी समय बहुत है बाद में कर लेंगे। कतिपय उदाहरण प्रस्तुत है पाठकगण चिन्तन मनन कर अपना मन्तव्य दृढ़ करें ।

एक शराबी है वह नशे का इतना आदि है कि येन-केन-प्रकारेण शराब का नशा अवश्य करता है। पैसा नहीं है तो घर से जैसे तैसे प्राप्त करेगा, उधार लेगा, वह अपनी प्रवृत्ति नहीं छोड़ना चाहता। गली, मोहल्ले वाले सभी यहां तक कि परिवार वाले दुखी हैं। कहने को कहता है कि आज-आज पी लेता हूं कल नहीं पीऊंगा। कल व पुनः-पुनः वही प्रवृत्ति चलती रहती है। नशे की स्थिति में रास्ता भटकता है लोगों की दृष्टि से गिरता है, लोग मारते भी हैं। होश आने पर कहता है कल से नहीं पीऊंगा।

एक जुआरी उसकी आदत जुए की हो गई है। वह जीतता है प्रसन्नता होती है। दांव पर दांव लगाता जाता है सब दिन बराबर नहीं होते, वह हार जाता है, अब वह मुंह दिखाने लायक नहीं रहा। घर में पत्नी, बच्चे सभी उसे कोसते हैं। हार जाने पर सबकी प्रवृत्ति बदल जाती है। घर में अब कोई स्थान नहीं है। सब घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अब ध्यान बंधता है कि मैं पहले चेत जाता तो आज यह दिन देखने को नहीं मिलता। अपने ही पराये हो गए। अब पछताये क्या होत जब चिड़ियां चुग गई खेत। सबके सामने शर्मिन्दा हूं। भविष्य में ऐसा कार्य नहीं करूंगा।

एक चोर है वह पहले घर से चीजे चुराता है, फिर आसपास में साहस जुटाता है। अब उसका साहस बढ़ जाता है और चोरी करने का आदी हो जाता है। एक दिन नगर सेठ के यहां चोरी करने पहुंचा, ताला तोड़कर नकदी आदि लेकर जाने लगा। घर में जाग होने से परिवार वालों ने रंगे हाथों पकड़ लिया। पुलिस को सूचित कर दिया। इसी बीच लोगों ने पीट-पीट कर अधमरा कर दिया। पुलिस ने आते ही उसे बन्दी बना लिया और हथकड़ी लगाकर उसके मोहल्ले की ओर गई। सभी बुरा-भला कह रहे थे। उसकी आंखें नीचे थी। अब विचार आया कि मेरे कर्मों के कारण मैं दृष्टि उठाने लायक नहीं रहा। पहले बुद्धि काम कर लेती तो यह स्थिति नहीं बनती। मैं अत्यन्त शर्मिन्दा हूं। अब ऐसा कार्य कभी नहीं करूंगा, शपथ लेता हूं।

एक नगर में एक श्रेष्ठी है उसको किसी प्रकार का व्यसन नहीं है। नगर में प्रतिष्ठा है। धनधान्य से भी सम्पन्न है। व्यापार में निरन्तर वृद्धि है। परिवार से भी सम्पन्नता है। परिवार में सभी आज्ञापालक हैं. किसी प्रकार की कमी नहीं है। आयु साठ वर्ष से ऊपर हो गई। एक दिन एक महात्मा मिले। उन्होंने श्रेष्ठी से पूछा नगर में आपका अच्छा नाम है। व्यापार भी अच्छा चलता है परिवार में भी सुख है, अतः बताइये उस परम पिता परमात्मा के लिए भी समय निकालो। वह कहने लगा कुछ दिन बाद ईश्वर स्मरण करूंगा। कहते हैं 'सब दिन होत न एक समान।' समय परिवर्तनशील है। समय बदला। दिन फिरने लगे। व्यापार में घाटा होने लगा। परिवार वाले विमुख होने लगे, तब समझ में आया कि परमात्मा स्मरण करना आवश्यक है। उसे कभी नहीं भूलना चाहिए। दुःख व सुख में वही साथी है। कल से ईश्वर साधना में जाऊंगा। कोई किसी का साथी नहीं।

उपर्युक्त धारणाओं से मन्तव्य बना है कि कल पर सभी टिके हैं। यही आशा व मानसिकता प्रायः सभी की बनती है। संसारी लोगों की आशा का केन्द्र कल है। उत्तम स्वास्थ्य, व्यायाम के लिए आज समय नहीं कल देखेंगे। साधक आज की सोचता है कल की नहीं। इस कल की उपासना के अनुपम दृश्य को जब महर्षि याज्ञवक्ल्य की अन्तःचक्षुओं ने देखा तो उनके मुखारविन्द से अनायास निकल पड़ा-

'न श्वःश्वमुपासोत को हि मनुष्यस्य श्वोवेद।'

आज, आज है, आने वाला कल भी आज होगा। प्रभु ने इस संसार में भेजा तब भी यही कहा कि इस धन, दौलत, बंगले, ऐश्वर्य, सुख, सुविधा आज के लिए है, कल के लिए नहीं। यह जीवन पीपल के पत्ते की तरह है जो हवा के झोंके के साथ मिट्टी में मिल जाता है, यही क्रम इस जीवन का है।

महापुरुषों की सफलता का यही रहस्य है कि वे तत्काल आज का निर्णय लेते हैं। साधक, योगिजन भी आज को ही महत्व देते हैं। ●

ऋषि स्मृति समारोह

दिनांकः २७ सितम्बर से १ अक्टूबर २०१८ तक

ऋषि स्मृति भवन न्यास जोधपुर (राज.) के तत्वावधान में प्रतिवर्षानुसार आयोजित किया जाने वाला ऋषि स्मृति समारोह। इस वर्ष २७ सितम्बर से १ अक्टूबर २०१८ तक आयोजित किया जा रहा है। समस्त आर्य जन सादर आमंत्रित हैं।

सम्पर्कः किशनलाल गेहलोत (मन्त्री) ९८२९०२७४८१

ऋषि मेला

दिनांक १६ से १८ नवम्बर २०१८ तक

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष वर्णित तिथियों में ऋषि मेला आयोजित किया जा रहा है। समस्त धर्मनिष्ठजन सादर आमंत्रित है।

सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

राष्ट्र भाषा हिन्दी

- नरेंद्र आहूजा 'विवेक' -
६०२ जी.एच. ५३, सेक्टर-२०
पंचकूला, हरियाणा
चलभाष- ९४६७६०८६८६

भाषा भावों की संवाहक होती है। अपने मनोभावों के प्रगटीकरण का सर्वोत्तम साधन उस मनुष्य की होती है। कोई भी व्यक्ति अपने मन के उद्‌गार दूसरे के मन में सीधे तभी उतार सकता है जब दोनों वक्ता और श्रोता, लेखक और पाठक की भाषा एक ही हो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भाषा एक ऐसा सूत्र है जो किसी देश के समस्त नागरिकों को बांधकर रखता है। जिस प्रकार बिखरे हुए मोती एक धागे में पिरो देने के बाद सुंदर माला के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं उसी प्रकार भाषा का धागा उस देश के नागरिकों को एकता के सूत्र में पिरो देता है। किन्हीं दो व्यक्तियों के बीच किसी भी प्रकार के ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य को समाप्त कर एकता स्थापित करने के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी संवाद कायम करने की होती है। बेहतर संवाद तभी बन सकता है जब वक्ता-श्रोता, लेखक-पाठक की भाषा एक ही हो, क्योंकि मनोभावों की सीधी सरलपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए भाषा का सामंजस्य और एकरूपता एक आवश्यक शर्त है।

किसी भी राष्ट्र को **''राष्ट्रो वै मुष्ठि''** के वैदिक आदेश के अनुरूप शक्तिशाली बनाने के लिए और एकता सूत्र में बांधने के लिए सर्वमान्य, सर्वस्वीकार्य राष्ट्रभाषा का होना अत्यन्त आवश्यक होता है। किसी भी देश का नागरिक अपनी व्यथाकथा की अभिव्यक्ति सर्वाधिक स्पष्ट शब्दों में केवल अपनी मातृभाषा में ही कर सकता है और **यदि किसी राष्ट्र के अधिकांश नागरिकों द्वारा बोली, सुनी, लिखी जाने वाली मातृभाषा ही राष्ट्रभाषा हो तो उस राष्ट्र के नागरिक भाषाई एकता के सूत्र में बंधकर उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते हैं।** इसके विपरीत यदि किसी राष्ट्र के नागरिक वोट बैंक की तुच्छ राजनीति का शिकार होकर अलग-अलग भाषाएं बोलते, लिखते, पढ़ते रहें तो वे कभी एक राष्ट्र के रूप में, एक सूत्र में बंधकर उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो सकते। अपितु भाषाई कबीलों में बंटे या राजनेताओं द्वारा सत्ता के साधन बनकर बांट दिए गए, आपस में लड़ते हुए केकड़ा संस्कृति के शिकार हो जाते हैं। यहां केकड़ा संस्कृति का अभिप्राय एक दूसरे की उन्नति से जलकर ईर्ष्या रखने वाले आपस में लड़ने वाले, एक दूसरे की टांग खींचने वाले ऐसे लोग हैं जैसे खुले बर्तन में छोड़ दिए गए केकड़े एक दूसरे की टांग खींचकर नीचे गिराते रहते हैं और बर्तन के खुले होने के बावजूद उससे बाहर नहीं आ पाते।

कोई भी राष्ट्र अपनी राष्ट्रभाषा की पूर्ण स्वीकार्यता के बिना गूंगा ही रह जाता है। गूंगा इसलिए, क्योंकि एक भाषा के बिना हम एक राष्ट्र के नागरिक होने के बावजूद एकदूसरे को अपने मनोभाव अभिव्यक्त नहीं कर पाते। विशेष रूप से उत्तर और दक्षिण भारत में पाई जाने वाली भाषाई भिन्नता हमें गूंगा और बहरा ही तो बना देती है। यहां यदि बहुमत के सिद्धान्त का भी सहारा लें तो राष्ट्रभाषा हिन्दी जो कि इस राष्ट्र के अधिकांश नागरिकों द्वारा बोली, सुनी, समझी जाती है उसे राज्य की सहायता से सही मायनों में राष्ट्रभाषा का सम्मान मिलना चाहिए। कई बार रोग की अवस्था में हमें कड़वी दवाई ना चाहते हुए भी पीनी पड़ती है और एक रोगी के लिए वह कड़वी दवाई अमृतरूपी औषधि का कार्य करती है। ठीक इसी प्रकार भाषाई कबीलों में बंट रहे विघटन के रोग से ग्रस्त हो चुके राष्ट्र के उपचार के लिए राज्य आदेश के द्वारा राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसका उचित स्थान व सम्मान देते हुए लागू करने की आवश्यकता है।

लेकिन हमारे देश में तो स्थिति इससे भी अधिक बदतर है, क्योंकि राष्ट्र और राज्य के बीच में खाई बनाकर शासित प्रजा का शोषण करने के कलुषित भाव से नौकरशाही के तथाकथित अभिजात्य वर्ग ने अंग्रेजी को ही स्वतंत्रता प्राप्ति के सत्तरवर्षों के बाद भी राज्य के कामकाज की भाषा बनाकर रखा हुआ है। आज भी स्वतंत्र राष्ट्र का प्रत्येक बच्चा विदेशी आंग्ल भाषा मजबूरी में पढ़ने के लिए अभिशप्त है। हम आजाद तो अवश्य हो गए, लेकिन **कुटिल मैकाले की गुलाम भारत को दी गई गुलामी की मानसिकता वाली शिक्षा प्रणाली के कारण आज भी मानसिक रूप से गुलाम है।** अंग्रेजी के राज्यभाषा होने के कारण हम आज भी हर विषय को उन्हीं अंग्रेजों के नजरिये से देखते परखते हैं। सभी उच्च शिक्षा का माध्यम आज भी अंग्रेजी बना हुआ है। राज्य के सभी कामकाज आज भी अंग्रेजी में होते हैं और **हमारी हालत कौआ चला मोर की चाल वाली हो चुकी है।** अंग्रेजी के प्रति इस मोह के कारण विश्वपटल पर राष्ट्रवादी देशों में हम जग हंसाई के पात्र बनते हैं। जब भी कोई हमारे देश का नेता बाहर विदेशों में या संयुक्त राष्ट्र में राष्ट्रभाषा हिन्दी में अपनी बात रखता है तो वह हमारे लिए अविस्मरणीय ऐतिहासिक क्षण बन जाता है। **संयुक्त राष्ट्र में माननीय पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का हिन्दी में दिया ऐतिहासिक उद्बोधन या फिर वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी जी की हिन्दी में बोलने की चुम्बकीय आकर्षण शक्ति हमारे लिए गौरव का क्षण बनती है।**

हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्त भाषाओं की जननी सर्वाधिक वैज्ञानिक संस्कृति में प्रयोग होने वाली देवनागरी लिपि पर आधारित है और इसी कारण शायद विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा मानी जाती है। **संस्कृत विश्व की प्राचीनतम भाषा के साथ-साथ ईश्वरीय वाणी भी है, क्योंकि सृष्टि के रचयिता परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि के समस्त प्राणियों के लिए आचार संहिता के रूप में चारों वेदों का ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से संस्कृत भाषा में ही दिया था।** उसी देवनागरी लिपि पर आधारित अपनी राष्ट्रभाषा मातृभाषा हिन्दी पर हमें गौरव होना चाहिए और टूटी-फूटी गलत अंग्रेजी बोलने वाले को पढ़ा-लिखा और हिन्दी बोलने वाले को अनपढ़ समझने की हीन भावना से मुक्त होना चाहिए।●

हिन्दी में वो बात है...

हिन्दी के राजभाषा बनने के संघर्षो को याद करें तो हमें सर्वप्रथम याद आते हैं महर्षि दयानन्द सरस्वती। जिस समय देश में सारा ज्ञान संस्कृत भाषा में सिमटा था और संस्कृत को समझने वालों की संख्या घट रही थी। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती की वाणी में स्वदेशी विचार प्रकट हुआ और वो सार्वदेशिक भाषा के रूप में हिन्दी भाषा के समर्थक हुए। इसी विचार को महात्मा गांधी ने अमली जामा पहनाया और दोनों ने बढ़ती उम्र में देश हित में निज भाषा को त्याग कर हिंदी को अपनाया, न केवल हिन्दी भाषा सीखी बल्कि उसका प्रचार-प्रसार करने में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। स्वतंत्रता संग्राम सैनानियों ने वंदे मातरम् बोलकर देशभक्ति की ज्वाला को जलाये रखा। मैथिलीशरण जी ने कहा कि नागरी लिपि वाली हिन्दी हमारी राजभाषा हो, इसमें अर्थ का अनर्थ नहीं होता है। इसमें जैसा लिखा जाता है वैसा ही बोला जाता है, जबकि अंग्रेजी के बारे में हम सब जानते हैं-क्नोलेज, टू, गों आदि। गूगल के द्वारा हिन्दी का दायरा विश्वव्यापी तो हुआ है, लेकिन उदाहरण गूगल के नक्शे में बारां को लिखा जाएगा। BARAN फिर उसका हिन्दी लिखा जाएगा बारान। मैं अपने विभाग की एक रिपोर्ट पढ़ रहा था जिसमें एक नाम लिखा था चोप्रा, अंग्रेजी में चोपड़ा को CHOPRA लिखा जाता है और मैकाले की शिक्षा में शिक्षित ने उसे कर दिया चोप्रा। रूस, चीन आदि देश अपनी भाषा में सर्वांगीण विकास कर रहे हैं, लेकिन हमारे यहां यह अवधारणा बना रखी है कि अंग्रेजी को सीखे बिना नाकारा रह जाएंगे। निर्णायक महोदय सबसे ज्यादा दुःख तब होता है जब हिन्दी भाषी क्षेत्र के लोग जिनके बुजुर्ग और सगे सम्बन्धी सही से अंग्रेजी नहीं समझ सकते वह अंग्रेजी में आमंत्रण पत्र छपवाकर स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने का प्रयास करता है। हम स्वयं राजभाषा को हिन्दी अपनाने का प्रण लेकर ही भारतीय संस्कृति को नष्ट करने की लार्ड मैकाले की कुटिल चाल से राष्ट्र को बचा सकते हैं, अन्यथा सरकारी स्तर पर प्रतियोगिताएं रस्म अदायगी ही रह जाएगी। मन के इन भावों को शब्दों में बांधने का प्रयास किया है-

- रमेशचन्द्र भाट -
मंत्री-आर्य समाज रावतभाटा
राजस्थान
चलभाष- ९४१३३५६७२८

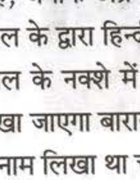

१४. सितम्बर ४९ को संसद यह मंथन करती है।
मंथन-तर्क-वितर्क यही की हिन्दी राजभाषा क्यों कर हो?
सोचा भारत में सर्वाधिक, समझा जिसको जाता हो?
समझा सारे देशवाशियों, को रख ले जो साथ है।
माला के मनकों सी जोड़े, हिन्दी में वो बात है।।१।।

ऋषि दयानन्द और गांधीजी, तज देते निज भाषा को है।
राष्ट्रहित सर्वोपरि मानकर, हिन्दी में फिर काम किया है।
अपनी संस्कृति, जन की भाषा, स्वाभिमान जगाती जो है।
मन के भावों को जन-जन में, हिन्दी में फिर व्यक्त किया है।
सबको एकसूत्र में बांधे, हिन्दी में वो बात है ।।२।।

सत्तावन से सैंतालिस तक, देश भक्तों की कंठ बसी जो।
राजनयिक आजादी पाकर, राजनीति की भेंट चढ़ी है।
नेताओं ने भाषा बदली, भाषा की राजनीति की है।
आजादी से अब तक हिन्दी, संघर्षों की भेंट चढ़ी है।
नांद गुंजाया वंदे मातरम्, हिन्दी में वो बात है।।३।।

मैथिली शरण जी बतलाते, हम सबको यह बात है।
लिपि जिसकी है देवनागरी, वो हिन्दी राष्ट्रभाषा हो।
इसका जैसा लिखते हैं वैसी ही बोली जाती है।
अर्थ का अनर्थ इसमें, देखो होता कभी नहीं है।
बात नहीं यह अंग्रेजी में, हिन्दी में वो बात है।।४।।

रूस में रूसी, चीन में चीनी, जापानी जापान में है।
क्यों नहीं बन सकती फिर प्यारी हिन्दी हिन्दुस्तान में।
अंग्रेजी पढ़ने से ही यदि मिलता सबको रोजगार हो।
तो फिर ब्रिटेन, अमरीका में, कोई बेरोजगार ना हो।
इण्डिया को भारत जो कर दे, हिन्दी में वो बात है।।५।।

अंग्रेजी की मोह-माया के, ऐसे मंजर दिख जाते हैं।
शादी-मुंडन के आमंत्रण, छपते अंग्रेजी में क्यों है?
दुर्दिन जब आता है अपना, अपने को खा जाता है।
अमृत देकर अंग्रेजी को हिन्दी का सब मान हरा है।
भ्रातृ भाव का बोध हो जिसमें, हिन्दी में वो बात है।।६।।

प्रतियोगिता आयोजित होती, पखवाड़े भी मन जाते हैं।
पुरस्कार पाकर हम कुछ जन, धन्य-धन्य हो जाते हैं।
गंभीर प्रतिबद्धता के बिना मात्र रस्म निभ जाती है।
इसीलिए बेचारी हिन्दी, जस की तस रह जाती है।
फिर भी जो सबके साथ है, हिन्दी में वो बात है।।७।।

काम करें अब हिन्दी में, हिन्दी अपनाने का प्रण लें।
प्रण ले अपने बच्चों को भी, हिन्दी में प्रवीण करें।
शिक्षा की भाषा जो भी हो, हिन्दी का सम्मान करें।
मैकाले की कुटिल चाल से, बचा हमें सकती जो है।
संस्कृत भाषा की जो बेटी, हिन्दी में वो बात है।।८।।

श्री विश्वकर्मा दिवस १७ सितम्बर

- आर्य पी.एस. यादव -
आर्य समाज मण्डीदीप,
रायसेन, (म.प्र.),
चलभाष- ९४२५००४३७९

आज का दिन औद्योगिक क्षेत्र में उत्सव व आराधना का दिन माना जाता है। वास्तव में इसके मूल में इस परम पिता परमेश्वर के विश्व में कर्म रूप में व्याप्त स्वरूप को अनुभव करना एवं उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा से कर्म की शक्ति व ज्ञान प्राप्त करने हेतु उपासना के लिए निश्चित दिन है। इस जगत् के अस्तित्व व हमारे अस्तित्व का मुख्यधार परम पिता परमात्मा ही है और उसी दिव्य शक्ति से ही प्रार्थना करके हम अपनी तकनीकी ज्ञान एवं शिल्प कलाओं की क्षमताओं में वृद्धि करना चाहते हैं। परमात्मा ने सृष्टि के आदि में ही समस्त ज्ञान सूत्र रूप में वेदों व शास्त्रों में प्रदान कर दिया था। हमारे पूर्वजों ने इन्हीं सूत्र ज्ञान को अपने पुरुषार्थ से संवर्धित कर अनेक विधाओं में पारांगतता प्राप्त की है। आज से लगभग ५००० साल पूर्व महाभारत काल में हमारे देश में तकनीकी ज्ञान बहुत उच्चकोटी का विकसित था। पर महाभारत के नाम से हुए महाविनाशकारी विश्वयुद्ध में अनेक तकनीकों के ज्ञाता यकायक युद्धाग्नि के भेंट चढ़ जाने के कारण जो शून्य उभरा जिसमें हम सदियों पीछे चले गए। और पुनः खोज और विकास का दौर शुरू हुआ।

ज्ञान के प्रचार का एवं अगली पीढ़ी में प्रसार का बड़ा महत्व है और ज्ञान के प्रसार के लिए गुरु-शिष्य परम्परा आदि काल से ही रही है। इस दिन इन्हीं बातों का उपदेश दिया जाता है। ज्ञान के संदेशों को कह सुन कर या एक चित्र द्वारा प्रकट करके भी संदेश दिया जाता है और इसी परम्परा में हम देखते हैं कि चित्रकार कोई ऐसा चित्र बनाता है कि उसे गौर से देखने पर उस चित्रलिपी के माध्यम से चित्रकार हमें क्या संदेश देना चाहता है। यह सहज ही ज्ञात हो जाता है। इसमें भाषा ज्ञान की कमी भी आड़े नहीं आती। अत: चित्रों के माध्यम से संदेश देना सबसे सरल होता है।

इसीलिए ज्ञान के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में बनाया गया एक चित्र भी आज प्रदर्शित किया जाता है जो कोई कैमरे का खिंचा फोटो नहीं है चित्रकार द्वारा संदेश देने हेतु बनाया गया है। इस चित्र में एक अनुभवी वृद्ध को एक आसन पर बैठे दिखाया गया है, इनके बाल सफेद है जो इनके उम्र में अधिक होने का परिचायक है। जिसका साफ मतलब है, कि ये बाल धूप में नहीं अनुभव के श्रंगार से सफेद हुए हैं। इनके हाथ दो के स्थान पर चार बनाने का मतलब है ये साधारण व्यक्ति से दुगुनी कार्यक्षमता वाले हैं। इनकी वेशभूषा में रत्न व स्वर्ण आभूषण भी है। जो इनके कर्मशील होने से सम्पन्न होने का प्रतीक है। इनके हाथों में नापने वाला फीता (मेजरिंग टेप) और पुस्तक है जो इनके सिद्धान्तिक एवं प्रायोगिक (थ्योरिटिकल एवं प्रेक्टिकल) का ज्ञान का द्यौतक है।

इनके ज्ञान के विषयों का भी चित्र में प्रदर्शन है इनके आसन के किनारे पर धातुओं से संबंधित औजार, लकड़ी आदि याने अधातुशिल्प के औजार, चित्रकला की कूचियां आदि प्रदर्शित कर यह दर्शाया गया है कि मेटेलिक नान मेटेलिक इन्जीनियरिंग के साथ ही पेटिंग डिजाइनिंग आदि विद्याओं से संबंधित ज्ञान रखने वाले हैं। इनके पास एक हंस दिखाया गया है, जो इनकी हंसबुद्धि याने नीर क्षीर करने का विवेकी होना दर्शाता है। पास ही एक थाल में श्रेष्ठ भोजन फल इत्यादि से इनके शाकाहारी होने को प्रदर्शित करता है। इनके दोनों और कुछ नवयुवक खड़े हैं। उनमें कुछ धनी व कुछ सामान्य वर्ग के हैं यह इनकी वेशभूषा से स्पष्ट है। पर ये सब इन अनुभवी हस्ती के सामने करबद्ध सम्मान करने की मुद्रा में खड़े है। ये अगली पीढ़ी के प्रतीक हैं। मुख्य अनुभवी महाशय का एक हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में है जो अगली पीढ़ी को मार्ग दर्शन देने की कृपा करने का प्रतीक है।

इस चित्र को देखकर लगता है कि संदेश गागर में सागर भर दिया गया है। सर्व विदित है कि यदि वर्तमान के ज्ञान एवं अनुभव को अगली पीढ़ी को न बताया जावे, तो अगली पीढ़ी शून्य से शुरू करेगी और पूर्व में प्राप्त ज्ञान को ही पुनः प्राप्त करने में अनमोल समय व श्रम बेकार जाएगा। इसे ही बचाने और नई खोज व नए अनुभव प्राप्त करने के लिए नई पीढ़ी को पूर्व का ज्ञान व अनुभव विरासत में मिल जाने से काफी आसानी हो जाती है। ज्ञान प्राप्त करने के तरीके का भी वर्णन चित्र में स्पष्ट है। ज्ञान लेने वाले को छोटा और देने वाले को बड़ा माना जाता है। इसलिए नई पीढ़ी के धनी व सामान्य वर्ग के नवयुवको को बैठे हुए अनुभवी ज्ञानी के सामने करबद्ध खड़े हुए दर्शाया गया है। कृपा पाने के लिए छोटा बनना और बड़ो का सम्मान करना परम आवश्यक है। विद्वानों अनुभवियों का सम्मान करना हमारी संस्कृति है। ज्ञान प्राप्त करने की स्थिति में उच्च वर्ग या मध्यम वर्ग एक समान हैं। बिना ज्ञान और कार्य क्षमता बढ़ाये हमारे जीवन में सम्पन्नता नहीं आ सकती। चित्र को गौर से देख पर परस्पर व्यवहार करें व परमात्मा से प्रार्थना कर ज्ञान शक्ति व सामर्थ्य प्राप्त करें। तो हमारी व उद्यौगों की एवं राष्ट्र की उन्नति निश्चित होगी। आचरण के द्वारा धारण करके आज की गई उपासना को विश्व में कर्म रूप में व्याप्त परमात्मा (विश्वकर्मा) अवश्य कृपा करेंगे व यही सच्ची पूजा सार्थक होगी।●

वैदिक साहित्य में विश्वकर्मा का स्थान

विश्वकर्मा कुल गौरव
- आचार्य रामज्ञानी आर्य -
लार चौक, जनपद-देवरिया (उ.प्र.)
चलभाष: ९९५६३२६७५६

वैदिक वाङ्मय में विश्वकर्मा शब्द का व्यापक अर्थ है। यह शब्द गुणवाचक है व्यक्तिवाचक नहीं। अत: शब्द से किसी निश्चित विश्वकर्मा का ज्ञान न हो कर अनेक विश्वकर्माओं का ज्ञान होता है। तद्यथा-सृष्टि रचयिता परमपिता परमात्मा, शिल्पशास्त्र के आविष्कर्त्ता व सर्वश्रेष्ठ ज्ञाता ऐतिहासिक महापुरुष विश्वकर्मा तथा सूर्य, वायु, अग्नि, पृथ्वी व वाणी आदि जड़ चेतन रूप में अनेक विश्वकर्मा हैं।

विश्वकर्मा वेद का शब्द है। यह वेद से लेकर ही लोक में प्रयुक्त हुआ। हमें दशरथनन्दन राम, योगिराज कृष्ण व शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा आदि महापुरुषों का मानवीय इतिहास इतिहासादिक ग्रन्थों में ही ढूंढना चाहिए, वेद में नहीं।

वेद के विश्वकर्मा शब्द से ज्ञान, परमपिता परमात्मा, उसके द्वारा सूर्य, वायु, अग्नि आदि विश्वकर्मा व ऐतिहासिक महापुरुष शिल्पशास्त्र के ज्ञाता विश्वकर्मा ये समस्त ही विश्वकर्मा हमारे जिज्ञास्य हैं हम इन्हें जानने का समूचित प्रयत्न करें। निरुक्तकार महर्षि यास्क विश्वकर्मा शब्द का यौगिक अर्थ लिखते हैं। "**विश्वानि कर्माणि येन यस्य वा स विश्वकर्मा अथवा विश्वेषु कर्म यस्य वा स विश्वकर्मा, विश्वकर्मा सर्वस्व कर्ता**" जगत् के सम्पूर्ण कर्म जिसके द्वारा सम्पन्न होते हैं अथवा सम्पूर्ण जगत् में जिसका कर्म है वह सब जगत् का कर्ता विश्वकर्मा है। विश्वकर्मा शब्द के इस यथार्थ अर्थ के आधार पर विविध कला कौशल के आविष्कारक यद्यपि अनेक विश्वकर्मा सिद्ध हो सकते हैं। तथापि सर्वाधार सर्वकर्ता परमपिता परमात्मा ही सर्व प्रथम विश्वकर्मा हैं। एतेरेय ब्राह्मण ग्रन्थ के मतानुसार '**प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा विश्वकर्माऽभवत्**' प्रजापति परमेश्वर प्रजा को उत्पन्न करने से सर्वप्रथम विश्वकर्मा है। वेद में परमेश्वर के विश्वकर्तृव्य अद्भुत व मनोरम चित्रण विश्वकर्मा नाम लेकर अनेक स्थानों पर किया गया है। सृष्टि का मुख्य निमित्त कारण परमात्मा ही है। वही सब सृष्टि को प्रकृति से बनाता है जीवात्मा नहीं। इस कारण सर्वप्रथम विश्वकर्मा परमेश्वर है। परमेश्वर ने जगत् को बनाने की सामग्री प्रकृति से सृष्टि की रचना की है एतद्विष्यक निम्नलिखित मंत्र द्रष्टव्य है।

किं स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत् ।
यतो भूमिं जनयन्विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षा।

(ऋ. १०/सू ०८१/मं. २)

अर्थात् - जगत् को उत्पन्न करने में कौन सा अधिष्ठान था। इसे आरम्भ करने का कौन सा मूल उपादानकारण जगत् को बनाने की सामग्री थी कि जिससे विश्वकर्मा परमेश्वर ने भूमि और द्यौलोक को अत्यंत कौशल से उत्पन्न किया। सर्वदृष्टा परमेश्वर ही अपने महान् ज्ञानमय सामर्थ्य से प्रकृति को गति देकर विकसित करके सृष्टि की रचना करता है। उसके विश्वकर्मत्व को देख कर बड़े-बड़े विद्वान आश्चर्य करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी परमेश्वर की सृष्टि रचना का वर्णन सत्यार्थ प्रकाश में निम्नलिखित शब्दों में करते हैं।'**देखो! शरीर में किस प्रकार की ज्ञानपूर्वक सृष्टि रची है कि विद्वान लोग देखकर आश्चर्य मानते हैं। भीतर हाड़ों का जोड़, नाड़ियों का बंधन, मांस का लेपन, चमड़ी का ढक्कन, प्लीहा, यकृत, फेफड़े, पंखा, कला का स्थापन जीव का संयोजन शिरोरूप मूल रचन, लोभ नखादि स्थापन, आंख की अतीव सूक्ष्म शिरा का तारवत् ग्रन्थन, इन्द्रियों के मार्गों का प्रकाशन, जीव के जागृत, स्वप्न, सुषुप्ती अवस्था के भोगने के लिए स्थान विशेषों का निर्माण, सब धातु का विभागकरण, कला, कौशल, स्थापनादि अद्भुत सृष्टि को बिना परमेश्वर के कौन कर सकता है? इसके बिना नाना प्रकार के रत्नधातु से जड़ित भूमि, विविध प्रकार वटवृक्ष आदि के बीजों में अतिसूक्ष्म रचना, असंख्य हरित, श्वेत, पीत, कृष्ण चित्र मध्यरूपों युक्त पत्र, पुष्प, फल, अन्न, कदन्मूलादि रचना। अनेकानेक क्रोड़ों भूगोल, सूर्य चन्द्रादि लोक निर्माण, धारण, भ्रमण, नियमों में रखना आदि परमेश्वर के बिना कोई भी नहीं कर सकता।**' इस प्रकार वेद व सृष्टि की रचना का अद्भुत सामर्थ्य केवल परमेश्वर का है, इसलिए सर्वप्रथम विश्वकर्मा वहीहै। परमेश्वर के अनन्त गुण, कर्म, स्वभाव होने से उसके विश्वकर्मा नाम की भांति सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु व सृष्टिकर्ता आदि अनन्त नाम हैं, किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है यह ध्यान रखना चाहिए।

विश्वकर्मा परमेश्वर ने जगत् में अनेक पदार्थ रचे हैं। उन पदार्थों में परमेश्वर ने जितने-जितने दिव्यगुण स्थापित किए हैं। उतने-उतने ही दिव्यगुण हैं न उसके अधिक और न न्यून। उन दिव्य गुणों के द्वारा विश्व में अपना-अपना कर्म करने से अग्नि, सूर्य आदि जड़ पदार्थ भी विश्वकर्मा कहलाते हैं। शतपथ ब्राह्मणग्रन्थ में **विश्वकर्मायमग्निः** वाक्स से अग्नि को विश्वकर्मा कहा है। गोपथ में **असो वै विश्वकर्मा योऽसौ सूर्यः तपति**' कह कर विश्व के प्रकाशित करने के कर्म से सूर्य को विश्वकर्मा कहा है। वैदिक साहित्य में इसी प्रकार से वायु, पृथ्वी व वाणी आदि तीनों लोकों के अनेक दैविक पदार्थों को विश्वकर्मा शब्द से व्यक्त किया गया है। हमें इन पदार्थों के दिव्य विश्वकर्मत्व को जानकर विद्या, विज्ञान की वृद्धि करना चाहिए। सृष्टि के आरम्भ काल में मनुष्य के पास नामकरण के कोष के रूप में केवल वेद थे। जिस प्रकार परमेश्वर ने सृष्टि के पदार्थों का नामकरण वेदों से ही शब्द ले कर किए हैं। महर्षि मनु जी का भी यही मन्तव्य है। इसी प्रकार का एक नाम प्राचीन इतिहास में विश्वकर्मा भी है। प्रतीत होता है कि अद्भुत कला कौशल्य के व्यवस्थापक विश्वकर्माजी राजा इक्ष्वाकु के समय में

हुए थे। इसका दिग्दर्शन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अपने इतिहास विषयक आठवें पूना प्रवचन के निम्न शब्दों से होता है। **'स्वायम्भुव'** मनु का पुत्र मरीचि यह प्रथम क्षत्रिय राजा हुआ। इसके पश्चात् हिमालय के प्रदेश में छह क्षत्रिय राजाओं की परम्परा हुई। अनन्तर इक्ष्वाकु राजा राज्य करने लगा। कला कौशल्य की व्यवस्था करने वाला विश्वकर्मा नामक एक पुरुष हुआ। विश्वकर्मा परमेश्वर का भी नाम है और एक शिल्पकार का भी था। अस्तु विश्वकर्मा ने विमान की युक्ति निकाली। फिर विमान में बैठ कर आर्य लोग इधर-उधर भ्रमण करने लगे। मानव जाति के पूज्य शिल्प प्रजापति विश्वकर्मा जी शिल्पशास्त्र के अविष्कर्ता व ज्ञाता थे। भारत के वास्तु कला के ज्ञाता, शिल्प कला के विद्वान, पण्डित, इन्जीनियर आदि इन्हें अपना आदर्श व शिल्प विद्याजगत् में अपना आदि पुरुष मानते हैं। जो ऐतिहासिक दृष्टि से सत्य है। वे विमान आदि की युक्ति निकालकर शिल्पविद्या के प्रथम आविष्कारक बने। प्रतीत होता है कि तदनन्तर विश्वकर्मा शब्द उपाधि के रूप में प्रयुक्त होने लगा। जो नवीन-नवीन शिल्प विद्याओं के आविष्कारक महान् विद्वान विशेष दक्ष होते थे वे विश्वकर्मा पदवी को धारण करते थे। लंका का निर्माण व पांडवों का सभागार विश्वकर्मारचित है, किन्तु समय की दूरी से निश्चित ही ये विश्वकर्मा पृथक-पृथक हैं। जिन भुवनपुत्र मंत्रदृष्टा ऋषि ने विश्वकर्मा विषयक मंत्रों का दर्शन करने पर अपना नाम भी तदनुरूप विश्वकर्मा भौवनः रख लिया वे मंत्र दृष्टा विश्वकर्मा, ऐतिहासिक शिल्पी विश्वकर्मा जी से पृथक हैं। इस प्रकार सृष्टि रचयिता विश्वकर्मा परमात्मा, उसके द्वारा रचित सूर्य और दैविक पदार्थ व ऐतिहासिक शिल्पी विश्वकर्मा को पृथक-पृथक समझते हुए शिल्पी विश्वकर्मा के शिल्प कौशल से शिक्षा लेकर विद्वानों को जगत् में शिल्पविद्या की वृद्धि करना चाहिए।●

समाज का गौरव शिल्पी वर्ग

जांगिड कुलभूषण- **रामफलसिंह आर्य**
वरि. उप प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्र.
सुन्दरनगर, जनपद-मण्डी
चलभाष- ०९४१८४७७७१४

विचित्रता एवं विविधता से परिपूर्ण यह धरा और इसका अद्‌भुत सौन्दर्य जिसमें प्रकृति की हरियाली पट्टिका, कल-कल, छल-छल के निनाद से गुंजित अमृत रूपी शीतल जल से पूर्ण नदियां, घनघोर गर्जन के साथ अपनी असिमित शक्ति और विशालता का प्रदर्शन करती समुद्र की अथाह जलराशि, अमूल्य ओषधिनिधि के संयोजे हुए अनेक पुष्पों, फलों के विशाल कोष के स्वामी ये वन, विशाल पर्वतों की कुक्षि में किसी अल्हड़ की भांति क्रीड़ा करते हुए अपने गान से मन को मोह लेने वाले झरने, संगीत की लहरियां छेड़ते एवं स्वच्छन्दता, उन्मुक्तता का अमिट सन्देश देती विहंगों की कतारें, धरणी के प्रहरी की भांति खड़े गगनचुम्बी पर्वत, सम्पूर्ण विश्व को अपने रंगों में रंगने वाली प्रातः एवं सायंकाल के भुवन भास्कर की लालिमा, वनस्पति जगत के विश्व को अपने रंगों में रंगने वाली प्रातः एवं सायंकाल के भुवन भास्कर की लालिमा, वनस्पति, जगत् के तिनके-तिनके में रस का संचार करने वाली चन्द्रिका का सौन्दर्य यह भी सभी कुछ अर्थहीन रह जाता यदि जगत् पिता जगदिश्वर अपनी इस कृति के स्वामी के रूप में मनुष्य को जन्म न देता। वह मनुष्य ही क्या मनुष्य बन पाता यदि परम दयालु ईश्वर उसके मस्तिष्क रूपी प्याले में अपनी ज्ञान रूपी वेद की ज्योति को न जगाता। वह वेद ज्ञान भी क्या ज्ञान होता यदि उसमें इस सृष्टि के कण-कण से उपयोग लेकर इसमें क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने हेतु शिल्प विद्या का उपदेश न होता और वह शिल्प विद्या यूं ही गुप्त सुप्त अवस्था में पड़ी रहती यदि अपने कठिन श्रम, साधन और तपस्या के द्वारा मानव मात्र के दुःख हरण हेतु, प्रत्येक लौकिक एवं पारलौकिक सुख साधन हेतु धरा के वे आदरणीय, वन्दनीय एवं स्मरणीय शिल्पी जन परमात्मा की वाणी को ज्ञान को मूर्त रूप देने का कार्य न करते।

प्रिय पाठकगण! आपको अब कुछ-कुछ अनुमान उन लोगों का, उनके पुरुषार्थ का, मानव सभ्यता को उनकी देन का हो रहा होगा जो उसे बिलकुल जंगली जीवन से निकाल कर सभ्यता के शीर्ष तक ले आए। यदि आपको तनिक सा भी अनुमान हो गया हो तो एक बार श्रद्धा से अपने शीश को उनके चरणों की ओर झुका दीजिए। कृतज्ञता से उनका धन्यवाद कीजिए। मानव मात्र के कल्याणार्थ जिन लोगों ने न दिन देखा न रात, बस इसी धुन में लगे रहे कि वेदों में बीज रूप में, संकेत रूप में विश्व विधाता द्वारा दिए गए उपदेश को मूर्त रूप देकर सबको सुख पहुंचाया जाए। मानवता के परम हितैषी, विद्या के उपासक, विज्ञान के साधनकर्ता इन लोगों ने कितना श्रम किया होगा। कितनी तपस्या की होगी उसका अनुमान तनिक इस बात से लगाइये कि सृष्टि के आरम्भ में जब कुछ भी मनुष्य द्वारा निर्मित नहीं था, केवल प्रकृति द्वारा प्राप्त प्राकृतिक साधन ही उसके निर्वाह हेतु उपस्थित थे, भवन न थे, यन्त्र न थे, वस्त्र न थे, विभिन्न प्रकार के उपकरण न थे, यातायात के साधन न थे, निष्कंटक एवं सीधे मार्ग न थे। था तो नितान्त जंगल का जीवन और आने वाले समय के लिए चुनौतियों से भरा हुआ कठिन संघर्ष। उस प्रारम्भिक जीवन में दीर्घ काल तक मनुष्य का अस्तित्व भला किस प्रकार से सुनिश्चित किया जा सकता था, इसकी कल्पना भी आपके अन्दर एक सिहरन उत्पन्न कर देगी। धन्य है प्रकृति की प्रत्येक विघ्न बाधा का सामना करने वाले उन शिल्पियों को जिन्होंने सभी समस्याओं को दूर करने का बीड़ा उठाया और वेद ज्ञान का साक्षात्कार करके सब साधनों को विकसित किया। धीरे-धीरे जीवन सरल हो गया और आज हम इस स्थिति में पहुंचे। मैंने इसीलिए कहा कि उन्हें नमन कीजिए, उन देवों का सम्मान कीजिए। यह केवल मेरा मन्तव्य नहीं, अपितु स्वयं वेदमाता इनका गुणगान करते हुए गा रही है :-

अनश्वो जातो अनभिरूक्थ्यो रथस्त्रिचक्रः परिवर्तते रजः।
महत्तद्वो देव्यस्य प्रवाचनं द्यामृभवः पृथिवीं यच्च पुष्यथः॥
(ऋ.४/३६/१)

ऋभवः- हे रथ बनाने वाले मनुष्यों! आपका कार्य परम प्रशंसनीय है, क्योंकि **रथः**- आपका बनाया हुआ रथ रज+**परिवर्तते**= आकाश में भ्रमण करता है। वह रथ कैसा है **अनश्व जातः** = बिना घोड़े का पुनः **अनभीशु**= प्रग्रहरहित अर्थात् लगामरहित **उक्थ्यः** =प्रशंसनीय चित्रक्रः= तीन पहिया युक्त ऐसा रथ आपने तैयार किया है, इस हेतु वः= आप लोगों का **देव्यस्य प्रवाचनम्** = दिव्य आश्चर्ययुक्त कर्म का प्रख्यात करने वाला तत् +**महत**= वह महान् कार्य है **यतः** = जिस कर्म से आप धाम् + **पृथिवी पुष्यथ**= अन्तरिक्ष और पृथ्वी दोनों को पुष्ट करते हैं, अर्थात् आपके बनाए विविध प्रकार के रथ पृथ्वी और आकाश दोनों में व्यापक हो रहे हैं। इस हेतु आप पूज्य हैं।

रथं ये चक्रुः सुवृतं सुचेतोऽविह्वरन्तं मनसस्परि ध्यया।
तां उ न्वस्य सवनस्य पीतये आ वो वाजा ऋभवो वेदयामसि॥
(ऋ.४/३६/२)

ये+सुचेतसः=जो बढ़ई शुद्धचित्त होकर **मनसः+परि+ध्यया**=मन के ध्यान से **सुवृतम्** =सुन्दर गोल **अविह्वरन्तम्** = टेढ़ा नहीं, किन्तु सीधा **रथम्** +**चक्रुः** = रथ बनाते हैं **वाजाः+ऋभवः**=हे विज्ञानी तक्षाओं (खातिओं)! **तान्+उ+वः**= उन सब लोगों को **अस्य+सवनस्य+पीतये** = इस सोम यज्ञ में खाने-पीने के लिए **आवेदयामसि** = निमन्त्रण देते हैं।

तद्वो वाजा ऋभवः सुप्रवाचनं देवेषु विभ्वो अभवन्महित्वनम्।
जिव्री यत्सन्ता पितरा सनाजुरा पुनर्युवाना चरथाय तक्षतः॥
(ऋ. ४/३६/३)

हे वाजाः+ ऋभवः= हे विज्ञानी तक्षाओं (खातिओं)! आप लोग **विभ्वः**= विभ् = बड़े शक्तिमान हैं। इस हेतु **वः**= आप लोगों का **तत्** + **महित्वनम्** =वह माहात्म्य **देवेषु**= परम विज्ञानी पुरुषों में **सुप्रवाचम्** + **अभवत्** = कथन योग्य हुआ, अर्थात् परम विज्ञानी पुरुषों के समाज में भी आपके गुणों की चर्चा होती रहती है। कौन-सा वह कर्म है, उसे कहते हैं आपके **पितरौ**= माता-पिता **जिव्री**= वृद्ध और संनाजुरा+ **सन्ता**= अत्यन्त जीर्ण होने पर भी **चरथाय**= स्वच्छन्द विचरण करने के लिए **पुनः**+ **युवानौ**+ **तक्षथ**= उनको आप पुनः युवा बनाते हैं, अर्थात् अत्यन्त वृद्ध होने पर भी वे आपके द्वारा बनाए गए यान से सुगमतापूर्वक आ जा सकते हैं। यत् = यह जो आपका कार्य है वह प्रशंसनीय है। आगे भी इसी सूक्त में मन्त्र ४,६,७ में तक्षाओं की (बढ़ईयों की) बहुत प्रशंसा की गई है। उनके लिए धीर, कवि और विपश्चित (विद्वान) शब्दों का प्रयोग किया गया है। ऋ. १०/३९/१४ में भी उनके श्रेष्ठ कार्यों के लिए उनकी स्तुति की गई है। ऋ. १०/५३/१० में उनके द्वारा वाशी (अस्त्र-शस्त्र) और दुर्ग आदि को बनाने का वर्णन करके उनको मान सम्मान से पुकारा गया है। ऋ. १०/५३/९ उनके द्वारा परशु, खाने पीने के बर्तन, अर्थव. १४/१/५३ में सुन्दर वस्त्र, ऋ.१/२०/२ में शिशुओं के खिलौने, अथर्व. ५/३१/८ में कूप का निर्माण एवं उसका रखरखाव अथर्व. १४/२/६५ में कुर्सी आदि, ऋ. २/४१/५ में सहस्त्रों खम्भों से युक्त अट्टालिकाएं, ऋ. ४/३०/२० में प्रस्तर निर्मित सौ पुर, ऋ. ७/३/७ में लोह निर्मित अनेक नगर ऋ.१/११६/३ में समुद्र यात्रा हेतु दिव्य नौका, ऋ. १/११६/४ एवं ५ में विचित्र सुखदायी नौका आदि बनाने का वर्णन कर तक्षाओं-खातियों, शिल्पियों की बहुत प्रशंसा की गई है।

जब स्वयं वेदमाता भी उनके गौरव से गुंजित हो रही है तो इससे

ऋषि भक्तों के नाम अनुरोध पाती

आओ सब मिल अलख जगायें।
ईश्वर की वाणी वेद नाद गुंजाएं।
वैदिक धर्म ज्ञान घर-घर, दुनिया भर पहुंचायें।
ऋषि सन्देश 'वेदों की ओर लौटो' जन-जन तक पहुंचाये।
जग में व्याप्त अन्धविश्वास पाखण्ड मिटायें।
'कृण्वन्तों विश्वमार्यम्' सार्थक कर जीवन सफल बनायें
विश्व में सुख-शान्ति की स्थापना कर हर्षायें।
सशक्त माध्यम 'वैदिक संसार' के सदस्य बनायें।

ऋषि भक्त आर्य बन्धुओं

सादर नमस्ते,

सादर अनुरोध है कि अन्धविश्वास-पाखण्ड एक विकराल समस्या के रूप में सर्वत्र हाहाकार मचा रहा है। वेदज्ञान विहिन मूर्ख गुरु-चेलों की बाढ़ आई हुई है। लोभी गुरु-चेले पाथर की नाव बैठे स्वयं तो डूबने को आतुर हैं, किन्तु साथ में संसार को डूबा रहे हैं, क्योंकि वेदज्ञान के प्रकाश का अभाव होकर अन्धकार जो सर्वत्र व्याप्त हो रहा है ऐसे में हम ऋषि भक्तों का दायित्व कुछ अधिक ही बढ़ जाता है, क्योंकि हम ऋषि ऋण के ऋणी हैं। वीरासत में प्राप्त ऋषि अभियान 'वेदों की ओर लौटो' को सार्थक हम नहीं करेंगे तो कौन करेगा? अतः कुम्भकर्णी निद्रा को त्यागो और अपने-अपने जिले में ८-१० साथियों की मण्डली तैयार करो और सम्पूर्ण जिले का स्थान-स्थान पर भ्रमण जन-सम्पर्क कार्यक्रम बनाओ। वैदिक संसार सदस्यता अभियान चलाओ, त्रैवार्षिक सदस्य मात्र ५०० रुपए में बनाओ।

अपने किसी बन्धु के पास वाहन हो तो ईंधन व्यय हम वहन करेंगे। वाहन नहीं हो तो किराए पर ले लो व्यय हम वहन करेंगे, किन्तु कार्य हो तो श्री आदित्य प्रकाश जी गुप्त प्रधान आर्य समाज खेड़ा अफगान के जैसा जिन्होंने जिले के भ्रमण का किए बगैर ही सहारनपुर जिले की सदस्य संख्या लगभग १७५ पर पहुंचा दी। जिस दिन जिले के भ्रमण का कार्यक्रम बनाएंगे उस दिन ज्यादा नहीं तो कम से कम ५०० सदस्य वैदिक संसार के सहारनपुर जिले में होंगे।

इच्छुक महानुभावों का स्वागत है। प्रचार पत्रक वैदिक संसार की प्रतियों, बैनर, रसीद बुक, सदस्य अभियान हेतु अनुमति अधिकार पत्र आदि के लिए सम्पर्क करें।

- सुखदेव शर्मा-
प्रकाशक- वैदिक संसार, इंदौर (म.प्र.)
चलभाष-९४२५०६९४९१

बढ़कर भला और क्या गुणगान किया जाए? परन्तु अरे, यह परन्तु बड़ा भयानक शब्द है कहां से उठ आया? हम तो ईश्वरीय वाणी पर मुग्ध होकर किसी और ही लोक में विचरण करके प्रसन्न हो रहे थे। इस परन्तु ने तो सारी धारा ही उलट दी। परन्तु क्या करें, वास्तविकता बड़ी कष्टप्रद है। कहां उन परम बुद्धिमानों, धीमानों ने वेद विज्ञान के साक्षात्कर्ताओं ने समाज कल्याण के महान् कार्यों को करके सबके सिरों के ऊपर छतें डालीं लोगों को दस्युओं, आक्रान्ताओं लुटेरों से रक्षा हेतु अनेकों आयुधों का निर्माण कर उन्हें सुरक्षित जीवन प्रदान किया, आने जाने के दुर्गम एवं कटंकाकीर्ण मार्गों को पार करने के लिए सुन्दर यान बनाये, मार्गों का निर्माण किया, गगनचुम्बी अट्टालिकाओं एवं दुर्भेद्य दुर्गों का निर्माण किया, सोने, बैठने कार्य करने हेतु सब साधन सरलता, सहजता से उपलब्ध करवाये, शान्तिपूर्वक बैठ कर लोग अपनी पूजा उपासना कर सकें इसलिए भव्य मन्दिरों का निर्माण किया। जिनको पूज्य मानकर सब लोग कभी सत्कार किया करते थे, आज उन्हें नीच समझा जाता है!! मेरे विचार में इससे अधिक कलुषित एवं कलंकित अध्याय किसी अन्य देश के इतिहास में न मिलेगा। हमारे देश के पतन में इस पामर विचारधारा का बहुत बड़ा भाग रहा है। तनिक विचार करके देखिये जो लोग आपके जीवन को सरल, सुखी, समृद्ध एवं वैभवशाली बनाने के लिए दिन रात लगे रहे उन्हें ये समाज अस्पृश्य मान कर घृणा करे, तिरस्कार की भावना से देखें और उन्हें अपमाननित करे इससे बढ़कर विनाश की ओर जाने का भला कौन सा दूसरा मार्ग होगा। जो समाज ऐसी कुत्सित विचारधारा से ग्रसित हो उसका पतन निश्चित था, हो हुआ। एक बार विचार करके देखो तो सही कि यदि आपके सिर पर छत न हो तो आप अपना जीवन निर्वाह कैसे करेंगे? आपका रहना, बैठना, सोना, विश्राम करना कैसा हो जाएगा? अरे चौंक गए क्या? श्रीमान् जी यह तो केवल एक सुविधा की बात कही है। यदि विश्वकर्माओं के अन्य उपकारों से भी आप को वंचित कर दिया जाए तो आपके पास सभ्य कहलाने योग्य, जीवन के निर्वाह करने योग्य कुछ भी शेष न रहेगा और सारी अकड़ धरी की धरी रह जाएगी।

आज भले ही ही इनके नाम परिवर्तित हो गए हैं जहां पहले इन्हें शिल्पी, तक्षा, बढ़ई, खाती, विश्वकर्मा कहा जाता था, वहीं आज इन्जीनियर कहा जाने लगा है, परन्तु काम तो वही है जो पहले करते थे, आश्चर्य है कि युगों-युगों से अभियान्त्रिकी का कार्य करने वाले नीच और अपने सन्तानों को वही पढ़ाई करने हेतु लाखों रुपए व्यय करके भेजने वाले कुलीन? यह कैसा न्याय है, कहां की व्यवस्था है? आश्चर्य! घोर आश्चर्य! वेद मन्त्र में वर्णित उपदेशानुसार जिनकी अग्र पूजा की जानी चाहिए थी, बड़े-बड़े समारोहों में निमंत्रित करके अत्यन्त श्रद्धा से जिनका सम्मान किया जाना चाहिए था, पूरे समाज को जिनके उपकार मान कृतज्ञ होना चाहिए था उनकी यह दुर्दशा? उन्हें नीच समझा जाए और अपमान किया जाए? यदि वेदानुसार प्रजा का पालन करने वाला कोई शासक इस समय होता तो इन शिल्पियों का अनादर करने वालों को क्या दण्ड देता, कल्पना कीजिए। आधुनिक युग के बड़े-बड़े चमत्कार जिस धरातल पर खड़े हुए हैं वे भी सफलीभूत न होते यदि हमारे अग्रजन्मा विश्वकर्माओं ने इस विद्या को जीवित न रखा होता। आज के युग में हम जिन प्राचीन दुर्गों, मन्दिरों, महलों एवं अन्य संरचनाओं को देखकर आश्चर्य चकित रह जाते हैं, सहस्त्रों वर्षों से जिन्हें कोई संभालने वाला नहीं है फिर भी वे गर्व से अपना शीश ऊंचा किए खड़े हैं। इतना ही नहीं जिन भवनों को विदेशी आक्रान्ताओं द्वारा अत्याधिक क्षति पहुंचाई गई है उन्हें खण्डित किया गया है, परन्तु जो अवशेष हैं वे फिर भी भूकम्प, तूफान एवं वर्षा, आंधी आदि को सहन करते हुए ज्यों के त्यों खड़े हैं, क्या आपने कभी विचार किया कि इनका निर्माण करने वाले वे हाथ कितने पवित्र और कितने सशक्त रहे होंगे? हम प्रायः रचना को देखकर तो मुग्ध होते हैं और रचनाकार को भूल जाते हैं। यह तो एकांगी दृष्टिकोण है।

आधुनिक युग के महान ऋषि, तत्ववेता, मानव मात्र के हितैषी वेदों के बहुत उच्च कोटि के प्रकाण्ड पण्डित, योगिराज, देव दयानन्द जी महाराज ने इन शिल्पियों के कार्य का मूल्यांकन ठीक-ठीक किया और उसकी भूरी- भूरी प्रशंसा की। आप ऋषिवर का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ करके देखिये, उनका वेद भाष्य पढ़ कर देखिये। एक नहीं अपितु अनेकों स्थानों पर शिल्पी वर्ग का गुणगान मिलेगा। यह सत्य बात है कि जो कोई भी निष्पक्ष होकर, बुद्धिपूर्वक विचार करेगा वह इस बात से कभी मना नहीं कर सकता कि बिना शिल्पी वर्ग के किसी उन्नतिशील समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वास्तव में श्रेष्ठ ब्राह्मण, श्रेष्ठ रचनाकार यह शिल्पी वर्ग ही है। जो अपनी परम्परा से निर्माण एवं कौशल का यह कार्य करते आए हैं। **जिन्होंने अपने निर्वाह के लिए कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया, अपितु स्वयं ही अपने लिए साधन उपस्थित किए और अपने स्वाभिमान को सुरक्षित रखा। परिश्रम जिनका धर्म हो, लोक कल्याण ही जिनका साधना हो, स्वाभिमान जिनका कोष हो, सरलता एवं सादगी जिनके आभूषण हो, नए-नए आविष्कार ही जिनके दान हों, क्या उनसे भी बड़ा कोई ब्राह्मण हो सकता है? श्रेष्ठ एवं सच्चे ब्राह्मणों का मान सम्मान करने वाला यह समाज जब तक वेदानुसार अपने जीवन को चलाता रहा तब तब यह देश विश्व का गुरु और सोने की चिड़िया बना रहा।** स्मरण रखिये कि जो लोग दिन रात इसी प्रयत्न में लगे हैं कि किस प्रकार से वे अधिक से अधिक लोगों के जीवन को अधिक से अधिक सरल सुखी एवं सम्पन्न बनाएं वे कभी नीच नहीं होते। नीच तो वे होते हैं वे लोग जो उनके द्वारा प्रदत्त साधनों का सतत प्रयोग करते हुए भी उनकी निन्दा करते हैं। कृतघ्न हैं वे लोग जो उनके उपकारों के बदले उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते हैं. अरे भाई ये लोग तुम्हारे लिए एक-एक ईंट जोड़ कर घर बना देते हैं, तुम्हारे सोने के लिए सुन्दर पलंग बना देते हैं, कार्य करने के लिए मेज एवं कुर्सियां बना देते हैं, खेतों से अन्न उत्पन्न करने के लिए अनेक कृषि उपकरण बनाते हैं, आवागमन के, यातायात के अनेक साधन बनाते हैं, युद्ध के लिए विचित्र आयुध बना देते हैं, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोग में आने वाले यन्त्र बना देते हैं, सरपट दौड़ती गाड़ियों के लिए उच्चमार्गों का निर्माण करते हैं, बड़े-बड़े जलाशयों पर पुल बांध कर लोगों को पार करवा देते हैं। आदि-आदि न जाने कितनी योग्यता इनके अन्दर भरी पड़ी है। **शेष भाग पृष्ठ ३२ पर**

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन हेतु महत्वपूर्ण सुझाव

- श्रुति भास्कर -
धार्मिक प्रवक्ता एवं साम गायनाचार्य
सहारनपुर (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२७४२५५७

दिनांक २६, २७, २८ अक्टूबर-२०१८ को होने वाले आर्य महासम्मेलन के सभी पदाधिकारियों एवं आयोजकों से अनुरोध है कि आर्य महासम्मेलन के वास्तविक लक्ष्य सत्य, विश्वास एवं सत्य विचार के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ राष्ट्रगत राजनीति को बढ़ावा देते हुए निम्नलिखित विषयों की चर्चा अवश्य करें एवं इसके क्रियान्वयन हेतु प्रस्तावित योजनाओं एवं सुझावों से देश की जनता एवं शासक वर्ग एवं राजनेताओं को अवगत कराएं एवं देश की जनता को जागरूक करें तथा **"बयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहितों"** वेद मंत्र को चरितार्थ करते हुए भविष्य में सबल एवं सिरमौर राष्ट्र बनाने में अपना योगदान करें।

१. धर्म, धर्मपरिवर्तन एवं धर्म निरपेक्ष इन शब्दों की सही व्याख्या राष्ट्रहित एवं जनहित में करना अति आवश्यक है। चूंकि धर्म का मतलब है कर्तव्य अर्थात् हमारा कर्तव्य संसार के मालिक परमात्मा के प्रति, राष्ट्र के प्रति, आचार्य-विद्वानों के प्रति, माता-पिता के प्रति, दूसरे लोगों के प्रति एवं प्राणीमात्र के प्रति क्या होना चाहिए। धर्म को केवल पूजा, नमाज तक सीमित रखना सही नहीं है। उपरोक्त के अनुसार धर्म न अनेक है न परिवर्तित होता है।

२. भारत के प्रत्येक नागरिक को चाहे वह किसी भी संप्रदाय मजहब से संबंध रखता हो। एक समान कानून लागू करना मुख्य रूप से परिवार नियोजन यानी एक दंपति के दो या तीन बच्चे, बहू,पत्नी जैसी कुप्रथा को समाप्त कर एक पत्नी का कानून लागू करना एवं सांप्रदायिक या शरीयत के आधार पर राष्ट्र के कानून को न मानना अपराध की श्रेणी में रखा जाए तथा उपरोक्त समान कानून का विरोध करने वाले प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक राजनैतिक पार्टी को सबसे बड़ा सांप्रदायिक पार्टी करार दिया जाए।

३. ड्यूटी के दौरान किसी भी व्यक्ति को रोजा-नमाज के नाम पर, देवी उपासना के नाम पर या अन्य किसी भी पूजा-पद्धति के नाम पर समय से पहले ड्यूटी छोड़कर चले जाना एवं राज्य सरकारों द्वारा रोजा एवं देवी उपासना के नाम पर दो-दो घंटे की छूट देना अनुचित एवं गलत है, क्योंकि ईमानदारी से कर्तव्य करना सबसे बड़ा धर्म है।

४. नमाज, देवी जागरण या अन्य किसी भी धार्मिक कृत्य के नाम पर सड़क को बाधित करना दंडनीय अपराध माना जाए क्योंकि इससे जनता को भारी परेशानी एवं असुविधा तथा अनावश्यक विलंब जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता है।

५. किसी भी राजनैतिक पार्टी एवं राजनेता द्वारा देश के नागरिकों एवं मतदाताओं को चुनावी सभाओं या अन्य सभाओं, सम्मेलनों में मौखिक या लिखित रूप में धार्मिक एवं पथिक आधार पर, जाति एवं वर्ग विशेष के आधार पर संबोधित न किया जाए अर्थात हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई, जैन, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक, हरिजन, ब्राह्मण,

उदासीन

बढ़ती आयु के साथ इंसान अक्सर
उदासीन हो जाता है।
संसार का हर आकर्षण उसे
निरर्थक नजर आता है।
सौ बार सोचने पर भी उसे
इसका कोई कारण समझ नहीं आता है।
बल्कि इसी उलझन में वह
और आत्म क्रेन्दित होता जाता है।
सम्भव है आयु के इस मुकाम पर
उसे जीवन भर की गलतियां
सामने नजर आ जाती हों।
भूलें असफलताएं चूकें याद आती
और खड़ी मुंह चिढ़ाती हो।
या फिर उसका अपनों से ही
मोह भंग हो जाता हो।
पत्नी, बच्चों परिवारजनों, मित्रों से
स्पष्ट हो जाता स्वार्थ का नाता हो।
जीवन की हकीकत भी शायद
उसे जाहिर हो जाती हो।
मृत्यु की आहट भी सम्भवतः उसे
साफ सुनने में आती हो!

- ओमप्रकाश बजाज
पिपलिया हाना, इंदौर
- चलभाष -
९८२६४-९६९७५

प्रतिक्रिया

बात हमारी मान भी जाओ

आया था जिस काज
उस दिशा में नहीं किया कुछ प्रयास
कहत भाई कबीर सुनों
आए थे हरि भजन को
ओटन लगे कपास
अर्थात् - आया था प्रभु प्राप्ति को
गंवा दिया विलक्षण अवसर को
साधन को बनाया ता साध्य
और साध्य को भूला दिया।
आया था खाली हाथ
कर्मफल बांधे साथ
अब बांध ली पापों की गठरी साथ
बोझ तले दबा जा रहा
चुग गई चिड़िया खेत
अब पछताये का होत
ले जाने को साथ, कुछ ना कमाया
खाने-पीने में ही व्यर्थ
अनमोल मानव जीवन गंवाया
बात हमारी मान जाओ
नहीं बिगड़ा अब भी कुछ
अब भी जाग जाओ!
समय रहे प्रभु बंशी बजाओ

सुखदेव शर्मा, प्रकाशक वैदिक संसार

क्षत्रिय, दलित, सवर्ण आदि अलगाववादी शब्दों का प्रयोग न करके इसके स्थान पर श्रेष्ठ नागरिकों, सज्जनों, प्यारे भाईयों, बहनों, बुजुर्गों, माताओं, प्यारे मित्रों आदि जोड़ने वाले शब्दों का प्रयोग अनिवार्य रूप से किया जाए। इसका उल्लंघन करने पर राजनेता एवं राजनीतिक पार्टी को अयोग्य करार देने एवं मान्यता समाप्त करने संबंधित कानून लागू हो। राष्ट्र पर आने वाले खतरे को भांपकर राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व का पालन करते हुए हम पुनः आर्य महासम्मेलन के आयोजकों से अनुरोध करते हैं कि उपर्युक्त मुद्दों को प्राथमिकता के तौर पर सम्मेलन में अवश्य सम्मिलित करें।

विशेष- राष्ट्र के सभी श्रेष्ठ एवं जागरूक नागरिकों से हमारा व्यक्तिगत अनुरोध है कि आपसी मतभेद भुलाकर तन-मन-धन के साथ सम्मेलन में सम्मिलित होकर धर्मलाभ उठाएं। ●

पृष्ठ ३० का शेष भाग

समाज का गौरव ...

हम इन तथाकथित ब्राह्मणों एवं अपने को कुलीन मानने वालों अन्य लोगों से पूछते हैं कि भी आप लोग क्या करते हो? तो एक ही उत्तर होगा कम केवल उपभोग करते हैं और हमारे वश में कुछ नहीं। हम उस परजीवी पौधे जैसे हैं जो सदैव दूसरों के ऊपर चढ़कर फलता-फूलता है। जिसका अपना कोई मूल नहीं होता। याद रखिये किसी अन्य के द्वारा बनाई गई वस्तु का उपभोग करने वाला कभी इस बात की घोषणा नहीं कर सकता कि वह समाज में सर्वश्रेष्ठ है। सर्वश्रेष्ठ तो वह है जिसने समाज को अधिक से अधिक साध जुटा कर दिये हैं। जो केवल दूसरों के द्वारा उत्पादित वस्तु का उपभोग करता है वह तो पशु के समान है।

इस लेख के माध्यम से मैं अपने विश्वकर्मा भाइयों से कहना चाहता हूं कि आप अपने गौरव को पहचाने अपने स्वाभिमान को ऊंचा उठायें, नित्य कठोर श्रम के द्वारा अपने को समृद्धि से युक्त करते रहें। अपने पूर्वजों की महान तपस्या का स्मरण करते हुए सदैव आगे बढ़ने का प्रयास करते रहें। अपने धार्मिक कार्य कलापों में इन तथाकथित पोंगा पंथियों को बुलाना बन्द करें, अपने बच्चों को यज्ञादि संस्कार करवाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित करें और उन्हें ही सर्वत्र बुलाया करें। इससे आपको कई लाभ होंगे। आपकी सदियों से चली आ रही इस दासता से मुक्ति मिलेगी, आपके बच्चों को मान-सम्मान मिलेगा और उनकी आय का भी प्रबन्ध हो सकेगा। अपने बारे में हीन चिन्तन कभी भूल कर भी मत किया करो। ईश्वर ने आपको समर्थ एवं सशक्त बनाया है। प्रत्येक रविवार को समय निकाल कर किसी भी समीपस्थ आर्य समाज में अवश्य जाया करें। जहां पर आपकी संख्या पर्याप्त हो वहां पर किसी विशेष अवसर पर बड़े-बड़े कार्यक्रम जो एक या दो दिन के हों, आयोजित किया करें। आप देखेंगे कि धीरे-धीरे आपका जीवन बदलने लगेगा, श्रेष्ठ संस्कार जागने लगेंगे। एक और भी निवेदन करना चाहूंगा कि इस कार्य के लिए आपको जहां भी मेरी आवश्यकता हो कृपया अपना सेवक समझ कर अवश्य सम्पर्क करें। यथाशक्ति मैं आपका सहयोग करने का यत्न करूंगा।●

शिक्षक दिवस-५ सितंबर २०१८ पर विशेष प्रस्तुति

शिक्षकों की व्यथा-कथा

१. देश के संविधान के विपरीत और घटिया व्यवहार है कि विद्यालयों में, समान शैक्षणिक योग्यता-समान कार्य किंतु अध्यापकों के वेतन-सुविधाओं में, दस गुने तक का अंतर अभी भी जारी है।

२. समाजवादी-साम्यवादी-दक्षिणपंथी-धर्मनिरपेक्षवादी आदि सभी पार्टियों की सोच लगभग एक जैसी है इसलिए अस्थाई रूप से रखे गए अध्यापकों की सुनने वाला कोई नहीं है, क्योंकि उनकी यूनियनों के नेता शक्तिशाली और दमदार नहीं हैं।

३. जब कभी वे प्रदर्शन करते हैं तो उन्हें पुलिस की लाठियां खानी पड़ती हैं और अनेक घायल भी हो जाते हैं।

४. फिर भी सभी नेता संविधान की सदैव प्रशंसा ही करते हैं जबकि केवल सावरकरवादी ही अपनी शक्ति के अनुसार विरोध करते हैं जिसे मीडियावाले भी प्रकाशित नहीं करते हैं।

५. उदाहरण देखिए-सरकारी सहायता प्राप्त डिगी कॉलेजों के प्रोफेसरों का वेतन एक लाख से ज्यादा प्लस अन्य सुविधाएं। वर्ष में १२ माह का वेतन। समय-समय पर वेतन तथा महंगाई भत्ते में बढ़ोतरी फिर भी संतुष्ट नहीं हैं।

जबकि अस्थाई रूप से रखे गए प्रोफेसरों का वेतन केवल १५ हजार प्लस अन्य सुविधाएं नहीं। वर्ष में १० माह का वेतन। वेतन तथा महंगाई भत्ते में कोई बढ़ेतरी नहीं। मजबूरी में इन्हें ट्यूशन करनी पड़ती है। कहीं-कहीं छात्रों को ट्यूशन पढ़ने के लिए बाध्य भी किया जाता है तब कुल आय इतनी हो पाती है, जिससे परिवार का मासिक खर्च चल सके।

ऐसे प्रोफेसर इस आशा से भी नौकरी कर लेते हैं क्योंकि अनुभव हो जाने पर स्थायी हो जाने की संभावना बन जाती है।

क्लर्कों-चपरासियों का वेतन अस्थाई प्रोफेसरों से ज्यादा रहता है।

यही दशा इंटर कॉलेजों-हाईस्कूलों-जूनियर हाईस्कूलों तथा प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों की है जिसे देखकर दुख होता है। वेतन में अंतर १/१० का अंतर घटाकर १/२ का किया जाए। मैं अस्थाई अध्यापकों-प्रोफेसरों के साथ हूं।

- इन्द्रदेव गुलाटी -

संस्थापक-सावरकरवाद प्रचार सभा

बुलन्दशहर, (उ.प्र.) चलभाष- ०८९५८७७८४४३

दो दिवसीय राष्ट्रीय वैदिक शोध संगोष्ठि सम्पन्न

दिनांक २२-२३ अगस्त २०१८ को उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान द्वारा राष्ट्रीय वैदिक शोध-संगोष्ठि का आयोजन स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, गुरुकुल प्रभात आश्रम (टीकरी), भोला, जिला-मेरठ उत्तरप्रदेश पर किया गया। स्वामी समर्पणानन्द जी के जन्म दिवस पर आयोजित यह संगोष्ठि आठ सत्रों में आयोजित की गई। जिसमें सम्पूर्ण भारतभर के संस्कृतज्ञ विद्वानों द्वारा भाग लिया गया। प्रो. सोमदेव शतांशु, संस्कृत विभागाध्यक्ष गुरुकुल कांगडी के संयोजन में संगोष्ठि सम्पन्न हुई।

२०१९ के आम चुनाव में पूर्ण दम-खम के साथ उतरेगी राष्ट्र निर्माण पार्टी

ठाकुर विक्रम सिंह
अध्यक्ष-राष्ट्र निर्माण पार्टी

समस्त बंधुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज के सिद्धांतों पर चलने का संकल्प लेकर राष्ट्र निर्माण पार्टी २०१९ के संसदीय चुनावों में विभिन्न प्रदेशों में अपने प्रत्याशियों को चुनाव लड़ाएगी तथा उसके बाद होने वाले विधानसभा चुनावों तथा स्थानीय चुनावों में भी भाग लेगी। जो बंधु महर्षि दयानंद के राजनैतिक दर्शन में विश्वास रखते हों, राजनीति में नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठापित करना चाहते हों तथा राजनीति के माध्यम से राष्ट्र रक्षा एवं देश के विकास में सहभागी बनना चाहते हों, वे पार्टी के साथ जुड़कर राष्ट्रोन्नति के पावन उद्देश्य को पूरा करने में सहयोगी बनें। यह एक अवसर है स्वामी श्रद्धानंद व लाला लाजपत राय की शहादत से प्रेरणा लेकर महर्षि दयानंद, सरदार भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल व अशफाक उल्ला खां के अधूरे सपनों को राजनीति के माध्यम से पूर्ण करने का। आओ! हम सब मिलकर संकल्प लें कि जब तक आर्य राष्ट्र का निर्माण नहीं होता, न हम रूकेंगे, न हम झुकेंगे, न हम थकेंगे। हमारा एक ही उद्देश्य होगा-उच्च आर्य राष्ट्र की स्थापना। बस इसी के लिए जीना है तथा इसी के लिए मरना है...

विशाल वैदिक सत्संग

दिनांक - १६ सितम्बर २०१८, समय-सायं ४ बजे से

स्थान- अग्रवाल भवन, शिवानन्द मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर

वैदिक वीरांगना दल जयपुर द्वारा आयोजित उपरोक्त आयोजन में आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती गुरुकुल भवानीपुर, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी कुरुक्षेत्र के प्रवचन तथा श्री वल्लभमुनि जी वानप्रस्थी के भजन प्रस्तुत होंगे।

सम्पर्क - डॉ. अनामिका शर्मा-८१०७९५३८८४

५२वां वार्षिकोत्सव पर ऋग्वेद वृहद यज्ञ तथा ध्यान-योग शिविर

दिनांकः २६ सितम्बर से २ अक्टूबर २०१८ तक

५२वें स्थापना दिवस पर आयोजित आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुगढ़, (हरियाणा) के ५२वें वार्षिकोत्सव अवसर पर ऋग्वेद वृहद यज्ञ तथा नि:शुल्क ध्यान-योग शिविर आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य महिला जागृति सम्मेलन, योग सम्मेलन तथा चरित्र निर्माण सम्मेलन सम्पन्न होंगे।

सानिध्य-पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्याधिष्ठाता

यज्ञ ब्रह्मा- आचार्य अखिलेश्वरजी, हरिद्वार

प्रमुख वक्ता- स्वामी रामानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, डॉ. मुमुक्षु जी-नोएडा, आर्य तपस्वी सुखदेव जी वर्मा-दिल्ली के साथ ही आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा वेद मन्त्र पाठ, वानप्रस्थियों द्वारा प्रवचन तथा भजन-उपदेश होंगे।

आश्रम बस स्थानक के पास दिल्ली रोड पर स्थित है। अधिक से अधिक संख्या में इष्ट मित्रों सहित पधारकर लाभ लेवें, कृपया अपने आगमन की सूचना से अवगत करावें।

निवेदक- राजवीर आर्य (संयोजक)- ९८११७७८६५५

विक्रम देव शास्त्री (व्यवस्थापक) ९८९६५७८०६२, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ जिला- झज्जर हरियाणा ९४१६०५४१९५

दर्शन योग महाविद्यालय में प्रवेश हेतु सूचना

आर्य जगत् के महान योगी स्वामी श्री सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा सन् १९८६ ई. में स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ उच्च स्तर के योग प्रशिक्षकों तथा वैदिक दार्शनिक विद्वानों के निर्माण कार्य में संलग्न है। इस महाविद्यालय में प्रवेश के इच्छुक ब्रह्मचारी शीघ्र सम्पर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता

- प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों (पुरुषों) के लिए।
- आयु- कम से कम १८ वर्ष।
- शैक्षणिक योग्यता- कम से कम १२वीं या समकक्ष।
- व्याकरणाचार्य, शास्त्री या स्नातक को वरीयता।

विशेषताएं

प्रत्येक ब्रह्मचारी को विद्यालय में भोजन, आवास, वस्त्र, आसन, घी-दूध, फल, पुस्तक, चिकित्सा आदि की उत्तम व्यवस्था नि:शुल्क उपलब्ध है। प्रतिदिन व्यक्तिगत उपासना के लिए अवसर उपलब्ध है। प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ, वेद स्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण आदि होता है। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक-वैराग्य, स्व-स्वामी-सम्बन्ध (ममत्व) को हटाना, ईश्वर-प्रणिधान, मनोनियंत्रण, यम-नियम, ध्यान, समाधि आदि विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रतिदिन आध्यात्मिक उन्नति के लिए कुछ घण्टे मौन पालन का अवसर उपलब्ध है।

सम्पर्क हेतु पता-

दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन, रोजड़, पत्रा-सागपुर, ता.-तलोद, जि.- साबरकांठा,
गुजरात- ३८३३०७ फोन- ०२७७०, २८७५१८,
चलभाष- ९४०९४१५०११, ९४०९४१५०१७
E-mail: darshanyog@gmail.com, Web : www.darshanyog.org

परिभ्रमण- हम पहुंचे आर्य नरेश श्री रामचन्द्र जी के ननिहाल

हमने देखी जन मानस में अध्यात्म के प्रति अत्यधिक उपेक्षा, उदासीनता तथा अल्प जागरुकता

गत अंक में पृष्ठ ३८ पर वीरभूमि से देवभूमि तक यात्रा विवरण प्रकाशित किया गया था। इस यात्रा का समापन ९ जुलाई को हुआ। इस यात्रा के मध्य रायपुर के श्री सांवरमल जी शर्मा से सीकर में भेंट हुई थी। आपके पुत्र का विवाह दिनांक २० जुलाई को था। आपने आग्रह किया था कि मैं विवाह में उपस्थित होऊँ। मैं भी कई वर्षों से छत्तीसगढ़ भ्रमण की योजना बना रहा था, क्योंकि वैदिक संसार की पाठक संख्या में छत्तीसगढ़ अत्यन्त दयनीय स्थिति में है। समय सुविधा होने और उचित अवसर जानकर हमें मर्यादा पुरुषोत्तम दशरथ नन्दन आर्य श्री रामचन्द्र जी के ननिहाल जाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया। ऐसी जानकारी प्राप्त होती है कि माता कौशल्या का पैतृक निवास बस्तर क्षेत्र का था। आज भी छत्तीसगढ़ के लोग अयोध्यावासियों को भानजों का सम्मान देते हैं।

दिनांक ९ से १७ जुलाई तक जुलाई माह की पत्रिका का कार्य सम्पादित किया। दिनांक १८ को मध्याह्न इन्दौर से चलने वाली मालवा द्रुतगति लौहपथ गामिनी से धर्म पत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा तथा सुपुत्री कु. भाग्यश्री के साथ भोपाल के लिए प्रस्थान किया। भोपाल से समता द्रुतगति लौह पथ गामीनी में आरक्षण था। भोपाल पहुंचकर शयनयान प्रतिक्षालय में कुछ देर विश्राम किया, पश्चात् शौचादि से निवृत्त हो संध्योपासना की तथा भोजन किया।

दिनांक १९ जुलाई को रायपुर रेलवे स्टेशन पर उतरे। श्री सांवरमल जी शर्मा के साले जिनका नाम भी श्री सांवरमल जांगिड है जो सीकर निवास करते हैं। आपसे मेरी अत्यन्त घनिष्ठता है आप मेरे समाज सेवा क्षेत्र के अभिन्न सहयोगी साथी हैं। आपको सम्पर्क करने पर आपने रेलवे स्टेशन पर वाहन लेने हेतु भेज दिया। रायपुर के टाटीबन्ध क्षेत्र के उदया सोसाइटी में घर पहुंचने पर सभी ने आत्मिय अभिनन्दन किया। हमारे विश्राम की व्यवस्था वर. चि. सम्पत के मित्र के यहां की गई। मित्र के पिता का नाम श्री सरदार मख्तियारसिंह जी हरा है। आप पंजाबी परिवार के हैं। परिवार स्नेहिल तथा शालीन है। आपके निवास के ऊपरी तल पर स्थित कमरों में अतिथियों के विश्राम की व्यवस्था की गई थी। आपने चाय-पानी तथा अन्य आवश्यकताओं के विषय में समय-समय पर जानकर अपनी सहृदयता का परिचय दिया। टाटीबन्ध क्षेत्र में पंजाबी परिवारों की बहुलता है।

१९-२० जुलाई दोनों दिवस आपके यहां विश्राम स्थल होने से वैवाहिक धूमधाम से परे शान्तिपूर्वक यज्ञ तथा सन्ध्योपासना निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो सकी। दिनांक १९ को मामेरा (भात) के आयोजन में सम्मिलित हुए। वरपक्ष खोखा (जांगिड) परिवार द्वारा अतिथियों के विश्राम के साथ-साथ भोजन-जलपान की उत्कृष्ट व्यवस्था अय्यपा मन्दिर के सामने कंवर समाज भवन पर की गई थी। जो आपके निवास तथा विश्राम स्थल से समीप ही था।

दिनांक २० को प्रात नियमित दिनचर्या तथा यज्ञादि से निवृत्त हो महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य वैदिक गुरुकुल टाटीबन्ध पहुंचे, वहां धर्माचार्य श्री संजय जी शास्त्री से भेंट हुई। आपके द्वारा बताया गया कि उपरोक्त गुरुकुल आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ द्वारा संचालित है तथा सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा अतिथि भवन के कार्यालय में बैठे हैं। हम लोग मन्त्री जी से भेंट करने पहुंचे, नमस्ते किया शास्त्री जी ने हमारे विषय में आपको बताया किन्तु कार्यालय में तो स्थान का अभाव था ही आपके हृदय में भी स्थान का अभाव था और नाम चाहे दीनानाथ हो किन्तु आर्यत्व के विषय में हमारी अनुभूति में आप दीन-हीन ही निकले।

गुरुकुल परिसर में पेड़ के परकोटे पर बैठकर शास्त्री जी से गुरुकुल सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की। जो इस प्रकार है- यह संस्था महर्षि दयानन्द आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के नाम से संचालित है, जिसमें अंग्रेजी माध्यम से नर्सरी से १०वीं तक ३०० विद्यार्थी, हिन्दी माध्यम से प्रथम से बारहवीं कक्षा तक ८५० विद्यार्थी तथा संस्कृत माध्यम से कक्षा प्रथम से आठवीं तक १०० विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। मुख्य प्रवेश द्वार के ठीक सामने यज्ञ शाला है, जहां दैनिक यज्ञ तथा साप्ताहिक सत्संग होता है। विद्यालय भवन तीन तल का है, जिसमें ३० कक्षा कक्ष हैं। विद्यालय भवन से हटकर पीछे की ओर दो तल का छोटा सा विद्यार्थी आवास है जिसमें कुछ बालक निवास करते हैं। जिसके प्रबन्धक श्री लोकनाथ आर्य हैं। बालकों को शासन द्वारा प्रदत्त मध्याह्न भोजन योजना का भोजन मिलता है। विद्यालय में प्रिंसीपल श्री विनोदसिंह हैं। आपसे शास्त्री जी ने मिलवाया। हमने आपको पत्रिका की प्रति भेंट की, किन्तु इतने बड़े विद्यालय के प्रिंसीपल के पास वार्तालाप का समय कहां।

स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दयानन्द के चित्र और नाम तो दृष्टिगोचर हुए, किन्तु उन महापुरुषों में जो बात थी, वो कहीं खो गई। यही कारण है कि इस संस्था के ठीक सामने मार्ग के दूसरी ओर जिन लोगों की दासता से मुक्ति का श्रेय महर्षि दयानन्द सरस्वती को है उस सम्प्रदाय द्वारा भारत माता स्कूल संचालित किया जा रहा है। हमारे गुरुकुल का तो मुख्य मार्ग से केवल प्रवेश द्वार दिखता है, क्योंकि हमें पैसों की कमी है। इस कारण दुकानें बनाकर या तो बेच दी गई, अथवा किराये पर दे दी गई है। जबकि गुरुकुल के क्षेत्र से चार-पांच गुना भू-भाग पर विशालकाय चर्च तथा अन्य भाग पर भारतमाता स्कूल है। उपरोक्त संस्थान मुख्य मार्ग से अन्दर जाने वाले मार्ग पर दोनों और खुला है। इसके उपरान्त भी वहां पर कोई व्यवसायिक गतिविधि नहीं है। भारत माता स्कूल में लगभग ४००० विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। अत्यन्त वेदना का विषय है। आयातित विधर्मियों के संस्थान हमारी स्वतंत्रता के उपरान्त भी फल-फूल रहे हैं। इसमें उन सम्प्रदायों के लोगों की कर्त्तव्य परायणता-समर्पण सेवाभाव तो है ही। हमारे अपने लोगों का भी आंख मूंदकर उन्हें सहयोग किया जाना है और दूसरी ओर हमारे महापुरुषों के नाम पर स्थापित संस्थान उनके आदर्शों, स्वप्नों और सिद्धान्तों को तिलांजलि देकर लार्ड मैकाले का प्रसाद परोस रहे हैं, वह श्री स्वतंत्रता के दिनों में, ये कैसी विवशता? जबकि छत्तीसगढ़ प्रदेश सभा के पास सम्पत्ति की कोई कमी नहीं है और कार्य करने वालों के लिए तो वैसे भी परमपिता परमात्मा सहाय होता है। कोई दोषी हो, न हो यह निर्णय तो परमपिता परमात्मा ही करेगा, किन्तु परमात्मा निष्ठ लोगों के कार्य प्रदर्शन से इस प्रकार की आशा -अपेक्षा उन महापुरुषों को भी नहीं होगी जिन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अपने रक्त-श्वेद से इस संस्थानों की स्थापना की। पाठकों को यह भी बता दें कि प्रान्तिय सभा के प्रधान श्री अंशुदेव जी से गुरुकुल पहुंचने के पूर्व हमारी वार्ता हुई है। उसके पश्चात् दुर्ग स्थित सभा कार्यालय पहुंचने विषय में भी मेरे द्वारा उनसे २-३ बार सम्पर्क कर उन्हें

बता दिया गया था। हमारी वेदना को संजय शास्त्री जी ने अच्छी तरह समझ लिया, वे झेपने लगे तथा पत्रिका का वार्षिक चन्दा देने लगे। मैंने उन्हें कह दिया आपकी सेवा में पत्रिका आएगी। आप चन्दा रहने दें। शास्त्री जी क्या कर सकते हैं। उनकी अपनी विवशता है। वैतनिक कर्मचारी हैं। यज्ञशाला के पुरोहित व विद्यालय में अध्यापन दोनों कार्य करते हैं। गुरुकुल आमसेना से स्नातक उपरान्त आचार्य कर चुके हैं। अभी तक विवाह नहीं हुआ है दिनांक २० को सायंकाल बाराती के रूप में महाराजा अग्रसेन भवन, गुरुद्वारा के पीछे, टाटीबंध पहुंचे भोजन से निवृत्त होकर विश्राम स्थल लौट आए।

दिनांक २१ जुलाई को वरपक्ष से प्रस्थान की अनुमति ली। आपने हमें छोड़ने हेतु तीन पहिया वाहन का प्रबन्ध कर दिया, जिसमें हम विश्वकर्मा मन्दिर के अध्यक्ष श्री कैलाश जी लदोया के निवास शंकरनगर पहुंचे वहां भोजन विश्राम किया। सायंकाल जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा छत्तीसगढ़ के प्रदेश अध्यक्ष श्री मदनलाल जी शर्मा के प्रतिष्ठान श्री हरियाणा टिम्बर मार्ट पर गए। आप हरियाणा के रेवाड़ी जिले के मूल निवासी होने से आर्य समाज की गतिविधियों से सुपरिचित हैं तथा स्वाध्याय शील भी हैं। आपसे गहन आध्यात्मिक-सामाजिक वार्ता हुई पश्चात् मौन काल प्रारम्भ होने से कैलाश जी के निवास पर लौट आए। संध्योपासना की। पूर्व वार्तानुसार आर्य जगत् के कर्मठ उद्योगपति, गुरुकुलों के प्रति सहृदयता रखने वाले दानवीर श्री विनोद जी जायसवाल लेने के लिए आ गए। आपके साथ आपके निवास पर जाकर भोजन-शयन किया।

दिनांक २२ जुलाई को नित्य प्रतिदिन अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में जागकर शौच-स्नानादि से निवृत्त हो संध्योपासना व्यायाम किया। प्रातः ७ बजे विनोद जी और हम सब रायपुर के जिलाधीश कार्यालय परिसर पहुंचे। वहां पर पतंजलि योग समिति तथा वैदिक सत्संग समिति के सदस्य उपस्थित थे। आप लोग प्रतिदिन आसन-प्राणायाम करते तथा करवाते हैं तथा रविवार के दिवस साप्ताहिक सत्संग करते हैं। रविवार का दिवस होने से यज्ञ की प्रक्रिया पं. नन्दकुमार जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हो चुकी थी। स्थान सुलभ हो जाने से मैं तथा मेरी धर्मपत्नी को भी यजमान के रूप में आहूतियां प्रदान करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। घनघोर वर्षा के मध्य शासकीय कार्यालय के बरामदे में खुले में यज्ञ करना अद्भुत था। यज्ञोपरान्त भजन तथा उद्बोधन हुए। वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार की टीस लिए ऋषि भक्त पं. राकेश जी दुबे जो इस पतंजलि योग समिति तथा वैदिक सत्संग समिति के मुख्य प्रेरणा स्त्रोत हैं का हृदय स्पर्शी उद्बोधन हुआ। आपने वैदिक ज्ञान प्रकाश के माध्यम से मानव मात्र के कल्याणार्थ तथा भारत की पुनः विश्वगुरुता के निर्माण पर प्रकाश डाला। मुझे अपने विचार रखने का अवसर प्रदान किया गया। कुछ सदस्यों ने वैदिक संसार की वार्षिक सदस्यता ग्रहण की। यहां से प्रस्थान कर विनोद जी के निवास पर पहुंचे वहां प्रातःराश ग्रहण करने के बाद विनोद जी की धर्म पत्नी तथा विनोद जी के सास-ससुर हम सभी आर्य समाज बैजनाथ पारा गए, वहां पर साप्ताहिक सत्संग का समापन काल था, पं. नन्दकुमार जी के धर्म विषय पर भजन उपदेश हो रहे थे। हमारे पहुंचने पर मेरी उपस्थिति से अवगत करवाया गया तथा मुझे अपने विचार रखने का आग्रह किया गया। शान्तिपाठ हो जाने से समय अनुकूल न जानकर मैंने केवल अपना तथा अपने द्वारा प्रकाशित वैदिक संसार का परिचय देते हुए वैदिक संसार के सदस्य बनने का अनुरोध किया। आर्य समाज बैजनाथ पारा के प्रधानजी ने त्रैवार्षिक सहयोग किया तथा श्री जगदीश जी पशरेजा त्रैवार्षिक सदस्य बने। वहां से लौटकर विनोद जी के घर भोजन ग्रहण किया तथा दुर्ग प्रस्थान की अनुमति मांगी। विनोद जी ने कहा बेटी साथ आई है उसे रायपुर का भ्रमण आदि नहीं करवाया न कुछ दिखाया चलो छत्तीसगढ़ की राजधानी नया रायपुर का भ्रमण करवाते हैं। आपने रुक-रुक हो रही कभी हल्की कभी मध्यम, कभी तेज वर्षा के सुहाने मौसम में भ्रमण करवाया तथा सायंकाल रेलवे स्टेशन छोड़ दिया। जहां से हमने दुर्ग के लिए प्रस्थान किया। दुर्ग के श्री सुभाष जी जांगिड से वार्ता हो चुकी थी। आप रेलवे स्टेशन पर प्रतिक्षारत मिले। आपके साथ आपके घर गए आपके तथा आपके दिवंगत छोटे भाई के परिजनों से भेंट हुई बहुत अच्छा लगा। शौचादि से निवृत्त हो सन्ध्योपासना की। मण्ड्रेला, जिला-झुन्झुनु से पधारे आपके सम्बन्धी श्री गोविन्द जी जांगिड से भेंट हुई। आप सन्त रामसुख दास जी के भक्त हैं। आपको प्रातः शीघ्र लौटना था, अतः मौनकाल होने से लिखित रूप में आपसे गहन आध्यात्मिक वार्ता हुई। आपको वैदिक साहित्य के स्वाध्याय की प्रेरणा दी। भोजन पश्चात् शयन किया।

दिनांक २३ जुलाई को नियमित दिनचर्या अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में जागरण पश्चात् सन्ध्योपासना -व्यायाम करने के बाद श्री सुभाष जी जांगिड़ तथा आपकी धर्म पत्नी के मुख्य यजमानत्व तथा आपके अनुज वधु व सुपुत्रियों के साथ देवयज्ञ किया। आप सभी को पंच महायज्ञ के विषय में बताया तथा परिवार में देवयज्ञ करने की प्रेरणा दी। श्री सुभाष जी जांगिड ब्राह्मण समाज के सक्रिय सेवाभावी, प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपसे अनुरोध किया कि वैदिक संसार का लाभ अधिक से अधिक परिवारों के प्राप्त हो, अतः कुछ सदस्य बनवाओ। आप जांगिड समाज के वयोवृद्ध सक्रिय सदस्य श्री रामदयाल जी के यहां लेकर गए। श्री रामदयाल जी मुझे पूर्व से जानते थे। कुशलक्षेम आदि वार्ता पश्चात् आपने आश्वासन दिया कि पत्रिका पढ़ने के उपरान्त निर्णय करेंगे। श्री सुभाष जी और श्री रामदयाल जी के मध्य वार्ता में जांगिड ब्राह्मण समाज की स्थानीय गुटबाजी उभर कर आई। श्री सुभाष जी ने श्री सूरजमल जी बरनेला पूर्व प्रदेशाध्यक्ष जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा छत्तीसगढ़ को दूरभाष पर सूचना दे दी थी। आप भी वहां आ गए। आप मुझसे पूर्व से अच्छे से परिचित हैं, किन्तु मेरे विरोधीजनों के परिवार के होने से पूर्वाग्रह से ग्रसित होने से न तो उन्होंने कोई सहयोग करना था न सदस्य बनना था अतः परिणाम शून्य रहा। अनुकूल वातावरण न जानकर श्री सुभाषजी से प्रस्थान की अनुमति चाही। सुभाष जी द्वारा आजीवन सदस्यता राशि का सहयोग किया गया। आपने भोजन पश्चात् चले जाने का आग्रह किया। हमें भोजन तो कहीं भी करना ही था। समय भी भोजन का हो ही रहा था, अतः हमने सोचा चलो भोजन पश्चात् प्रस्थान कर लेंगे। सुभाषजी अपने व्यवसायिक कार्य से घण्टेभर में आने का कहकर गये तो वापसी आए नहीं। हमने आपके घर भोजन किया। उसके पश्चात् आपके सुपुत्र को आर्य समाज छोड़ने का अनुरोध किया। आपने हमें आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय कार्यालय छोड़ दिया। वहां भी वहीं 'ढांक के तीन पात' प्रधान अंशुदेव जी तो प्रवास पर थे उनसे आग्रह किया था कि वैदिक संसार की प्रसार संख्या छत्तीसगढ़ प्रदेश में दयनीय अवस्था में है, कुछ सदस्य बनवाने का सहयोग करें। आप नहीं हैं तो सभा के किसी पदाधिकारी को बोलकर सहयोग करवाये, किन्तु सभा भवन के कम्प्यूटर कक्ष में मन्त्री दीनानाथ वर्मा उपस्थित थे, किन्तु उनके पास बाहर आकर नमस्ते करने का भी समय नहीं था। बाकी तो दूर की बात है। कम्प्यूटर आपरेटर ने हमारे पास आकर हमारा परिचय लिया तथा हमसे पूछा कि मेरे योग्य सेवा बताइये, मैंने कहा आप अपने प्रधान जी से पूछिये कि मेरी क्या सेवा करनी है, आपने दूरभाष पर प्रधान जी से सम्पर्क किया होगा, अतः २५०/- रुपए देकर कहने लगे। प्रांतीय सभा का वार्षिक चंदा जमा कर लीजिए। मैंने प्रत्युत्तर में कहा मैं सभा से वार्षिक चन्दा लेने नहीं आया हूं। पूर्व में भी एक-दो वर्ष निःशुल्क भेजा हूं, आपने तो प्रत्युत्तर में सभा

का पत्र भी नहीं भेजा। अगर दुर्ग में कुछ सदस्य बन सकते हो तो बनवा दीजिए अन्यथा कोई बात नहीं, आपने कहा मेरे पास समय नहीं है, मन्त्री जी कम्प्यूटर कक्ष में मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं, मुझे कार्य करना है। मैंने भिलाई सेक्टर-४ आर्य समाज से सम्बन्धित किसी सज्जन का सम्पर्क नं. मांगा, उसे भी देने में वे महोदय असमर्थ रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ का दुर्ग स्थित उपरोक्त कार्यालय बहुत विशाल भू-खण्ड पर मुख्य मार्ग पर बना होकर दोनों और दुकानें बनी हुई हैं। जिस कारण किसी सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र से अधिक यह व्यापारिक संकुल दिखता है। सभा परिसर में स्कार्पियो चार पहिया वाहन सभा का खड़ा हुआ था। जो यह जानकारी दे रहा था कि साधन की तो कमी नहीं है, किन्तु सदुपयोग करने वालों की कमी है। किसी ने ठीक ही कहा है- पहले आर्य समाज के भवन कच्चे थे, किन्तु आर्य समाजी पक्के होते थे। वर्तमान में भवन तो पक्के हो गए किन्तु आर्य समाजी कच्चे तो छोड़ो जगत् के लिए कुछ अपवाद छोड़कर सर्वथा अनुपयोगी हो गए। जब एक वैदिक पत्रिका के प्रकाशक के साथ ऐसा व्यवहार है तो जन सामान्य के साथ क्या व्यवहार होगा, अंदाजा लगाया जा सकता है।

यज्ञशाला के विषय में जानकारी प्राप्त हुई कि ऊपर की ओर है जहां दैनिक यज्ञ सभा की ओर से तथा साप्ताहिक सत्संग स्थानीय आर्य समाज द्वारा होता है। कोई कार्य विशेष न होने की दशा में हम रेलवे स्टेशन आए और हावड़ा- अहमदाबाद लौहपथ गामीनी में चढ़ चल दिए नागपुर को। रात्रि ९ बजे नागपुर पहुंच तीन पहिया वाहन से मानेवाड़ा रोड पर लाड़ीकर ले-आउट स्थित जांगिड़ भवन जा पहुंचे। पूर्व वार्तानुसार जांगिड ब्राह्मण समाज सेवा समिति के अध्यक्ष श्री इन्द्र चन्द्र जी प्रतिक्षा करते मिले। भवन की तृतीय तल पर आपने कमरा खुलवा दिया। आपके सुपौत्र ने अपनी सज्जनता का परिचय देते हुए हमारा सामान ऊपर तक रखवाने में सहयोग किया। अध्यक्ष महोदय ने सेवक को कहकर व्यवस्था करवाई तथा हमारा ध्यान रखने को कहा। हमें भोजन-चाय काफी आदि के विषय में पूछा। हमने मना कर दिया तथा आपसे प्रातः आठ बजे यज्ञ हेतु आने का आग्रह किया।

दिनांक २४ जुलाई को ब्रह्म मुहूर्त में निद्रा की गोद से उतरकर नियमित दिनचर्या उपरान्त सन्ध्योपासना-व्यायाम आदि के पश्चात् जांगिड़ ब्राह्मण भवन के भू-तल पर बने सभाकक्ष जिसमें विश्वकर्मा जी का चित्र रखा हुआ है, वहां पर संस्था अध्यक्ष इन्द्रदेव जी, मेरी धर्म पत्नी, सुपुत्री कु. भाग्यश्री हम सभी ने मिलकर देवयज्ञ किया। अध्यक्ष महोदय के आग्रह पर उनके घर जाकर प्रातःराश लिया। आपसे त्रैवार्षिक सहयोग प्राप्त किया। आपके साथ श्रवण कुमार जी (पूर्व वार्षिक सदस्य) के निवास पर गए, आप मिले नहीं। अध्यक्ष महोदय से अन्य सदस्यों से भेंट करवाने का आग्रह किया। आपने बताया कि अभी कोई नहीं मिलेगा, आप आठ-दस दिन पहले बताते तो एक मीटिंग का आयोजन कर लेते। कोई कार्य न होने की दशा में भवन पर आ गए। कुछ लेखन कार्य किया। जांगिड़ समाज के सुप्रसिद्ध समाजसेवी तथा महाराष्ट्र सरकार के सिंचाई विभाग के सुविख्यात संविदाकार: (ठेकेदार) श्री किशनलाल जी शर्मा को दूरभाष पर सम्पर्क किया। आपने प्रसन्नतापूर्वक आपके निवास पर पधारने तथा भोजन ग्रहण करने का आग्रह किया। मेरी स्वीकृति पश्चात् आपने चार पहिया वाहन हमें लेने भेजा। आपके निवास पर पहुंचकर सामाजिक वार्ता हुई। आपने आध्यात्मिक वार्ता के समय मुझे वेद प्रचारणी सभा नागपुर द्वारा प्रकाशित तथा श्री आदित्य मुनि जी वानप्रस्थी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'धर्म सम्प्रदाय एवं सेक्यूलिरिज्म' दिखाई और उसकी प्रशंसा की जिससे मुझे सुखद अनुभूति हुई। आपने अमेरिका के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले अत्यंत निर्धन बढ़ई परिवार में जन्में प्रेरणादायी जीवन परिचय अमेरिका के १६वें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का जो कि एक समाचार पत्र में प्रकाशित था को मुझे दिखाया, मैंने उसे पढ़ा, अत्यंत अद्भुत। ऐसे होने चाहिए समाज, राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले नेता। मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई तथा गर्व हुआ कि मेरे जांगिड परिवार के श्री किशनलालजी जो समाज के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव समाज में प्रतिष्ठित स्थान रखते हैं आप साधन सम्पन्न, समृद्ध व्यक्ति होने के बाद भी स्वाध्याय तथा सामाजिक मूल्यों के प्रति गहन निष्ठा रखते हैं। आपके यहां भोजन ग्रहण किया, आपने वैदिक संसार को आजीवन सदस्यता राशि का सहयोग किया तथा नागपुर के मनोहारी स्थल व विशाल तालाब अम्बाझरी पर छोड़ने हेतु चार पहिया वाहन भेजा तथा कोई आवश्यकता होने पर बताने का कहा। अम्बाझरी स्थल देखने के बाद हम वैदिक संसार के अभिन्न सहयोगी दैनिक अग्निहोत्री ऋषि भक्त श्री प्रकाश जी के निवास हिंगंना रोड पर पहुंचे। आपके समस्त परिजनों से प्रसन्नतापूर्वक भेंटवार्ता हुई। सायंकाल समाज भवन लौट आए, सन्ध्योपासना उपरान्त शयन किया।

दिनांक २५ जुलाई को प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में शयनदेवी को विदा कर नियमित दिनचर्या उपरान्त संध्योपासना, व्यायाम देव यज्ञ किया। श्री बंशीलालजी, श्री गिरधर लालजी को पूर्व दिवस सम्पर्क किया था, किन्तु वे प्रवास पर थे। सम्पर्क मानारामजी तथा श्रवण कुमार जी से भी किया था। आप लोगों ने आने का बोला था, किन्तु आए नहीं। मेडिकल चौक स्थित सुप्रसिद्ध शंकर आश्रम (भोजनालय) गए। वहां शुद्ध सात्विक भोजन पाकर तृप्ती हुई। वापसी भवन पर आकर कोई कार्य न होने पर सम्पादकीय लिखा। सायंकाल ५.३० बजे समाज भवन रिक्त कर ५०० रुपए दान स्वरूप सेवक को सौंपे और रेल स्थानक को सायं सात बजे नागपुर-इन्दौर लौहपथगामिनी में बैठकर इन्दौर पहुंच कर लगभग १९०० किलोमीटर की इस यात्रा का समापन हुआ।

जुलाई माह की पत्रिका का प्रेषण दिनांक २८ जुलाई को किया।

दिनांक २९ जुलाई को प्रातः संध्यापोसना देवयज्ञ उपरान्त मोटर साइकिल से उज्जैन के लिए प्रस्थान किया। आर्य समाज उज्जैन के साप्ताहिक सत्संग के समापन समय पर पहुंचा। आर्यजनों से भेंट हुई। आर्य समाज के प्रधान जी द्वारा आजीवन सदस्यता राशि का सहयोग किया, कुछ अन्य सदस्यों ने भी सदस्यता सहयोग किया। वहां से प्रस्थान कर उज्जैन निवासी कुछ स्नेहीजनों के निवास पर जाकर भेंट पश्चात् बड़नगर के लिए प्रस्थान किया। बड़नगर से ४ किलोमीटर पहले विक्रम नगर (मौलाना) के श्री लक्ष्मीनारायण जी पाटीदार मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान तथा उज्जैन सम्भाग प्रभारी के निवास पर पहुंचा। आपने आत्मिय अभिनन्दन किया। भोजन का आग्रह किया, मना करने पर स्वल्पाहार की व्यवस्था की। आपसे गहनवार्ता हुई। आपसे विदा लेकर अत्यन्त मृदुभाषी, सेवाभावी, आर्यत्व के धनी श्री भैरूलाल जी से भेंट की। आपका स्वल्पाहार का व्यवसाय है आपसे जब भी भेंट होती है आप अपने हाथ की बनी हुई मिष्ठान जरूर खिलाते हैं। अत्यन्त प्रेम से आपने स्वल्पाहार करवाया तथा घर के लिए भी दे दिया। आपसे विदा लेकर बड़नगर आर्य समाज पहुंचा, वहां स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती चन्दूखेड़ी से भेंट की। उसके बाद आर्य समाज के मन्त्री अरुण जी भावसार की साईकिल दुकान पर पहुंचा। आपसे आर्य समाज तथा आपका त्रैवार्षिक सहयोग प्राप्त किया। आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री राजेन्द्र जी यादव के निवास पर गया। आप तथा आपकी पत्नी श्रीमती सरिता देवी किसी सामाजिक कार्यक्रम में गए होने से घर पर

नहीं मिले। आपके सुपुत्र बन्टी यादव ने आतिथ्य सेवा की तथा त्रैवार्षिक सहयोग किया। बड़नगर से प्रस्थान कर जिला- इन्दौर के देपालपुर निवासी मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान तथा इन्दौर सम्भाग प्रभारी श्री गोविन्दरामजी आर्य के प्रतिष्ठान आर्य इलेक्ट्रानिक्स पर पहुंचा। आर्य जी प्रवास पर थे। आपके सुपौत्र को आपके द्वारा बुलवाये गए सुर्वे तथा पत्रिका आदि देकर इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। इन्दौर पहुंच कर आर्य समाज मल्हारगंज रुककर प्रधान डॉ. दक्षदेव जी गौड़ से भेंट की। इस प्रकार लगभग २०० किलोमीटर की इस एक दिवसीय मोटर साइकिल यात्रा का समापन हुआ।

रजिस्ट्री पार्सल प्रेषण के कार्य से निवृत्त हो दिनांक १ अगस्त को प्रातः संध्योपासना देवयज्ञ के उपरान्त मेरे घनिष्ठ मित्र श्री भगवानसहाय जी गोठड़ीवाल के साथ ग्राम-हरनावदा जिला-सीहोर(म.प्र.) पर आर्य जगत् की सुविख्यात भजनोपदेशिका सुश्री अंजलि आर्या के मुखारविन्द से प्रवाहित संगीतमयी वेदकथा के श्रवण हेतु प्रस्थान किया। दोपहर में वेदकथा श्रवण पश्चात् सायंकाल जिला मुख्यालय सीहोर के लिए प्रस्थान किया। सीहोर पहुंचकर आर्य समाज के मन्त्री श्री रितेश जी राठौर से भेंट की। जुलाई माह के अंक में प्रकाशित आपके समाचार की प्रतियां आपको भेंट की तथा आपके सहयोग से दो त्रैवार्षिक तथा १ वार्षिक सदस्य बनाकर इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। लगभग ३०० किलोमीटर की यात्री वाहन द्वारा एक दिवसीय इस यात्रा का समापन हुआ।

दिनांक ३ अगस्त को सुपुत्र नितिन शर्मा द्वारा संचालित प्रतिष्ठान स्वास्ति मेडिटेक के कार्यालय को रिक्त करना था। वहां पर वेद प्रचार वाहन के द्वारा ले जाए जाने वाला साहित्य भी रखा हुआ था अतः उसे वेद प्रचार वाहन में रखकर इन्दौर से २० किलोमीटर उज्जैन मार्ग पर स्थित धरमपुरी ग्राम में वेद विद्या मन्दिर पर वेद प्रचार वाहन को रक्खा तथा वापसी आकर इन्दौर-नईदिल्ली लौह पथ गामीनी से शामगढ़ बड़े सुपुत्र के पास पहुंचा। वहां संध्योपासना-भोजन-शयन किया।

४ अगस्त को ब्रह्ममुहूर्त में जागकर शौच-स्नानादि से निवृत्त हो संध्योपासना देवयज्ञ कर प्रातः ७ बजे मुम्बई-जयपुर लौह पथ गामीनी से सवाई माधौपुर के लिए प्रस्थान किया। सवाई माधौपुर रेल स्थानक पर आर्य समाज मान टाऊन के मन्त्री श्री रामजीलाल जी जांगिड लेने आ गए। आपके साथ आपके निवास पहुंचकर भोजन किया। पश्चात् आपकी श्रीमती जी के साथ आर्य समाज मान टाऊन के प्रधान डॉ. आर.सी. गुप्ता जी के निजी चिकित्सालय पर पहुंचे, वहां से प्रधान जी के चार पहिया वाहन से ३० किलोमीटर दूरी पर भगवतगढ़ स्थित आर्य समाज के सप्त दिवसीय संगीतमयी श्रीमद्भागवत वेदकथा जो आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान आचार्य संजीव जी 'रूप' बदायूं (उ.प्र.) के मुखारविन्द से प्रवाहित हो रही थी में पहुंचे। आर्य समाज भगवत गढ़ के मंत्री कर्मठ-जुझारू श्री ओमप्रकाश जी आर्य तथा वैदिक संसार के संरक्षक सदस्य तथा दानवीर श्री जांगिड वेदप्रकाश जी आर्य जयपुर, जिनका पैतृक निवास भगवतगढ़ है के द्वारा आत्मीय अभिनन्दन किया गया। वेदकथा के मध्य आर्य समाज की ओर से मेरा सम्मान साफा पहनाकर, शाल, ओढ़ाकर किया गया। श्री वेद प्रकाश जी द्वारा आर्य समाज में विगत दिनों भूतल पर टाईल्स लगवाई तथा २५०००/- दान स्वरूप भेंट किए आपका भी साफा पहनाकर तथा शाल ओढ़ाकर सम्मान किया गया। अनेक गणमान्य महानुभावों का सम्मान किया गया। सायंकाल ५ बजे आर्य समाज मान टाऊन सवाई माधौपुर राज. के प्रधान जी तथा मंत्री जी के साथ ही वापसी लौटा आपने रेल स्थानक पर छोड़ दिया, वहां से कोटा- हनुमानगढ़ लौह पथ गामिनी से प्रस्थान कर रात्रि ९ बजे जयपुर पहुंचा। संकेत मिलने पर भतिजे परमानन्द का सुपुत्र चि. भानु रेल स्थानक (हसनपुर) जयपुर पर पूर्व निर्धारित अनुसार लेने आ पहुंचा। घर पहुंचकर संध्योपासना-भोजन- शयन किया।

दिनांक ५ अगस्त को ब्रह्म मुहूर्त में जीव के पूर्व दिनों के अनुसार परम पिता परमात्मा की कृपा से आंख खुली दिनचर्या से निवृत्त संध्योपासना-व्यायाम, देवयज्ञ किया। जयपुर से बस द्वारा खण्डेला जिला-सीकर के लिए प्रस्थान किया। वहां जांगिड ब्राह्मण तहसील सभा खण्डेला तथा विश्वकर्मा सेवा समिति द्वारा समाज के बहुउद्देशिय उपयोगी भवन हेतु एक बीघा, भूमि दानदाता श्रीमती मनोहरी देवी तथा उनके पत्तिदेव श्री बजरंगलाल जी जांगिड निवासी फतेहपुरा वर्तमान निवासी इन्दौर (म.प्र.) का भामाशाह सम्मान तथा तहसील सभा की नवगठित कार्यकारिणी के नवगठित शपथ ग्रहण आयोजन में उपस्थिति दी। राजस्थान सरकार द्वारा भामाशाह सम्मान से सम्मानित तथा वैदिक संसार के प्रमुख सहयोगी श्री नेमीचंद जी शर्मा आयोजन के मुख्य अतिथि से भेंट की तथा वैदिक संसार की आगामी योजनाओं के सम्बन्ध में आपसे मन्त्रणा की। आयोजन समापन पश्चात् आयोजन के संरक्षक तथा प्रमुख सूत्रधार, वरिष्ठ समाज सेवी श्री नन्दलाल जी जांगिड के निवास चारण का वास के साथ उनके घर जाकर संध्योपासना की तथा भोजन-शयन किया।

दिनांक ६ अगस्त को प्रतिदिवस अनुसार दिनचर्या उपरान्त संध्योपासना के पश्चात श्री नन्दलालजी जांगिड के साथ देवयज्ञ किया। आपके चारपहिया वाहन से जयपुर-बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्ग पर रिंगस के समीप स्थित विश्वकर्मा होटल पर आए, होटल के स्वामी श्री चौथमल जी जांगिड जिलाध्यक्ष- जांगिड ब्राह्मण सभा सीकर से भेंट वार्ता उपरान्त जयपुर के लिए प्रस्थान किया। आपने मुझे हरमाड़ा छोड़ा जहां से सीटी बस द्वारा मैं पीतल कारखाने चौराहे पर पहुंचा। उस क्षेत्र में स्थित श्री शंकरलाल जी लदरेचा के दामाद श्री राधाकिशन जी के घर पहुंच भोजन किया। भोजन पश्चात् श्री शंकरलाल जी लदरेचा के साथ जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा भवन विद्याधर नगर पहुंचे। वहां सायंकाल तक रहे। प्रदेश अध्यक्ष श्री लखन जी शर्मा से भेंटवार्ता की। उनके द्वारा संगठन की सुदृढ़ता तथा समाज विकास कार्यों को जाना तथा प्रदेशसभा भवन में अंतिम तल पर विद्यार्थियों के आवास हेतु कक्षों के निर्माण तथा सामाजिक गतिविधियों हेतु भू-गर्भ तल के विस्तार निर्माण कार्य का अवलोकन किया, पश्चात् श्री शंकरलाल जी के सुपुत्र श्री जगदीशप्रसाद जी वर्मा के निवास मानसरोवर पहुंच संध्योपासना उपरान्त भोजन-शयन किया।

दिनांक ७ अगस्त को नियमित दिनचर्या, संध्योपासना आदि के पश्चात् श्री जगदीश प्रसाद जी तथा आपकी धर्म पत्नी के मुख्य यजमानत्व में तथा श्री शंकरलाल जी लदरेचा के साथ देवयज्ञ में आहूतियां प्रदान की। आप महानुभावों को वैदिक गतिविधियों को जानने, समझने और आत्मसात करने हेतु आर्य समाज मानसरोवर की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़ने तथा वैदिक संसार पत्रिका के अध्ययन हेतु प्रेरित किया। आपके यहां से भोजन पश्चात् प्रस्थान कर जांगिड ब्राह्मण सभा जयपुर के पूर्व जिलाध्यक्ष श्री हरिशंकर जी जांगिड के मानसरोवर मेट्रो स्थानक के समीप निर्माणाधीन महल पर पहुंचे। आप अभियन्ताओं तथा वास्तुविदों के साथ कार्य में व्यस्त थे। अतः कोई कार्य न होने की दशा में विश्राम किया। पश्चात् आपके साथ आपके वर्तमान निवास स्थान कटेवा नगर, गुर्जर की थड़ी पहुंचे। वहां जलपान लेकर कुछ समय सामाजिक वार्ता उपरान्त मेरे अनुरोध पर आपने मुझे मेरे ताऊ के सुपुत्र श्री रामकिशन जी शर्मा के निवास स्थान महेश नगर छोड़ दिया। वहां संध्यापोसना उपरान्त भोजन किया। पश्चात् आपकी

सुपुत्री श्रीमती कमलेश शर्मा जो महेश नगर में ही निवास करती है उसके द्वारा अपने निवास पर साड़ियों आदि का व्यवसाय किया जाता है। आपने वातानुकूलित भव्य प्रतिष्ठान मुख्य मार्ग पर बना रखा है। आप बाबोसा की अन्धभक्त हैं तथा किसी मंजू नाम की महिला जिसके विषय में आप लोगों की अन्ध आस्था के विषय में आपका कहना है कि उसे बाबोसा आते हैं। उस महिला का बड़ा सा चित्र उसके प्रतिष्ठान पर लगा देखकर मैंने संकेत से पूछा यह कौन है? उसने उत्तर दिया आप तो भगवान को मानते नहीं है, यह दिल्ली की मंजू जी हैं। इस पर बाबो सा आते हैं। मौनकाल होने से लिखित रूप में मेरे द्वारा जो वैदिक सिद्धान्तानुसार बताना चाहिए विस्तृत रूप से बताया, किन्तु जो अज्ञान अन्धकार से तथा अन्ध आस्था से ग्रसित होते हैं उनकी मति भी जड़ हो जाती है, अतः उन्हें कितना भी समझाओ वे न किसी की मानते हैं, ना परमात्मा प्रदत्त बुद्धि का उपयोग करते हैं। अत्यन्त पीड़ा होती है जब उच्च शिक्षित, साधन सम्पन्न लोग वो भी अपने स्वयं के परिवार के सदस्य इस प्रकार व्यवहार करते हैं। नहीं जानते कोई बात नहीं, कोई बता रहा है उसकी न मानो वो भी कोई बात नहीं, कम से कम परमपिता परमात्मा की दी हुई बुद्धि का तो सदुपयोग करना चाहिए। ऐसे लोग स्वयं तो वास्तविक ईश्वर से दूर हो जाते हैं और स्वयं तो पतन के गहरे गड्ढे में में गिरते ही हैं, किन्तु अन्धविश्वास पाखण्ड के प्रेरणा स्त्रोत बनकर अपने सम्पर्क के अन्य लोगों को भी वास्तविक धर्म ईश्वर से विमुख कर उन्हें भी अज्ञान अ्धकार में ढकेलते हैं। ऐसे लोगों के बच्चों का भी भविष्य अंधकारमय होता है। वहां से लौटकर थोड़े विश्राम पश्चात् भाई साहब ने गांधीनगर रेल स्थानक छोड़ दिया। वहां से दिल्ली-जैसलमेर रेल में बैठकर जोधपुर के लिए प्रस्थान किया। प्रातः जोधपुर उतरकर पाली के लिए प्रस्थान किया।

दिनांक ८ अगस्त को पाली पहुंचकर आर्यवीर दल के कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश जी जांगिड को दूरभाष पर सूचित किया। आप लेने आ गए। आपके साथ आपके निवास पहुंचे। स्नानादि से निवृत्त हो आपके सुपुत्र चन्द्रदेव, मोहन तथा आपके साले के साथ संध्या के मन्त्रों का पाठ तथा देवयज्ञ किया। श्री प्रकाश जी के पिताजी का देहावसान हो जाने से सांयकाल वैदिक भजन संध्या का आयोजन आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान पं. केशव देव जी शर्मा, सुमेरपुर के सानिध्य में सायंकाल आयोजित की गई थी। आपके द्वारा मृत्युभोज, कपड़ा प्रथा आदि रुढ़ियों का सुधारवादी कदम उठाया गया था। आपके इस सुधारवादी कदम का स्वागत-समर्थन करने हेतु इस प्रसंग पर उपस्थित होने के लिए पाली आया था। दोपहर को भोजन पश्चात् विश्राम किया। सायंकाल संध्योपासना उपरान्त भोजन तथा भजनों का श्रवण किया। रात्रि २ बजे के लगभग शयन किया।

९ अगस्त ब्रह्म मुहुर्त में जागकर स्नानादि से निवृत्त होकर संध्योपासना उपरान्त रेल स्थानक पहुंचकर जोधपुर-इन्दौर रेल में बैठकर इन्दौर हेतु प्रस्थान किया। सायंकालीन संध्योपासना मन्दसौर से रतलाम के मध्य की। रात्रि ११ बजे इन्दौर पहुंचने पर सुपुत्र नितिन को संकेत किया। पूर्व निर्धारित स्थान पर वह लेने पहुंच गया। घर पहुंचकर भोजन-शयन किया। लगभग १८०० किलोमीटर की इस यात्रा का समापन हुआ।

१० अगस्त को ब्रह्ममुहूर्त में जागकर नित्यकर्म से निवृत्त हो संध्योपासना, देवयज्ञ तथा भोजन पश्चात् बड़वानी के लिए चार पहिया वाहन से प्रस्थान किया। सायंकाल बड़वानी पहुंचकर स्नेहीजनों से कुछ वार्ता हुई। श्री कैलाश जी शर्मा के निवास पर संध्योपासना-भोजन पश्चात् श्री कैलाश जी के समस्त परिजनों श्री अनिल लेखरा तथा शैलू वाणी की माताजी आदि उपस्थितजनों को संध्या के अघमर्षण प्रकरण के तीन मन्त्रों की व्याख्या द्वारा ईश्वर के वास्तविक विराट स्वरूप का परिचय करवाया तथा उन्हें ईश्वर और स्वयं के मध्य दूरी घटाने का प्रयास कर ईश्वर को हर क्षण स्मरण में रख तदानुरूप लाभ लेने की प्रेरणा दी।

दिनांक ११ अगस्त को ब्रह्म मुहुर्त में जागरण भ्रमण, नित्यकर्म से निवृत्त हो संध्योपासना-व्यायाम किया। पश्चात् श्री दिनेश जी शर्मा (लेखरा) के निवास पर जाकर देवयज्ञ कर समस्त परिजनों को वैदिक सिद्धान्तों को जानने-समझने की प्रेरणा के साथ अग्निहोत्र को सीखने करने की प्रेरणा दी। आपके निवास पर भोजन ग्रहण किया। स्नेहीजनों से भेंटवार्ता उपरान्त दोपहर को इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। ३२५ किलोमीटर की इस यात्रा का समापन इन्दौर निवास पर पहुंचकर संध्योपासना कर किया।

दिनांक १३ अगस्त रात्रि १०.४५ बजे इंदौर-गांधीनगर लौह गामीनी से इन्दौर से अहमदाबाद के लिए प्रस्थान किया। १४ अगस्त को रेल में संध्योपासना की। प्रातः ८ बजे अहमदाबाद के कालुपुर रेल स्थानक पर उतरकर गीता मन्दिर बस स्थानक पहुंचे, वहां से बस द्वारा रोजड़ गांव पहुंचे। वहां से तीन पहिया वाहन के द्वारा आर्यवन स्थित वानप्रस्थ साधक आश्रम के कार्यालय पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। मुझे विशाल भवन के तृतीय तल पर स्थित २०२ क्रमांक की कुटिया विश्राम हेतु दी गई। स्नानादि से निवृत्त हो भोजन किया। यज्ञशाला में पहुंचकर ३६५ दिन १२ घंटे अनवतर चलने वाले यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। कुटिया पर आकर कुछ समय विश्राम किया। सायं ५ से ६ बजे चतुर्वेद पारायण महायज्ञ में सम्मिलित होकर आहूतियां प्रदान की। वहां से कुटिया पर आकर संध्योपासना की। पश्चात् भोजन-शयन किया।

दिनांक १५ अगस्त को ब्रह्ममुहूर्त में जागकर वानप्रस्थ साधक आश्रम के वृक्षों से आच्छादित परिसर में भ्रमण किया। स्नानदि से निवृत्त हो संध्योपासना-व्यायाम किया। प्रातः ७ बजे आश्रम के यज्ञ प्रशिक्षण कन्द्र के तृतीय तल पर विशाल यज्ञशाला में भाग लेने पहुंचे। प्रातःकालीन देवयज्ञ पश्चात् प्रातःराश किया तथा दयानन्द आर्य विद्यालय पर ध्वजारोहण हेतु पहुंचे, स्वामी मुक्तानन्द जी, आचार्य सत्यजीत जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। पुनः यज्ञस्थल पहुंचे। प्रातः ९.३० बजे अद्भुत गरिमामयी ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। प्रसंग था १०२ वर्षिय पं. गंगारामजी जांगिड जयपुर (राज.) की प्रेरणा एवं ब्रह्मत्व में २७ जुलाई से प्रारम्भ चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहूति का। उपरोक्त चतुर्वेद पारायण यज्ञ के मन्त्रों का पाठ आपकी सुपुत्री श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा द्वारा किया गया। यह भी विदित हुआ कि आपके पतिदेव श्री ओमप्रकाश जी शर्मा द्वारा भी यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ लगभग ७५ प्रतिशत किया गया। (विस्तार से जानिए आयोजन सम्पन्न समाचार में) इस अवसर पर विद्वानों का भावभीना सम्मान किया गया। मेरा भी सम्मान शाल ओढ़ाकर सम्मान राशि भेंट कर किया गया। पूर्णाहूति पश्चात् भोजन-प्रसादी ग्रहण करने पश्चात् विश्राम किया। सायं ४ बजे आचार्य सत्यजीत जी से भेंटवार्ता उपरान्त इन्दौर के लिए प्रस्थान किया। बड़ौदा रेल स्थानक पर श्री शंकरलाल जी शर्मा सपत्निक आए। आप अपने साथ भोजन भी लेकर आए। संक्षिप्त भेंट पश्चात् हमारी रेल आगे की ओर चल दी।

दिनांक १६ अगस्त को इन्दौर जाने का मानस त्यागकर नागदा जंक्शन पर रात्रि तीन बजे यात्रा को विराम दे दो घण्टे पश्चात् मुम्बई-जयपुर लौहपथगामिनी में सवार हो ज्येष्ठ सुपुत्र निलेश शर्मा के निवास स्थान शामगढ़ जा पहुंचे।

दिनांक १७ अगस्त को सुपुत्र निलेश के निवास पर उसके मित्रों-स्नेहियों की एक आध्यात्मिक गोष्ठी सायंकाल रात्रि आठ बजे आहूत की

गई। श्री प्रभुसिंह जी चौहान, श्री भंवरलाल फरक्या, श्री निरंजन जी, श्री नवीन जी सेठिया, श्री लेखराज जी शर्मा, श्री महेश जी पाण्डे, श्री जगदीश जी जोशी, श्री मनोज जी शर्मा, श्री पंकज जी राठौर तथा सुपुत्र निलेश शर्मा एवं परिजन उपस्थित रहे। प्रभावी रूप में लगभग २ घंटे वार्ता हुई। समस्त उपस्थितजनों ने एकमत होकर ऐसी वार्ता की समय-समय पर आवश्यकता जताई तथा अनुरोध किया कि माह में एक बार मैं समय निकाल कर अवश्य आऊं।

दिनांक १८ अगस्त को ब्रह्म मुहूर्त में जागकर शौचादि से निवृत्त होकर भ्रमण स्नानादि पश्चात् संध्योपासना, व्यायाम, देवयज्ञ कर ही रहे थे कि सुपुत्र के दूरभाष पर सूचना आई कि मेरे छोटे साढ़ू जी सत्यप्रेम जी की मां का निधन हो गया, जिनका अंतिम संस्कार १९ को अपने गृहग्राम बेसरोली जिला नागौर राज. में होगा। सायंकाल इन्दौर जाने का मानस था जिसे त्यागकर प्रात: ११ बजे इन्दौर-जोधपुर रेलगाड़ी से रात्रि ९ बजे मकराना पहुंचे। बेसरोली का कोई साधन न होने से चार पहिया वाहन से बेसरोली पहुंचे। मुंह हाथ धोकर आलस्य व यात्रा की थकान से कुछ राहत प्राप्त की। बेसरोली रेलवे स्टेशन साढू जी के निवास से अत्यन्त निकट था। निवास पर शोक तथा गर्मी का वातावरण होने से रेलवे स्टेशन पर आकर संध्योपासना की। रात्रि कुछ देर के लिए विश्राम किया।

दिनांक १९ अगस्त को ब्रह्म मुहूर्त में जागकर प्रात:कालीन मन्त्रों का पाठ किया। पश्चात् श्री धनराज जी जांगिड गीता का अनुवाद पाठ कर रहे थे। कुछ देर श्रवण किया। उपरान्त नित्य कर्म से निवृत्त हो भ्रमण तथा संध्योपासना की। लगभग ८.३० बजे मेरे साढ़ू उनके भाई तथा समस्त परिजन जो महाराष्ट्र रहते हैं आप लोग आ पहुंचे। साथ में मेरे साले श्री जगदीश शर्मा, निवासी बड़नगर (म.प्र.) भी थे। आप लोगों की प्रतिक्षा ही कर रहे थे। आप लोगों के आने के बाद शवयात्रा प्रारम्भ हुई। अंतिम संस्कार सम्पन्न होने के पश्चात् स्नानदि से निवृत्त हो १ बजे जोधपुर-भोपाल रेल से पांच बजे जयपुर पहुंचे। शयनयान यात्री प्रतिक्षालय में शौचादि से निवृत्त हो संध्योपासना की। रेलवे स्टेशन के बाहर रूप बसन्त भोजनालय में भोजन ग्रहण किया। कुछ समय प्रतिक्षा के पश्चात् जयपुर-इन्दौर में अपनी आरक्षित सीट पर बिस्तर लगाकर यात्रा के समापन की ओर रात्रि ९ बजे चल पड़े।

दिनांक २० अगस्त को प्रात: आठ बजे इन्दौर रेलवे स्टेशन पर उतरे। सुपुत्र नितिन लेने आ गया। इस प्रकार परिभ्रमण का अंतिम पड़ाव की लगभग २५०० किलोमीटर की यात्रा का समापन हुआ। लगभग ६५०० किलोमीटर का चतुर्दिशा भ्रमण दिनांक १८ जुलाई से प्रारंभ होकर २० अगस्त की प्रात: छह चरणों में सम्पन्न हुआ। ●

चतुर्वेद शतकम् महायज्ञ एवं वैदिक सत्संग

दिनांक १५ से १७ सितम्बर २०१८ तक

आर्य समाज मान टाउन जिला-सवाई माधोपुर (राज.) के तत्वावधान में त्रिदिवसीय चतुर्वेद शतकम् तथा वेद ज्ञान की संगीतमयी अमृतवर्षा में समस्त धर्मनिष्ठ जन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान- पं. वीरेन्द्र कुमार जी शास्त्री, सहारनपुर (उ.प्र.)
श्रीमती संगीता आर्या, सहारनपुर (उ.प्र.)

सम्पर्क- डॉ. आर.सी. गुप्ता (प्रधान) ९४१४२४७८७८
रामजीलाल जी आर्य- (मंत्री) ८४३२५६०३५९

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

दिनांक २७ जुलाई गुरु पूर्णिमा से प्रारम्भ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ स्वामी सत्यपति जी, स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, स्वामी ध्रुवदेव जी सरस्वती, स्वामी मुक्तानन्द जी सरस्वती, आचार्य सत्यजीत जी, आचार्य नवानन्द जी तथा दर्शन योग महाविद्यालय एवं वानप्रस्थ साधक आश्रम के मूर्धन्य विद्वानों और आर्ष कन्या गुरुकुल की आचार्या शीतलजी के सानिध्य-मार्गदर्शन में १०२ वर्षिय पं. गंगारामजी जांगिड जयपुर (राज.) की प्रेरणा एवं ब्रह्मत्व में निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होकर स्वाधीनता दिवस १५ अगस्त को पूर्णाहुति सम्पन्न हुई।

वेद मन्त्रों का पाठ पं. गंगारामजी की सुपुत्री श्रीमती सुमित्रा जी शर्मा संरक्षक वैदिक संसार द्वारा करना अत्यन्त अद्भुत रहा। वेदमन्त्र पाठ में आपके पतिदेव श्री ओमप्रकाश जी शर्मा का भी सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

जांगिड परिवारों के साथ समस्त मानव समाज के लिए यह आयोजन प्रेरणास्पद तथा गौरवान्वित करने वाला था कि वर्तमान में मनुष्य भोगवाद की ओर भाग रहा है। धर्म-कर्म सब पीछे छूटे जा रहे हैं। और साधन सम्पन्न समृद्ध लोगों के पास तो समय नहीं है के रोग ने उन्हें बुरी तरह जकड़ रखा है। ऐसे वातावरण में बहन सुमित्रा जी का प्रयास अनुकरणीय तथा सराहनीय है कि उन्होंने अपने पिता की चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की इच्छा को २१ दिवस रोजड़ में रहकर केवल पूर्ण ही नहीं किया, अपितु स्वयं मन्त्रों का पाठ कर ऋषि दयानन्द के सपनों को साकार कर दिया। अन्यथा पौराणिक जगत् के धर्माचार्य आज भी महिलाओं को वेद मन्त्र पढ़ने का तो दूर सुनने तक का भी उचित नहीं मानते हैं।

आपके साथ अनेक पारिवारिक सदस्य २१ दिवस तक रोजड़ में ही रहे। पूर्णाहूति में आपके द्वारा सगे-सम्बन्धियों, परिचितों को आमंत्रित किया गया। बड़ी संख्या में सदस्य उपस्थित हुए।

पूर्णाहूति पश्चात् स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी मुंक्तानन्द जी, आचार्य सत्यजीत जी, आचार्य शीतल जी के प्रवचन हुए। संचालन आचार्य नवानन्द जी द्वारा किया गया।

शर्मा परिवार द्वारा समस्त विद्वानों तथा पधारे हुए अतिथियों का शाल तथा सम्मान राशि भेंट कर सम्मान किया गया। आर्यवन के समस्त संचालित संस्थानों को वस्त्र आदि भेंटकर दान दिया गया। महाप्रसादी के रूप में उत्कृष्ट भोजन व्यवस्था की गई। घृत-सामग्री आदि का भार स्वयं वहन किया गया। ऋषि मिशन के श्री नन्दकिशोर जी जांगिड, वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा सपत्निक, गांधीधाम से श्री चन्द्रप्रकाश जी शर्मा, आर्य समाज गांधी धाम के मन्त्री श्री गुरुदत्त जी शर्मा, जयपुर से पं. गंगारामजी की छोटे सुपुत्र श्री कौशल जी शर्मा, सुपौत्र रोहित शर्मा, रींगस से मोतीलाल जी शर्मा, मुम्बई से रजनीकांत जी जांगिड, अहमदाबाद से वैदिक संस्थान ओढ़व के पदाधिकारी तथा विशम्बरदयाल जी शर्मा उपस्थित रहे।

पं. गंगाराम जी के ज्येष्ठ पुत्र को हृदय से सम्बन्धित समस्या हो जाने पर भी आप लोग विचलित नहीं हुए और इस संसार के श्रेष्ठतम कार्य देवयज्ञ को दृढ़तापूर्वक ईश्वर के प्रतिपूर्ण निष्ठा और विश्वास के साथ सम्पन्न किया।

वैदिक संसार को आप महानुभावों का आर्थिक सहयोग (दान)

वैदिक संसार के सम्माननीय प्रतिनिधि श्री बंशीलाल जी आर्य तथा श्री आदित्य प्रकाश जी गुप्त प्रधान आर्य समाज, खेड़ा अफगान (सहारनपुर) की सक्रियता एवं जुझारुता का परिणाम है कि सम्पूर्ण भारतभर में जनपद मन्दसौर (म.प्र.) और जनपद-सहारनपुर (उ.प्र.) वैदिक संसार की सर्वाधिक पाठक संख्या की जनपदें है। जैसे ही बंशीलाल जी द्वारा बनाए गए सदस्यों की सूचि प्राप्त होती है। मन्दसौर जनपद अग्रणी हो जाता है और गुप्त जी के द्वारा बनाए गए सदस्यों की सूचि प्राप्त होती है कि सहारनपुर जनपद बाजी मार ले जाती है। पीछे कोई नहीं है हमारे लिए दोनों अग्रणी हैं और वो भी सभी अग्रणी हैं जो अपने स्तर पर अपने शक्ति सामर्थ्य अनुसार सहयोग कर रहे हैं। हम सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हैं तथा आप भाइयों के सपरिवार स्वस्थ, दीर्घायुष्य, मंगलमयी जीवन की कामना करते हैं। प्रस्तुत है **श्री बंशीलाल जी आर्य** का जीवन परिचय

मालवा अंचल के मन्दसौर जनपद की मल्हारगढ़ तहसील के बरखेड़ा पंथ ग्राम में मध्यम वर्गीय कृषक व्यवसाय में संलग्न विश्वकर्मा परिवार के श्री डालूराम जी, धर्म पत्नी श्रीमती सरजूबाई के यहां १ जुलाई १९४३ को आपका जन्म हुआ। ४ वर्ष की आयु में आपके सर से मां की ममता का साया उठ गया। आपकी दादी मां ने आपका पालन-पोषण कर आपका जीवन निर्माण किया। आपके एक बड़े भाई तथा एक छोटी बहन है। वर्ष १९५१ में आपका प्रवेश प्राथमिक विद्यालय में हुआ। मई १९५३ में अन्नत्यागी शताधिक आयु अवस्था के स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने आपके ग्राम में एक माह का योग-आसन शिविर आयोजित किया। रात्रि में हारमोनियम और तबला वादन भी सिखाते थे। आपने हारमोनियम बजाना सीखा। वर्ष १९५८ से आपने वैदिक साहित्य सेवा कार्य हाथ में लिया है। आर्य समाज के उत्सवों में आप स्थान-स्थान पर वैदिक साहित्य के स्टाल द्वारा सेवा करते थे। श्री दामादोर जी सातवलेकर स्वाध्याय मण्डल पारडी सूरत द्वारा संचालित संस्कृत परीक्षा केन्द्र आपने अपने ग्राम में १० वर्षों तक संचालित किया।

वर्ष १९६१ में आपने हायर सेकेण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण कर उच्च शिक्षा हेतु महाविद्यालय प्रवेश के साथ-साथ गृहस्थाश्रम में भी प्रवेश किया।

वर्ष १९६७ में वृहद गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। जिसमें उस समय में आर्य जगत् के सुविख्यात विद्वान पं. राजगुरु शर्मा महू पं. कमलेश कुमार जी अग्निहोत्री, पं. विजयसिंह जी विजय, श्री अजय कुमार जी सेण्डो- राऊ तथा मुख्य अतिथि के रूप में तत्कालीन श्रम मंत्री म.प्र. शासन श्री श्याम सुन्दर जी पाटीदार उपस्थित हुए।

वर्ष १९७५ में ग्राम में २०×२० वर्गफुट भूमि पर तन-मन-धन से सहयोग कर आर्य समाज का निर्माण करवाया तथा साप्ताहिक सत्संग का नियमित आयोजन करते आ रहे हैं। वर्ष १९८५ से २०१० तक आर्य समाज के मंत्री के रूप में सेवाएं दीं। वर्ष १९६५ में शासकीय शिक्षक के रूप में पदस्थ हो ४०वर्ष सेवा उपरान्त सेवानिवृत्त हो गए।

वर्ष १९९५ से मध्य आर्य प्रतिनिधि सभा में सेवाएं देते आ रहे हैं। अतरंग सदस्य के साथ शिक्षा समिति के सदस्य रहे। वर्ष २०१४-१५ में रतलाम संभाग के उपमन्त्री रहे तथा वर्तमान में उपप्रधान पद पर सेवारत हैं। वर्ष २०१६ में उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ महाकुम्भ में वैदिक धर्म प्रचार समिति के उपाध्यक्ष पद पर एक माह तक वैदिक शिविर का संचालन सहयोग किया। पेंशनर एसो. के बैनरतले प्रत्येक ग्रीष्म ऋतु में आप पिपलिया मण्डी रेलवे स्टेशन पर यात्रियों को पीने का पानी उपलब्ध करवाते हैं।

वैदिक संसार पत्रिका के प्रकाशन के प्रारम्भिक दिनों से ही आप वैदिक संसार परिवार के अभिन्न आजीवन सहयोगी सदस्य के रूप में जुड़ गए। मन्दसौर और नीमच जनपदों के साथ-साथ अन्य स्थानों पर भी वैदिक संसार को जन-जन तक पहुंचाने हेतु सदैव सक्रिय रहते हैं।

वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार भजन-उपदेश के द्वारा तथा वैदिक संस्कारों का सम्पादन पुरोहित के रूप में कुशलतापूर्वक करते हैं।

७६ वर्ष की आयु अवस्था के उपरान्त भी आप एक युवा की तरह स्थान-स्थान पर भ्रमण करत रहते हैं। पूर्ण स्वस्थ हैं। यह दयानन्द की दया और ईश्वर तथा वैदिक धर्म की असीम कृपा है। अन्यथा बिड़ियां फूंकते और खटिया पर पड़े-पड़े खांसते-खांसते कबके विदा हो गए होते। परमपिता परमात्मा आप पर तथा आपके परिवार पर सदैव अपनी अनुकम्पा बनाए रखें। आप शतायु हो, दीर्घायु हो, स्वस्थ रहें, यशस्वी-तेजस्वी बने रहे। वैदिक संसार परिवार यही कामना करता है।

आपका चलभाष क्रमांक ९८२६७२०१६४ है। आपके द्वारा बनाए गए वार्षिक सदस्य निम्नानुसार हैं-

मध्यप्रदेश, जनपद-मन्दसौर : श्री कृपाशंकर जी शर्मा, केशव इलेक्ट्रिकल्स मन्दसौर (त्रैवार्षिक), श्री ओमप्रकाश मदनलाल जी बटवाल-मल्हारगढ़ (त्रैवार्षिक), श्री प्रधान जी/ मन्त्री जी आर्य समाज-पिपलिया मण्डी (त्रैवार्षिक), श्री प्रकाश शंकरलालजी पाटीदार-बरखेड़ा पंथ (त्रैवार्षिक), श्री मांगीलाल सीताराम जी - नारायणगढ़ (त्रैवार्षिक), सरपंच श्रीमती सुनीता दिनेश जी कारपेन्टर-बरखेड़ा पंथ (त्रैवार्षिक), श्री राधेश्याम भंवरलालजी पाटीदार -बरखेड़ा पंथ डुंगरी, श्री रामप्रसाद जी आर्य टेस्टिंग सुपरवाईजर-पिपलिया मण्डी, श्री राजेश रमेशचन्द्र जी पालीवाल- मंदसौर, श्री भागीरथलाल जी सुतार-बालागुडा, श्री हरिनारायण भवानी शंकर जी पिपलिया मण्डी, श्री अनिल मोहनलालजी शर्मा-बरखेड़ा पंथ, श्री मांगीलाल नानूराम जी लाईनमेन-बरखेड़ा पंथ, श्री रामेश्वर नारायण जी आर्य- नेनोरा, श्री विनोद कुमार

जगदीश जी माकनिया-बरखेड़ा पंथ, श्री भंवरलाल मांगीलालजी शर्मा- पिपलिया मण्डी, श्री भूपेन्द्र अन्नालाल जी विश्वकर्मार्य- पिपलिया मण्डी, श्री अरुण कुमार जी पाटीदार- नारायणगढ़, श्री गोपाल नानूरामजी पाटीदार- नेनोरा, श्री सीताराम चम्पालाल जी सूर्यवंशी- नेनोरा, श्री मांगीलाल राजारामजी आर्य- खेड़ा खदान, श्री रामगोपाल बगदीराम जी लुहार- पिपलिया मण्डी, श्री भोलाराम देवीलाल जी जादम-पिपलिया मण्डी, श्री देवीलाल बोतलालजी पाटीदार- सूपड़ा, श्री घनश्याम रामलाल जी आर्य- कनघट्टी, श्री अखिलेश ओमप्रकाश जी कौशिक-कनघट्टी, श्री बंशीलाल लक्ष्मीनारायण जी शर्मा- पिपलिया मण्डी, श्री श्याम कुमार शान्तिलाल जी राठौर-बरखेड़ा पंथ, श्री नाथूलाल जी यादव 'अधिवक्ता'-नारायणगढ़, श्री कंवरलाल अमरा जी पंवार- बरखेड़ा पंथ, श्री राकेश अशोक जी रावल- बरखेड़ा पंथ, श्री मोहनलालजी पोस्ट मास्टर-पिपलिया मण्डी, श्री कमलेश मांगीलाल जी आर्य-कनघट्टी, श्री मांगीलाल हीरालालजी आर्य- कनघट्टी, श्री नन्दलाल रामचन्द्र जी शर्मा-मन्दसौर, श्री जगदीशसिंह जी चौधरी- चौधरी ट्रेक्टर मन्दसौर, श्री विजयसिंह मूलचन्द जी आर्य- बादरी (मूंदेड़ी), श्री ओमप्रकाश रामकिशन जी गेहलोत, श्री जीवनलाल भंवरलाल जी कुमावत- पिपलिया मण्डी।

जनपद-नीमच : श्री सुनील कुमार वीरेन्द्र जी पाटीदार- जावी, मोतीलाल जी भागरिया- चित्ताखेड़ा, श्री विनोद हरिरामजी शर्मा- नीमच, श्री दिनेशचन्द्र कन्हैयालाल जी शर्मा-नीमच, श्री घनश्याम कालूरामजी शर्मा- नीमच।

जनपद-रतलाम: श्री राजू नाहरसिंह जी आर्य- नरसिंह गुफाधाम (नायन),

जनपद-शाजापुर : श्री राजपल जी आर्य-मोहन बड़ेदिया।

जनपद- झाबुआ: श्री भीमसिंह भैरालालजी आर्य- भीमकुण्ड (बड़ी धामनी), श्री खेमचन्द बाबू जी आर्य- सुजापुरा।

राजस्थान, जनपद- कोटा : श्री कन्हैयालाल जी नेवड़िया- दादाबाड़ी कोटा, श्री ओमप्रकाश जी शर्मा- तलवण्डी कोटा। ●

आर्य महासम्मेलन-२०१८

दिनांक : ३० सितंबर व १ अक्टूबर २०१८

आर्य समाज मुण्डावर, जिला-अलवर (राजस्थान) के तत्वावधान में दो दिवसीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन हर्षोल्लासपूर्वक किया जा रहा है। उपरोक्त आयोजन में आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों के प्रवचन-उपदेश तथा भजन होंगे। समस्त धर्मनिष्ठजन सादर आमंत्रित हैं।

आमंत्रित विद्वान- सुश्री अंजलि आर्या, योगेशदत्त आर्य, धर्मपाल शास्त्री, हरपाल शास्त्री।

सम्पर्क : उजेन्द्र आर्य (प्रधान)-९८२८३७७६३२

संरक्षक सदस्य परिचय

उदार दानवीर, आर्य जगत के भामाशाह, सेवाभावी, सरल, सहृदयी व्यक्तित्व के धनी श्री विनोदजी जायसवाल सुपुत्र श्री राजाराम जी जायसवाल, निवासी-रायपुर (छत्तीसगढ़) का जन्म दिनांक ३०.२.१९६३ को कौड़ाई, जिला- आंबेडकर नगर (उप्र) में माता श्रीमती बेलादेवी जी की कोख से हुआ। आपने माध्यमिक स्तर तक शिक्षा अपने जन्म ग्राम में प्राप्त की। उसके पश्चात् शिक्षा को आगे बढ़ाने का प्रयास आपने कोलकाता में किया।

आप तीन भाई, दो बहनों में चौथे नंबर पर हैं। आपके बड़े भाई श्री विजयकुमार जी का गोवा-बागान क्षेत्र कोलकाता में लोहे का व्यवसाय है। आपने अपने बड़े भाई के साथ व्यवसाय के क्षेत्र में पदार्पण किया। वर्ष २००४ में रायपुर में स्थापित हो गए। गौरव इलेक्ट्रिकल्स के नाम से ट्रांसफार्मर सामग्री का प्रतिष्ठित व्यवसाय है।

आपका विवाह १८ मई १९८९ को सौ.कां. शशिकला जायसवाल सुपुत्री श्री रामप्रकाश जी जायसवाल, निवासी मकोईया, जिला- आंबेडकरनगर (उप्र) के साथ संपन्न हुआ। आपकी सबसे ज्येष्ठ सुपुत्री कुं. प्रियंका जायसवाल, एम.एस. उच्च शिक्षा हेतु अध्ययनरत हैं। उसके पश्चात जुड़वा बालक-बालिका चि. गौरव जायसवाल सी.ए. (अध्ययनरत) तथा कुं. साची जायसवाल मेडिकल शिक्षा हेतु अध्ययनरत है। आप वैदिक सिद्धांतों को समर्पित सेवाभावी, दानी व्यक्ति हैं। गुरूकुलों के विशेष रूप से सहयोगी हैं। गुरूकुल नवप्रभाव तथा उड़ीसा के एकमात्र नवनिर्माणाधीन कन्या गुरूकुल, गुरूकुल हरिपुर, गुरूकुल आमसेना तथा छत्तीसगढ़ के एकमात्र गुरूकुल कोसरंगी तथा गुरूकुल में नवनिर्माणाधीन वानप्रस्थ आश्रम के विशेष सहयोगी हैं।

वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार हेतु आप तन-मन-धन से समर्पित हैं। समृद्धशाली व्यवसायी होने के उपरांत भी अहंकार रहित, त्यागी-तपस्वी, वैचारिक गुणों के धनी व्यक्ति हैं। आप श्री लक्ष्मीकांत जी आर्य (जायसवाल) कोलकाता की प्रेरणा से १९९० में आर्य समाज के संपर्क में आए। आचार्य आनन्द जी पुरूषार्थी होशंगाबाद की प्रेरणा से आपके निवास पर लगभग ९ वर्ष से दैनिक अग्निहोत्र संपन्न हो रहा है। आपको आर्य जगत के उच्चकोटि के संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी विवेकानन्द जी मेरठ, स्वामी धर्मानन्दजी, स्वामी व्रतानन्द जी, स्वामी विवेकानन्द जी रोजड़ तथा विद्वानों महात्मा चैतन्य मुनिजी, आचार्य आन्नद जी पुरूषार्थी, आचार्य गौतम जी आर्य, आचार्य भगवानदेव जी, आचार्य ब्रहस्पतिजी, आचार्य सुदर्शनजी, आचार्य कमल जी, डॉ. कमल नारायण जी का आशीर्वाद प्राप्त होता रहता है। आपके निवास पर विद्वानों के पदार्पण द्वारा अतिथि यज्ञ होता रहता है। वैदिक संसार को आपने उदार मन से संरक्षक सदस्यता राशि रुपए २५००० का सहयोग किया है। वैदिक संसार परिवार आपके तथा आपके परिवार की आरोग्यता, दीर्घायु, यशस्वी, सुख-शान्तिमय जीवन की कामना करता है।●

गुरु पूर्णिमा पर हुए अनेक आयोजन

महर्षि आर्य समाज देहरी के तत्वावधान में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर श्री कपिल जी शर्मा के ब्रह्मत्व में ९वां वैदिक यज्ञ सम्पन्न हुआ। साथ ही गांव के अति वृद्ध श्रीमती गंगाबाई (१०२वर्ष), श्री अम्बारामजी पाटीदार पूर्व मंडी अध्यक्ष, चेनरामजी पाटीदार, रामेश्वर जी मुखिया, केशुरामजी मालवीय चौकीदार, श्रीरामजी मालवीय, ओंकारलाल जी शर्मा, श्रीमती रामीबाई बगदीराम जी पाटीदार, विशिष्ट मातृसेवी रूपचंद राठौर व अतिविशिष्ट दन्त चिकित्सक डॉ. कुरैशी जी का शाल, श्रीफल, कदलीफल, पुष्प माला व तिलक लगाकर सम्मान किया गया। आसपास के १५ गांवों के रोगियों ने निःशुल्क शिविर में लाभ लिया। जिसमें से २३० रोगियों का नेत्र परीक्षण होकर ४० चयनित रोगियों का लैंस प्रत्यारोपण हेतु चयन लाभ मुनि नेत्र चिकित्सालय के लिए हुआ। चयनित नेत्र रोगियों के लिए बस भी निःशुल्क रहेगी। दांत, दाढ़ रोग निदान में १२५ रोगियों का उपचार डॉ. कुरैशी द्वारा किया गया। शिविर में रोगियों ने निःशुल्क औषधि प्राप्त की और लाभ लिया।

गुरूपूर्णिमा पर जनेऊ संस्कार किया गया

जावर। केलहारी स्थित वेद योग गुरुकुल में शुक्रवार को गुरू पर्व मनाया गया। आचार्य सर्वेश सिद्धांताचार्य ने ५१ बटुकों (छात्रों) का यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार संपन्न कराया। आचार्य ने बटुकों को जनेऊ के तीन धागों के साथ जुड़े तीन ऋणों की जानकारी दी। पहला ऋण माता-पिता का, दूसरा गुरुओं का तथा तीसरा ऋषि का ऋण होता है। हमें तीनों ऋणों से मुक्त होने के लिए अच्छे आचरण और अच्छे काम करना चाहिए। उन्होंने बताया वेदों में यज्ञोपवीत का खास महत्व है। इस मौके पर शेखर शास्त्री, सोहन शास्त्री, गौरव शास्त्री, हरिओम शास्त्री को आचार्य जी ने आशीर्वाद दिया।

वृद्धाश्रम का स्थापना दिवस मनाया गया

ताऊ देवीलाल वृद्धाश्रम एनआईटी फरीदाबाद हरियाणा का १६वां स्थापना दिवस १६ जून-२०१८ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया। हर वर्ष की भांति आर्य जगत् के प्रख्यात विद्वान आचार्य भद्रकाम जी वर्णी (दिल्ली) के ब्रह्मत्व में यज्ञ संपन्न किया गया। यज्ञोपरांत पं. चंद्रदेव शास्त्री तथा श्री रामबीर प्रभाकर ने अपने मधुर भजनों की प्रस्तुति दी। यज्ञमान की भूमिका में आश्रम के संस्थापक श्री किशनलाल बजाज व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्वर्णलता बजाज रहीं। इस अवसर पर आर्य समाज जवाहर कॉलोनी, फरीदाबाद के पूर्व प्रधान श्री ईश्वरचंद्र आर्य तथा अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

सैनी युवक ने विवाह का संस्कृत भाषा मे छपवाया निमंतण पत्र

होनहार युवक कमलकान्त ने अपनी विवाह का निमंत्रण पत्र संस्कृत भाषा में छपवाया है। भारतीय संस्कृति का मूल संस्कृत भाषा में ही निहित है। कमलकान्त सैनी ने संस्कृत भाषा को महत्व एवं सम्मान देकर सराहनीय कार्य किया है। कमलकान्त सैनी पुत्र श्री गोरधन लाल बालाण भूतिया बास चूरू के निवासी है। शास्त्री, आचार्य, नेट, सेट, पीएच.डी. उपाधिधारी दिल्ली सरकार के अन्तर्गत शिक्षा विभाग से वरिष्ठ अध्यापक है। ●

श्री भंवरलाल जी पिड़वा नहीं रहे...

भंवरलाल जी सुथार (पिड़वा) सुपुत्र श्री रणछोड़ जी सुथार, निवासी-पाली (मारवाड़) राजस्थान का निधन ६८ वर्ष की आयु में दिनांक २९..७.२०१८ को हो गया। आप सामाजिक सुधारवादी कार्यों में अग्रणी रहते थे। आप सेवाभावी, सरल, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आपके द्वारा नेत्र दान संकल्प अपने जीवन में व्यक्त कर दिया गया था, जिसे आपके सुपुत्र ने पूर्ण किया। आपकी अन्त्येष्टि वैदिक विधि से महेश जी बागड़ी पूर्व अध्यक्ष आर्यवीर दल पाली, हुक्माराम जी बंजारा पूर्व सचिव आर्यवीर दल, हनुमान जांगिड़, सचिव आर्यवीर दल, घेवरराम जी आर्य के द्वारा सम्पन्न करवाई गई। आप अपने पीछे एकमात्र सुपुत्र प्रकाश जी पिड़वा कोषाध्यक्ष आर्यवीर दल पाली तथा दो सुपौत्र चि. चन्द्रशेखर तथा मोहन का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। आपके सुपुत्र भी सामाजिक सुधारवादी, अग्रणी कार्यकर्ता तथा साहित्यकार है। आपकी समाज में व्याप्त समाज के अहितकर रूढ़ियों के विरूद्ध आह्वान करती आपकी रचनाएँ वैदिक संसार तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। आपने क्रान्तिकारी कदम उठाते हुए मृत्युभोज, कपड़ा प्रथा, लेन प्रथा (स्मृति स्वरूप वस्तु भेंट) नहीं किए गए तथा अस्थि संचयन के दिवस पर इन प्रथाओं के पालनार्थ सूचना हेतु जो चिट्ठी फाड़ी जाती है, उसका भी निषेध किया।

आपकी स्मृति में परिवार द्वारा ३०-४० पौधों का पौधारोपण किया गया। आपकी स्मृति में श्री बांगड़ राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में श्री विश्वकर्मा कम्प्यूटर कक्ष का नवीनीकरण आपके सुपौत्रों द्वारा संचयित रुपए ७५००० की राशि से करवाया गया, जिसका कार्य अभी शेष है जो अनुमानित दो लाख रुपए के अधिक व्यय से पूर्ण होगा।

आपके निधन के पश्चात् आपके निवास पर ग्यारह दिवस तक सायंकाल वैदिक भजन प्रस्तुत किए गए। ग्यारहवें दिवस पर विशाल वैदिक भजन संध्या आयोजन पं. केशवदेव जी सुमेरपुर, वैदिक भजनोंपदेशक की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित की गई। भजन संध्या में वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा उपस्थित रहे। दिनांक ९ को प्रातः शुद्धि यज्ञ। अन्ध रूढ़ियों के विरूद्ध उठाए गए कदम का भूराराम जी छड़िया, अध्यक्ष जांगिड़ ब्राह्मण समाज पाली, जांगिड़ ब्राह्मण गौड़वाड़ पट्टी अध्यक्ष जेठमल जी सांड, जांगिड़ ब्राह्मण समाज सोजत सिटी अध्यक्ष कैलाश जी पिड़वा, चौबिस गाँव चौकला अध्यक्ष श्री अशोक जी अठवासिया ने स्वागत किया है।

मारवाड़ क्षेत्र में मृत्यु के उपरान्त शोक संवेदना व्यक्त करने आए आर्य स्नेहीजनों के सेवन हेतु सम्बन्धित परिवार द्वारा अफीम प्रस्तुत करने की प्रथा का प्रचलन बहुत जोरों पर है, आपने इससे भी दूरी बनाई। वैदिक संसार को आपके सुपुत्र द्वारा ५०० रुपए भेंट दान स्वरूप किए गए।

वैदिक संसार परिवार ज्ञात-अज्ञात समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

चि. सम्पत और सौ.कां. अंकिता बंधे परिणय सूत्र में

चि. सम्पत, सुपौत्र-श्रीमती मालीदेवी-श्री लालचन्द जी शर्मा (खोखा), सुपुत्र-श्रीमती सरितादेवी-सांवरमल जी शर्मा **'बालाजी कोच'** रायपुर का शुभविवाह **सौ. कां. अंकिता**, सुपौत्री-श्रीमती सुशीलादेवी-श्री शिवलाल जी शर्मा (खंडेलवाल), सुपुत्री-श्रीमती सुनीतादेवी-श्री सुनील कुमार जी शर्मा, निवासी-धमतरी (छत्तीसगढ़) के संग दिनांक २० जुलाई २०१८ को अग्रसेन भवन, रायपुर में सानन्द सम्पन्न हुआ।परिवारजनों, स्नेहियों, मित्रों आदि ने उपस्थित होकर नवदम्पत्ति को दिया

सुख-शान्तिमय उज्ज्वल भविष्य का शुभाशीर्वाद

मैं अमर शहीदों का चारण, उनके गुण गाया करता हूँ,
जो कर्ज राष्ट्र ने खाया है, मैं उसे चुकाया करता हूँ।

– श्रीकृष्ण सरल

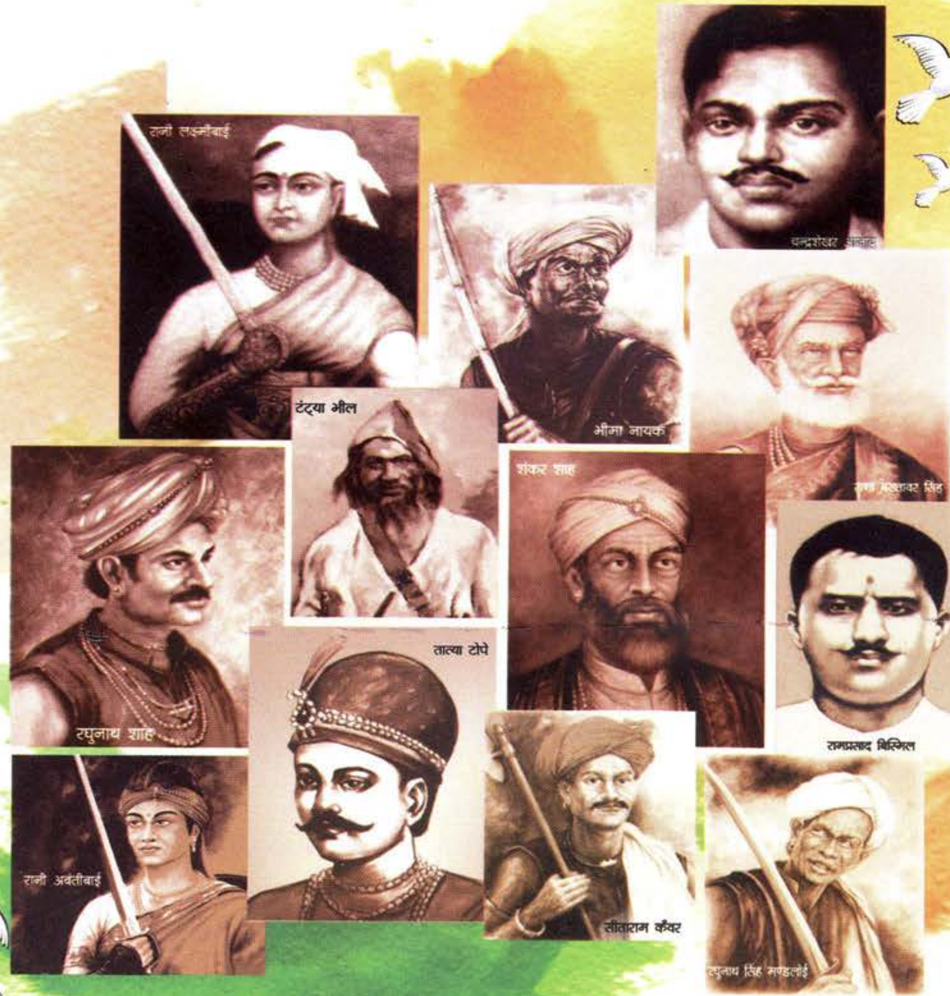

स्वतंत्रता दिवस पर
प्रदेशवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं

आइये, इस पावन दिवस के सुअवसर पर हम सभी अपने वीर शहीदों का स्मरण करते हुए मध्यप्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने का संकल्प लें। सबके सहयोग से ही प्रदेश में सुराज के स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

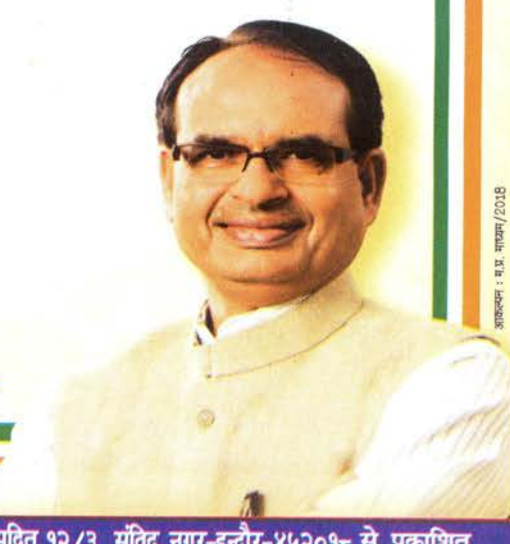

आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2018

D-18223

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

/CMMadhyaPradesh /CMMadhyaPradesh

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित,१२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित
संपादक - गजेश शास्त्री, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.सी.डी./१४०५/२०१८-२०